यादों के साए

यादों के साए

नरेन्द्र शर्मा

भारती पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२

पुस्तकालय संस्करण

मूल्य : पाँच रुपये

प्रकाशक

भारती पॉकेट बुक्स

५१८/६ बी, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

मुद्रक : विवेक प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा, हरिहर प्रेस, दिल्ली

YADON KE SAYE : NOVEL : NARENDAR : Rs. 5.00

१

'रतना !'

'सुभाष ! सुना कुछ तुमने ?'

'क्या हुआ ?'

'वह···रतना !'

'हाँ हाँ, कहो, क्या हुआ ?'

'अरे, तुम तो बिल्कुल अनाड़ी हो।'

'इसमें क्या संदेह है ! अगर अनाड़ी न होता तो तुम्हारी तरह रतना की कोई कहानी नहीं सुनाता।'

'उस्ताद, हम पर ही वार करते हो !' बलदेव ने लज्जित हो उत्तर दिया।

'नहीं, यह बात नहीं बलदेव ! मैं तो कुछ और ही बात कहना चाहता था। खैर, पहले तुम अपनी बात कहो। क्या हुआ आज ?'

'कोई खास बात तो नहीं हुई। हाँ, अब होगी।'

'जब होगी तब देखा जाएगा। अभी से काहे की चिन्ता है !'

'अभी से चिन्ता होगी तभी तो उस चिड़िया को…' बलदेव कुछ कहते-कहते रुक गया।

'रुक क्यों गए ? बोलो।'

'बोलूँ क्या ! देख, वह तो आ ही गई। देख, उसकी चाल तो देख सुभाष ! भगवान कसम, क्या नजाकत है उसकी चाल में। चलती है तो ऐसा लगता है कि हिरणी चौकड़ियाँ भर रही है। देख, जरा ध्यान से देख, उसका सीना कैसे हिल रहा है !'

'हाए राम !' दोनों ने ठण्डी आहें भरीं।

औरत के सीने को हिलते देखकर भला कौन है जिसकी कामनाओं में हलचल पैदा नहीं होती। यह अलग बात है कि इस दुनियाँ में कुछ ऐसे लोग हैं जो औरत के बारे में चुगद प्रतीत होते हैं। वह सब कुछ अनुभव करते हैं। उनका दिल भी धड़कता है। अभिलाषाएँ भी मचलती हैं। लेकिन

बेचारे बनते हैं पारसा !'

'हूँ !'

'कहते हैं—छि: छि:, छि:, यह क्या बदतमीजी है। ऐसे दृश्य का देखना तो दूर रहा, बात करना भी सभ्यता का अपमान समझते हैं। अन्दर से तो वह इतने ही बेचैन होते हैं जितना एक साधारण आदमी, लेकिन लोकलाज बेचारों के आड़े आती है और फिर उनकी पवित्रता अन्दर-ही-अन्दर सुलगने के लिए विवश कर देती है।'

सुभाष और बलदेव दोनों नवयुवक थे। दोनों की कामनाएँ जवान थीं। दोनों शांत सागर थे जिसमें एक छोटा-सा कंकर पड़ने से भी छोटी-बड़ी हजारों लहरें उत्पन्न हो जाती थीं।

रतना बड़ी लापरवाही से चली आ रही थी सीना ताने। जब औरत को मालूम हो जाए कि कोई मर्द उसे घूर रहा है तो वह और भी तन जाती है। उसकी चाल में और भी निखार पैदा हो जाता है।

'देख रहे हो न सुभाष !'

'हूँ ! अच्छी तरह ! तुम और क्या कहना चाहते थे ?'

'अरे, मैं तो बहुत कुछ कहना चाहता था लेकिन—लेकिन इस ससुरी ने सब कुछ भुला दिया। सच कहता हूँ सुभाष ! जब से वह इस दफ्तर में आई है, सारे दफ्तर की शांति भंग हो गई है।'

'दफ्तर की बात छोड़ो, अपनी बात करो।'

'अपनी बात क्या है ! हम तो साधु आदमी हैं।'

'साधु हो लेकिन भयंकर किस्म के।'

'नहीं ऐसी बात तो नहीं है।'

'मैं अच्छी तरह जानता हूँ।'

'तुम मुझे गलत समझ रहे हो।'

'हो सकता है, अच्छा। रतना के बारे में क्या कुछ कहने जा रहे थे !'

'हाँ।'

'तो कहो ना।'

'यार थोड़ी देर उसे जी भर के देख तो लेने दो कैसी प्यारी लग रही है।'

'उसकी आँखें हैं या मदभरे प्याले।'

'होंठ हैं या गुलाबी पंखड़ियाँ।'

'गाल हैं मानो कश्मीरी सेब।'

'यह उलझे हुए बाल कितने प्यारे लग रहे हैं जैसे किसी कलाकार की कीर्ति हों।'

'उसकी गोरी बाँहों को देखो जैसे संगमरमर के सिलों को तराशा गया हो।'

'हूँ।'

'उसकी उँगलियाँ, हाय राम !'

'और यह सीना।'

'बस, बस बलदेव ! अब तो तुम पूरे कवि बन गए हो।अब तुम क्लर्की छोड़कर कविता अपना लो तो ज्यादा अच्छा रहेगा।'

'अरे यह जालिम न जाने क्या-क्या कराएगी।'

'कविता के बाद प्रेम का नम्बर आ जाएगा।'

'नहीं भाई प्रेम नहीं।'

'तो प्यार कर लेना।'

'प्रेम, प्यार, प्रीत—प्यारे यह···यह सब तो कोरे शब्द हैं। मगर···।'

'मगर क्या ?'

'यह रतना तो उड़ी जा रही है।'

'मैं वहाँ तक नहीं जा सकता। यह तो ऊँची उड़ान उड़ रही है।'

'क्या मतलब ?'

'मतलब अब भी नहीं समझे ?'

'नहीं।'

'यार, अपने बॉस···।'

'क्या कह रहे हो बलदेव !'

'ठीक कह रहा हूँ सुभाष ! आजकल रतना अपने बॉस से इश्क लड़ा रही है।'

भूठ है, बिलकुल भूठ ! तुम अपने बॉस को गलत समझ रहे हो।'

'यह ध्रुव सत्य है।'

रतना ने टाइप मशीन पर बड़ी लापरवाही से कागज चढ़ाया और टाइप करने लगी। कभी-कभी झुकी-झुकी निगाहों से वह सुभाष और बलदेव की ओर जरूर देख लेती थी।

बलदेव और सुभाष भी उसी को घूर रहे थे। उनकी दृष्टि फाइलों पर अवश्य थी—मगर दिल—दिल तो रतना की जुल्फों में उलझ कर रह गया था।

रतना एक कहानी थी।

एक गीत थी।

एक सुन्दर फूल थी।

किसी कवि की कल्पना थी।

रतना इस दफ्तर का एक प्रकाश थी जब से इस दफ्तर में आई थी, सारे दफ्तर का रंग बदल गया था। इससे पहले इस दफ्तर में कोई लड़की नहीं आई थी। न ही दफ्तर का स्टाफ कभी यह सोचा करता था कि इस उजड़े हुए बाग में कभी भूलकर भी बहार आएगी।

भगवान ने औरत की काया भी कैसी विचित्र बनाई है। इन्सान इससे लाख बचने की कोशिश करे लेकिन कभी बच नहीं पाता। सब जानते हैं कि नारी वह आग है जिसमें हर एक को जलना होता है मगर इस आग में जलने का भी एक मजा है। इस मौत में भी एक जिन्दगी है, बिल्कुल वैसे ही जैसे कोई पतंगा दिए पर जलने में गर्व अनुभव करता है।

यह रतना दफ्तर का दिया थी और स्टाफ पतंगे और कीट थे।

टिक-टिक-टिक टाइप मशीन की आवाज अब भी आ रही थी। रतना की उँगलियाँ मशीन पर थिरक रही थीं। टाइप करते-करते उसके सीने का आँचल ढलक गया था या ढलका दिया गया था—इसे तो वही जानती थी। औरत सदा यही चाहती है कि मर्द पर उसकी सुन्दरता का

प्रभाव रहे। अगर यह बात नहीं होती तो औरत कभी भी रंग-बिरंगे कपड़े नहीं पहनती। न ही नित्य नए फैशन करती।

रतना के बारे में यह शोर था कि वह हर नई फिल्म देखकर अपने लिबास बनवाती है।

'सुभाष···सुभाष !'

'क्या है यार ?' सुभाष ने उकताए हुए मूड में कहा।

'अरे यार देख तो सही।'

'क्या देखूं ?'

'उसका ढलका आँचल।'

'तो फिर क्या है ?'

'वही तो सब कुछ है। आज उसने सीने से कटा हुआ कमीज पहना है। काली कमीज में रतना का दुधिया रंग का सफेद सीना कैसा नजर आ रहा है।'

'दिल मत जला यार !'

'एक बात सुन।'

'कह।'

'तू रतना के पास किसी फाइल के माँगने के बहाने जा।'

'फिर क्या होगा ?'

'बहुत कुछ। तू उसकी कुर्सी के पीछे खड़ा होगा और वह कुर्सी पर बैठी होगी। सीने से आँचल ढलका है। कमीज ऐसी है कि आधा सीना नंगा हो रहा है तो जब तुम कुर्सी के पीछे खड़े होगे तो उसका सारा सीना दिखाई देगा।'

'तुम खुद ही क्यों नहीं जाते ?'

'मैं···मैं···मैं···' वह हकलाने लगा।

'हाँ हाँ, तुम क्यों नहीं इसका लाभ उठाते। ऐसा अवसर फिर कभी हाथ नहीं आएगा। इसी बहाने रतना से भेंट भी हो जाएगी और···और हो सकता है।'

'अच्छा जाता हूँ।'···

'जरा दिल थाम के जाना मेरी जान!'

बलदेव ने अपने को किसी शिकारी की तरह तैयार किया और अपने बालों को ठीक करता हुआ वह रतना की कुर्सी के पीछे पहुँचा। एक हाथ उसने रतना की कुर्सी पर रखा और दूसरा मेज पर रखकर इस तरह झुका कि रतना का साफ सीना दिखाई देने लगा।

'रतना!'

'ऊँ!'

'जरा फाइल नम्बर १५ देना।'

'वह मेरे पास कहाँ है?'

'सुबह तुमने ही तो ली थी।

'मैंने?'

सहसा उसकी नजर अपने ढलके हुए आँचल और खुले सीने पर पड़ी। उसके चेहरे का रंग लज्जा से लाल हो गया और शीघ्र ही अपना आँचल ठीक किया।

'हाँ, तुमने ली थी।' बलदेव भी लज्जा से दोहरा हो गया था। उसे लगा जैसे रतना ने उसकी चोरी पकड़ ली हो।

'मैंने वह फाइल नहीं ली। और न ही उसकी मुझे जरूरत पड़ी है। आपको भूल हुई है।'

'हो सकता है मुझसे भूल हुई हो लेकिन सुभाष कहता

था कि वह फाइल तुम्हारे पास होगी।'

'उसकी बात छोड़ो, वह तो बंडल मारता है।'

'हाँ, ठीक है। वह कभी-कभी मजाक में भी कह देता है।

'वह आप से मजाक करे लेकिन मुझसे मजाक की जरूरत नहीं।'

'रतना ! सुना है आजकल एक फिल्म बहुत अच्छी चल रही है। क्या नाम है उसका।'

'फिल्में सभी अच्छी चल रही हैं। पता नहीं आप किसकी चर्चा कर रहे हैं।'

'वह क्या है अनुपमा।

'ओह वह—जिसमें एक कलाकार के जीवन के बारे में दिखाया गया है।'

'जी जी, वही।' बलदेव को बात करने का बहाना मिल गया। वह तो यही चाहता था कि किसी तरह कोई बात छिड़े।

'मैं उसे देख चुकी हूँ। कोई खास बात नहीं है।'

'अपने मैनेजर चन्दन साहब तो बड़ी तारीफ कर रहे थे।'

'उनका क्या। वह ठहरे उपन्यासकार। उनको वह पसंद नहीं आएगी तो किसे आएगी।'

'मेरे ख्याल में तो वह बंडल फिल्म है।'

'तो आप देख चुकीं हैं'

'जी।'

'यह तो बहुत बुरा हुआ।' बलदेव ने एक ठण्डी आह भरी।

'क्यों ?'

'हम लोग तो उसे देखने का प्रोग्राम बना रहे थे ।'

'तो जरूर जाइए ।'

'लेकिन ।'

'लेकिन क्या ?'

'उस प्रोग्राम में आप भी तो शामिल थीं ।'

'मैं !'

'जी हाँ । आप ।'

'मिस्टर बलदेव !'

'कहिए ।'

'आप मुझे गलत समझ रहे हैं ।'

'शुरू में तो हर इन्सान गलती करता है ।'

'आपका मतलब ?'

'मतलब तो साफ है । शुरू में तो हर आदमी गलती करता है । उसे गलती कहो या भूल कह लो लेकिन फिर धीरे-धीरे सब ठीक हो जाती हैं ।'

'मिस्टर बलदेव ।'

'हाँ मिस रतना !'

'कई गलतियाँ ऐसी होती हैं कि अगर उन्हें तुरन्त ठीक नहीं किया जाए तो आगे चलकर वे बहुत बड़ी हानि पहुँचाती हैं और उनमें से एक गलती यह भी है कि आप मुझे गलत समझ रहे हैं ।'

'मैं इस गलती के बारे में पहले कह चुका हूँ । मैं भी मांस-मज्जा का बना पुतला हूँ । मुझसे गलती हो सकती है । मगर जहाँ तक इस समय की बात का संबंध है—मैं गलती

नहीं कर रहा हूँ।'

'इस समय आप बहुय बड़ी गलती कर रहे हैं।'

'वह क्या ?'

'मेरे साथ जो फिल्म का प्रोग्राम बना रहे हैं।'

'हूँ ! तो आपके ख्याल में यह भी गलती है।'

'बहुत बड़ी।'

'कैसे ?'

'ऐसे कि आप जवान लड़के हैं और मैं—मैं भी जवान लड़की हूँ।'

'तो इकट्ठे फिल्म देखने से भला इस पर क्या प्रभाव पड़ सकता है ?'

'यह दुनिया है। काश तुम लड़की होते तो तुम्हें मालूम होता कि जवान लड़के और लड़की का इकट्ठे फिल्म देखने का मतलब लोग क्या निकालते हैं।'

'लड़के और लड़की के बजाए यदि हम कुछ और सोचें।

'कुछ भी सोचें, बात वही रहेगी। लोगों की नजरें उठेंगी। दुनिया की जबान कोई रोक नहीं सकता।'

'मिस रतना !'

'हूँ।'

'एक बात पूछूँ ?'

'पूछो।'

'जब लड़के और लड़की एक दफ्तर में इकट्ठे काम कर सकते हैं पूरे सात घंटे और आपस में बातें कर सकते हैं तो सिनेमा इकट्ठे देखने में क्या हर्ज है।'

'दफ्तर में काम करने और बात करने का मतलब कुछ

और है। यह बात यहीं रहने दो कौन जानता है इसके पीछे कौन-सी बात है। कौन-सा भेद है।' रतना ने एक ठण्डी आह भरी।

बलदेव वहाँ रुक न सका रतना के चेहरे के उतार-चढ़ाव बता रहे थे कि वह किसी गहरे सोच में पड़ गई।

वह कुछ और सोच रहा था और रतना कहीं और खो कर रह गई।

२

रतना क्या थी, एक तूफान थी, एक आँधी थी, एक कहानी थी, एक कविता थी, एक उपन्यास थी। जब से इस दफ्तर में आई थी दफ्तर का वातावरण बदलता जा रहा था। चपरासी से लेकर मालिक तक सभी रतना की तीखी निगाहों का शिकार होकर रह गये थे।

इस दफ्तर में तीन चपरासी थे, एक मैनेजर और दस क्लर्क थे, एक आफिस सुपरिटेंडेंट था। दो मालिक थे। यह था दफ्तर का कुल स्टाफ, जो रतना का शिकार था या जिनका शिकार रतना थी। इनमें कुछ लोग शादी-शुदा थे, कुछ क्वाँरे थे। शादी-शुदा लोगों की कामना तो वेदना में बदल जाती थी। उनको अपनी बीवियों का भय भी होता था। क्वाँरे लोग स्वतंत्र थे। न तो उन्हें अपने माँ-बाप का भय था, न किसी बीवी का यही कारण था कि नवयुवक उसके प्यार में सलंग्न हो गए थे।

चन्दन इस दफ्तर का मैनेजर था। वह एक उपन्यासकार था। उपन्यास लेखन से जब उसका गुजारा न हो सका तो उसने इस दफ्तर की नौकरी करली उसकी उम्र लगभग चालीस के आस-पास होगी। सिर के आधे बाल पक गए थे। बालों की सफेदी को छुपाने के लिए अक्सर वह खिजाब का प्रयोग भी करता था। शायद वह अपनी उम्र को पीछे लाना चाहता था। वैसे भी हर कलाकार की कामना रहती है कि वह अपने को जवान देखे। अगर वह ऐसा न करे तो शायद उसकी कला की जवानी नहीं रहती।

चन्दन को इस दफ्तर में आए पाँच साल हो गए थे। इस पाँच वर्ष में न तो उसे स्टाफ की ओर से कोई शिकायत थी और न ही स्टाफ को उसकी ओर से शिकायत का अवसर मिला था। वह सारे स्टाफ को अपने बच्चों या भाइयों की तरह समझता था कोई किसी से लड़ा-झगड़ा भी तो उस झगड़े को मालिकों तक पहुँचाने के बजाय वह स्वयं समझा-बुझाकर रफा-दफा कर देता। मगर जब से रतना इस दफ्तर में आई

थी, यहाँ कुछ विचित्र परिवर्तन आ गया। ऐसा लगता था। कि दफ्तर का वातावरण कुछ खिचा-खिचा सा है। दफ्तर के लोग एक दूसरे से जलने लगे थे। कभी-कभी आपस में तू-तू मैं-मैं की नौबत आ जाती।

चन्दन किसी लड़की को दफ्तर में नौकरी देने के पक्ष में नहीं था। इस बारे में उसका दृष्टिकोण मालिकों से भिन्न था। अन्त में उसने मालिकों से यह भी कह दिया था कि लड़की को नौकरी देकर एक मुसीबत खड़ी की जा रही है। हमारा देश अभी इस मामले में इंगलैंड और अमेरिका का मुकाबिला नहीं कर सकता। हमारी और उनकी सभ्यता में धरती और आकाश का अन्तर है। लेकिन मालिकों का दृष्टिकोण कुछ और ही था। उन्होंने चन्दन की बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने साफ कह दिया कि सरकारी दफ्तरों में लड़कियाँ काम कर सकती हैं तो हमारे दफ्तर में क्या हर्ज है।

सरकारी और प्राइवेट दफ्तरों में बहुत अन्तर है। वहाँ अगर सारा दिन काम न हो तो सरकार को कोई घाटा नहीं पड़ता और सरकार के घाटे तो टैक्स लगाकर पूरे किये जाते हैं लेकिन प्राइवेट फर्मों की दशा तो इसके विपरीत है। उन्हें तो स्टाफ के कार्य से ही खर्च निकालना पड़ता है। चन्दन का विचार था।

'इस खर्च को पूरा करने के लिए तो हम काम बढ़ा रहे हैं, स्टाफ बढ़ा रहे हैं।'

'मगर यह नियुक्ति तो सारे स्टाफ को मुसीबत में डाल देगी।'

'आप भूलते हैं चन्दन साहब ! आप मैनेजर हैं। आपका काम है स्टाफ कन्ट्रोल करना अगर आप ही ऐसी बातें करेंगे तो स्टाफ कौन संभालेगा।

'बातों का सवाल नहीं जनाब आपको आने वाले खतरे की सूचना दे रहा हूँ। शायद आपने वह पुरानी लोक-गाथा सुनी होगी'

'कौन सी ?' मालिक ने लापरवाही से पूछा।'

'एक महात्मा जी रोज ही जंगल में गीता का पाठ किया करते थे। पाठ करने के बाद वह हर एक से सुना करते थे कि आज उन्होंने क्या सुनाया है। महात्मा बड़े ज्ञानी और तपस्वी थे। लोगों की श्रद्धा उनके प्रति बढ़ती ही गई।

'वह महात्मा अपनी सभा में औरतों को नहीं आने देते थे कुछ लोगों ने इनके विरोध में आवाज उठाई। तर्क वितर्क आरम्भ हुए कि औरतों को सभा में आना चाहिए। उन्हें भी ज्ञान प्राप्त होना चाहिए।

'पहले तो महात्मा जी ने टालमटोल किया लेकिन जब लोग न माने तो एक दिन लकड़ी के कुंदे को औरत का सुन्दर लिबास पहनाकर पाठ शुरू करने से पहले दीवार के साथ खड़ा कर दिया।

'संध्या को जब पाठ का समय हुआ तो लोग जमा हुए। लोगों ने आते ही दीवार के साथ लगे औरत के खूबसूरत ढाँचे को देखा। सबके चेहरे पर विचित्र मुस्कान थी।

'महात्मा जी गीता का पाठ करने लगे। जब वह पाठ कर चुके तो दैनिक नियम के अनुसार लोगों से पूछा कि आज के पाठ से लोगों ने क्या समझा।

'आप यह सुनकर हैरान होंगे कि उस दिन पाठ के बारे में कोई भी ठीक से नहीं बता सका।

'तब महात्मा जी ने उनसे कहा—आप लोगों ने देखा, आज मैंने अपनी सभा में असली नहीं नकली औरत को खड़ा किया है और आज ही आप में से किसी को पाठ के बारे में सही ज्ञान नहीं हुआ यही कारण है कि मैं औरतों को अपनी सभा में आने की अनुमति नहीं देता।'

'चन्दन साहेब, यह सब पुराने जमाने की गढ़ी हुई बातें हैं जब लोग पढ़े लिखे नहीं थे। उन्हें संसार का कोई ज्ञान नहीं था। अब दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है। यह विज्ञान युग है। आज का जमाना उस पुराने जमाने से बहुत आगे बढ़ गया है।

'विज्ञान का युग हो या कोई और। दुनिया कितनी ही आगे क्यों न बढ़े। मर्द और औरत का विज्ञान और दर्शन वही है। औरत पहले भी मर्द की कमजोरी थी और आज भी है। उस समय औरत इतनी खतरनाक नहीं थी जितनी आजकल की फैश्नेबुल और अर्धनंगी औरत है।'

'चन्दन साहव, आप तो उपन्यासकारों वाली बातें करते हैं।'

'मैं बात तो सही करता हूँ। आप मानें या न मानें। औरत एक आग है, मर्द बारूद का ढेर। अगर दोनों को इकट्ठे कर दिया जाए तो भयानक आग भड़कने का भय है। आज की लड़कियाँ तो सैनिकों की तरह हाथियारों से लेस होकर निकलती हैं। फैशन ने तो हमारी सभ्यता का बेड़ा ही गर्क कर दिया है। इसी कारण हमारे समाज में गंदगी के

कीटाणु दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। नई सभ्यता पुरानी सभ्यता की जड़े खोखली कर रही है। औरत जब तक घर की चारदीवारी के अन्दर थी, वह घर की लक्ष्मी कहलाती थी लेकिन आज यह लक्ष्मी होटलों और क्लबों की जीनत बनी हुई है। बाजारों में दुकानों के सजाने की सामग्री बन गई है।'

'चन्दन साहब, आप पुराने जमाने के आदमी हैं। अब जमाना नया है। अब दफ्तरों में औरतों की बहुतात है जो मर्दों से अधिक वफादार और ईमानदार हैं।'

'इसमें कोई शक नहीं। मगर जहाँ मर्द और औरत इकट्ठे होंगे वहाँ काम की तो बात ही दूर है, वहाँ तो दूसरे ही काम से फुरसत नहीं मिलेगी।'

'जब ऐसा समय आएगा तब देखा जाएगा।' मालिक ने इतनी लापरवाही से उत्तर दिया कि चन्दन और अधिक बात बढ़ाने का साहस ही न कर सका।

वह मौन हो वहाँ से उठ आया और घंटों बैठा इस समस्या पर सोचता रहा।

कलाकारों में अगर आने वाले समय के बारे में सोचने की त्रुटि न होती तो वह कुछ से कुछ बन जाते लेकिन वह तो सदा भविष्य की सोचते रहते हैं।

चन्दन के विरोध पर भी रतना को इस दफ्तर में स्थान मिल ही गया।

दस आदमी और एक औरत !

एक शमा और हजार परवाने !

दफ्तर में काम करने वाले बूढ़े जवान हो गए और जवान

नौजवान बन गए।

आदिकाल से औरत मर्द की कमजोरी रही है और अनादिकाल तक रहेगी। यह तो प्रकृति की देन है। इसे कोई झुठला नहीं सकता। कोई रोक नहीं सकता।

चन्दन को इस बात का दुख नहीं था कि रतना को दफ्तर में क्यों रखा गया। दुख तो इस बात का था कि रतना के आते ही दफ्तर में विचित्र प्रकार के झगड़े उठने लगे थे। काम कम होने लगा था। सुबह से शाम तक रतना के ही चर्चे होते। रतना भी विचित्र प्राणी थी! वह किसी की परवाह नहीं करती।

उसके चेहरे पर सदा मुस्कान थिरकती रहती। वह हर एक से बातें भी करती थी लेकिन उसकी बात के पीछे एक कहानी छुपी नजर आती। उसकी नाचती हुई मुस्कान के पीछे शायद कोई हार्दिक पीड़ा झाँक रही थी। उसकी हर बात में एक भेद था। ऐसा लगता था जैसे रतना का असली रूप यह नहीं है।

इस बात को चन्दन की तीखी नजरें ही भाँप सकती थीं। वह आदमी की सत्यता जानने का प्रयत्न करता था। उसे रतना से हार्दिक सहानुभूति थी लेकिन उसे रतना से घृणा भी होने लगती। जब वह हर एक से हँस कर बातें करती तो चन्दन के सीने में अजीब-सी नफरत का उदय होता।

वह विवश था। दिल ही दिल में सुलगता रहता। उसका दिल चाहता था कि रतना को पास बिठा कर समझाए कि तुम अपने काम के सिवा और किसी से मतलब

मत रखा करो। यहाँ सब लोग तुम्हारे हुस्न के दीवाने हैं। किसी को तुमसे हमदर्दी नहीं। सभी तुम्हारी जवानी लूटना चाहते हैं। तुम्हारे जवान शरीर का निखार सबको पागल बनाता है। वह तुम्हारी जवानी को मसलना चाहते हैं। तुम्हारी पवित्रता को भ्रष्ट करना चाहते हैं लेकिन वह कुछ कह न सका। केवल दिल ही दिल में दिन रात सुलगता रहा।

रतना की चर्चा दिन प्रति दिन बढ़ती रही।

३

चन्दन दफ्तर में अभी आकर बैठा ही था। अतीत और भविष्य के तानेबाने में उलझा हुआ सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश खींच रहा था। शायद वह किसी उपन्यास की रूप रेखा तैयार कर रहा था। कई दिनों से वह कुछ लिख नहीं पाया था। प्रकाशक उसे तंग कर रहे थे कि नया उपन्यास

वह शीघ्र ही पूरा कर दे। मगर वह कई दिन से न जाने क्यों परेशान था।

नया उपन्यास ! नई कहानी ! नया विषय !

उसने झुंझलाकर अधजला सिगरेट फर्श पर दे मारा और बड़बड़ाने लगा—

काश ! मैं भी साधारण बाजारी किस्म के लेखकों की तरह होता। अंग्रेजी उपन्यासों को पढ़कर उसकी रूप रेखा ले लेता और दो चार दिन में घसीट कर प्रकाशक के हवाले कर देता। फिल्म देखकर उसी की कहानी को नया रूप दे देता तो इतना सोचने की आवश्यकता नहीं पड़ती। न ही इतना दिमाग लड़ाने की जरूरत होती। इस देश में ऐसे भी तो कहानीकार हैं जो महीने में दो-दो उपन्यास लिख मारते हैं।

उसकी आँखों के सामने 'आकिल रकीब' का चेहरा घूमने लगा जो हर महीने कई उपन्यास लिखकर प्रकाशकों से रुपया बटोर रहा था। इस समय उसकी आमदनी दो हजार रुपये माहवार थी। वह जब भी दिल्ली आता था। दस-बारह उपन्यास इकट्ठे लेकर आता था। बड़े-बड़े प्रकाशकों को फंसाने की कला में निपुण था। बातें बनाने में तो उसका जवाब नहीं था।

एक चन्दन था जो साल भर में तीन-चार उपन्यासों से अधिक लिख नहीं पाता था। इतने उपन्यास लिखना भी उसके लिए एक समस्या थी। अभी कल ही एक प्रकाशक ने उससे दो नावलों की माँग की थी लेकिन उसके पास तो एक भी तैयार नहीं था। यद्यपि उसे इस समय पैसों की बड़ी

सख्त जरूरत थी । वह चाहता तो कोई भी उल्टा-सीधा नावल लिखकर अपनी जरूरत पूरी कर लेता लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका।

आज वह इसी सोच में डूबा सिगरेट पर सिगरेट फूंक- रहा था। आकाश पर गहरे बादल छाए हुए थे। मौसम काफी अच्छा था। ठण्डी हवा के झोंके खिड़की के परदों को सरसराते हुए अन्दर आते तो बड़ा अच्छा लगता। ऐसी ऋतु तो कवियों और उपन्यासकारों की जान होती है। चन्दन को अभास हो रहा था कि आज उसे कोई नया विषय अवश्य मिलेगा। अगर आज कहानी का आरम्भ न हुआ तो कब होगा !

सहसा दरवाजे का परदा हटा और चपरासी भूरेसिंह मुस्कराता हुआ अन्दर आया।

'साहब !'

'क्या है ?'

'गजब हो गया साहब !'

'क्या गजब हो गया ?' चन्दन ने रोप में आते हुए पूछा।

'साहब, वह रतना है ना…'

'होगी—तुम्हें उससे क्या लेना है ?'

'होगी नहीं साहब, है।'

'भूरे सिंह, मेरे पास इन बेकार बातों का समय नहीं। कोई काम की बात हो तो कहो, वरना बाहर जाओ।'

'साहब, आप तो नाराज हो गए।'

'नाराजगी की बात नहीं। मेरे पास फजूल बातों के लिए समय नहीं है।'

'यह फजूल बात नहीं है साहब।'

'क्या बात है, कहो।'

'कहना तो बहुत कुछ चाहता था। लेकिन आपका मूड देखकर साहस नहीं होता।'

'साहस उसी को नहीं होता जब उसके अन्दर कोई कमजोरी होती है या उसने कोई अपराध किया होता है। अगर तुमने कोई अपराध किया हो तो चुप रहो। वरना जो कुछ कहना चाहते हो, साफ-साफ कहो।'

'साहब, क्या कहूँ, वह अपनी रतना है ना !'

'हाँ रतना है, अभी मरी तो नहीं।'

'नहीं साहब।'

'तो क्या किसी के साथ भाग गई ?'

'नहीं साहब।'

'तो क्या किसी के साथ शादी कर ली ?'

'नहीं साहब।'

'तो फिर कहना क्या चाहते हो ?'

'वह अपने खन्ना साहब हैं ?'

'हाँ, खन्ना साहब भी जिन्दा तो हैं ना ?'

'जी, वह··· वह···'

'वह··· वह···क्या, कुछ कहो भी।'

'क्या कहूँ साहब, कहते हुए लाज लगती है।

'लाज काहे की, जो कहना चाहते हो, कहो।'

'साहब आप मानेंगे नहीं।'

'क्या नहीं मानूँगा, क्या मानूँगा—यह सब कुछ मेरी समझ से बाहर है।'

'माफ करना साहब…'

'अच्छा कर दिया माफ कुछ कहो भी अब ।'

'रतना कल खन्ना साहब के साथ गई थी ।'

'गई होगी, तो यह कौनसी बड़ी बात है ?'

'साहब, आपको पता है कि खन्ना साहब के लड़के की शादी हुई थी तो मिठाई केवल रतना को दी गई और किसी को क्यों नहीं दी गई ।'

'यह सब चलता है ।'

'चलता होगा लेकिन दफ्तर के लोग तो कुछ और ही सोचते हैं ।'

'क्या सोचते हैं ।

'लोग कहते हैं कि खन्ना साहब भी रतना के चाहने वालों में हैं ।'

'हूँ ।'

'हाँ साहब, वह जरा-जरा-सी बात पर रतना को अपने पास बुलाते हैं, कभी चिट्ठी टाइप करने के लिए और कभी फाइल मंगवाने के लिए । कल तो कमाल हो गया ।'

'इसमें कमाल की कौन-सी बात है ?'

'साहब कमाल की बात यह है कि खन्ना साहब की बीवी कब की मर चुकी है । लड़के की शादी हो गई । दो लड़कियाँ पहले ही अपने-अपने घर जा चुकी हैं । तब वह घर पर अकेले ही रहते हैं ।

'होंगे ।' चन्दन ने सिगरेट सुलगाया ।

'मैं कहता हूँ साहब, दफ्तर में एक दिन खून हो जाएगा ।'

'खून !' चन्दन खून का नाम सुनकर उछल पड़ा ।'

'हाँ साहब, खून हो जाएगा, खून।'

'मगर इसमें खून की कौनसी बात है ?'

'साहब, एक तो रतना है।'

'हाँ, अभी तक तो एक ही है।'

'चाहने वाले कितने हैं।'

'भूरेसिंह !' चन्दन क्रोधित हो बोला।'

'माफ करना साहब, सच्ची बात कहता हूँ। भले ही आपको गुस्सा लगे। मुझे तो ऐसा लगता है कि एक दिन इस दफ्तर में खून जरूर होगा।'

'मगर क्यों ?'

'रतना के लिए।'

'रतना के लिए ?'

'जी, जब साठ-साठ साल के बूढ़े उसके साथ इश्क लड़ाना शुरू करेंगे तो नौजवान चुप नहीं बैठेंगे।'

'लेकिन यह किसने कह दिया कि खन्ना साहब उससे इश्क करते हैं।'

'खन्ना साहब की अपनी हरकतों ने।'

'क्या बकते हो भूरेसिंह ! अपने साहब पर इल्जाम लगाते हुए तुम्हें शरम नहीं आती !'

'शरम ! हूँ ! साहब, आप तो किताबें लिखते हैं। भला यह बताइए कि शरम नाम की कौनसी चीज नजर आती है इस दुनिया में। सच बात तो यह है कि दिल्ली शहर में अब शरम नाम की कोई चीज बाकी नहीं। बेड़ा गरक हो इस फैशन का, अब औरतें मर्दों की तरह दनदनाती फिरती हैं। सवेरे बस में चढ़ने आते हैं तो औरतें धक्के मारकर आगे

निकल जाती हैं। हम तो देखते रह जाते हैं और बस चली जाती है।'

'हूँ!'

'हमारे गाँव में तो पर्दे के बिना औरतें बाहर भी नहीं निकलतीं मगर यहाँ तो औरतों का अधनंगा रूप देखकर हमें ही पर्दा करना पड़ता है। यह फैशन ही कलजुगी माया है। इसमें भला खन्ना साहब का क्या दोष है! सारा दोष तो उस नारी रूप का है जो फैशन में लिपटी दफ्तर आती है। किस बाँकेपन से बाल बनाती है। आँखों में कजरारे काजल और मुँह पर पावडर लगाकर और भी खूबसूरत बन जाती है। यहीं पर बस नहीं साहब, जो छातियाँ भगवान ने बच्चे को पालने के लिए दी हैं उन्हें इस ढंग से बना संवार कर और नौकीले बनाकर आती है कि देखने वालों का मन खराब हो जाए।'

'मुझे तो ऐसा लगता है भूरे, कि तुम स्वयं रतना के शिकार हो गए हो।'

'नहीं साहब, मैं भूलकर भी ऐसी बात सोच नहीं सकता। मैं नौकरी करने आया हूँ ताकि अपने बच्चों को पाल सकूँ।'

'तुम तो खन्ना साहब की बात बता रहे थे।'

'हाँ साहब, वह तो बड़े तीसमारखाँ हैं। उनकी लड़के की शादी थी तो रतना को बुलाकर ले गए और वह एक रात वहीं रही।'

'यह तो साधारण बात है।'

'अगर यह साधारण बात है तो असाधारण बात क्या होगी?'

'हाँ, तो यही बात थी ?'

भूरेसिंह अब भी सामने खड़ा था। वह कुछ और कहना चाह रहा था जैसे उसके अन्दर की सुलगती आग अब ज्वाला बनकर भड़कती जा रही थी लेकिन चन्दन का मूड देखकर वह मौन हो रहा।

'भूरेसिंह !' सहसा चन्दन बोला।

'जी साहब !'

'तुम रतना को जानते हो ?'

'जानता क्यों नहीं साहब ?'

'मेरा मतलब है, रतना के बारे में यह जानते हो कि वह कौन है, कहाँ रहती है ?'

'जानता तो नहीं साहब, लेकिन पता करके बता सकता हूँ, खन्ना साहब तो जानते ही होंगे।'

'फिर वही खन्ना साहब। खन्ना न हुए दलीप कुमार हो गए जिसकी चर्चा हर बात में जरूरी है।

'साहब अगर बुरा न मानें तो सच्ची बात यही है कि खन्ना साहब आजकल हीरो दलीपकुमार ही बन रहे हैं। सारा दफ्तर जानता है कि वह रतना के प्रेमी नम्बर एक हैं।'

'दो नम्बर किसका है ?'

'वह अभी नहीं बताऊँगा साहब।'

'क्यों ?'

'यह एक भेद की बात है।'

'भेद की बात—मानो कि खन्ना साहब से आगे भी प्रेम है।!

'जी हाँ।'

'हूँ !'

'जो—इश्क न देखे महल माड़ियाँ, इश्क न देखे जात-कुजात।'

'तुम जा सकते हो।'

'अगर आप कहें, वरना आज...'

'वरना आज कहीं जाने को दिल नहीं करता।'

'जी !'

'क्यों ?'

'आज दिल बड़ा उदास है। आकाश पर बादल छाए हैं।'

'फिर ?'

फिर मौसम और भी प्यारा हो जाएगा और तब घर की याद आएगी।'

'घर की याद या घर वाली की ?'

'कुछ भी समझ लो साहब ! घर वाली के साथ ही घर है वरना घर को कौन याद करता ?'

'तो उसको यहीं ले आओ।'

'नहीं, यह तो हम भूल के भी नहीं कर सकते। यहाँ दिल्ली में हम अपनी बीवी को लाकर खराब नहीं करेंगे।'

'तुम बहुत चालाक हो गए हो।'

'हमारे चालाक होने से घर में कोई अंतर नहीं आता लेकिन औरत के चालाक होने से सारे घर को खतरा है।'

'कैसा खतरा ?'

'क्या बताऊँ ?' हमारे गाँव का एक आदमी अपनी घरवाली को दिल्ली ले आया। थोड़े ही दिनों में उसे शहर की हवा लग गई। वह भी लगी फैशन करने।'

'फिर क्या हुआ ?'

'फिर जो हुआ, कहने लायक बात नहीं।'

'क्यों ?'

'साहब वह अपने मर्द के लिए फैशन नहीं करती थी बल्कि पड़ोस में एक कवाँरा नौजवान रहता था, उसके लिए करती थी।'

'हूँ !'

'जी, और वह जवान उस पर आशिक हो गया। उसने उसे गलत रास्ते पर डाल दिया। पहले पहल तो उसके मर्द को पता नहीं चला। इधर वह घर से निकला, उधर वह उसके कमरे में घुस गई। यह ड्रामा महीनों चलता रहा। इसी बीच वह औरत काफी चालाक भी बन गई। सत्यानाश हो इन फिल्मों का जिन्होंने हम गरीबों को भी दिल फेंक बना दिया। वह नौजवान उसे फिल्में दिखाने लगा। फिल्में देखकर फैशन करने लगी। पाउडर, लिपस्टिक और अच्छे कपड़े देख लोग हैरान होने लगे कि एक चपरासी की औरत और इतना फैशन !

'हमने भी उसे समझाया कि उसकी औरत का चलन ठीक नहीं लगता। घर की ओर ध्यान दो, कहीं धोखा न खाना मगर अब बात उसके बसकी नहीं थी। अब तो चिड़िया के पर लग गए थे। वह अब उसकी बात कहाँ सुनती थी। उसके दिमाग पर तो प्रेम का भूत सवार था।'

'प्रेम !'

'हाँ जी, यह प्रेम का ही भूत था।

'तो हुआ क्या ?'

'होना क्या था ! एक दिन वह चिड़िया फुर्र से उड़ गई।'

'भाग गई ?'

'जी, भाग गई उसी नौजवान के साथ !'

'इसीलिय तुम भी डरते हो।'

'जी, इसीलिए डरता हूँ। औरत जात का कोई भरोसा नहीं खासकर ऐसे शहर में जहाँ खन्ना साहब जैसे प्रेमी भी रहते हैं।,

'हूँ।,

'क्षमा करना, साहब, आपका बहुत समय नष्ट कर दिया।'

यह कहकर भूरेसिंह शीघ्रता से बाहर निकल गया।

४

आकाश पर गहरे काले बादल छाए हुए थे। बादलों के आवारा टुकड़े दूर आकाश की छत के नीचे एक दूसरे के गले मिलते। कभी मस्त हाथियों की तरह झूमते, कभी किसी सुन्दरी की तरह अटखेलियाँ करते निकल जाते और कभी जोश में आकर साँडों की तरह आपस में टकरा जाते। इनके

टकराने से गरजदार आवाज होती तो दिल दहल जाता।

चन्दन आज दफ्तर में उदास बैठा था। वह बारबार यह पंक्ति दुहरा रहा था—

हम सोच रहे थे रिमझिम में पिएँगे
आई बरसात तो बरसात पर रोना आया

बरसात की प्रतीक्षा में कवि, कहानीकार और चित्रकार आदि गिनगिन कर दिन काटते हैं। यह वर्षा ऋतु कलाकारों का जीवन होता है। इसीकी आशा में बहुत सारी चीजें अधूरी पड़ी रहती हैं। चन्दन भी इस मौसम का इन्तजार कई महीनों से कर रहा था। गरमी की अधिकता से शायद वह कई महीने से कुछ लिख नहीं सका था।

आज मौसम बड़ा सुहाना था। दफ्तर के कमरे की बड़ी खिड़की से वह स्याह बादलों का दृश्य देख रहा था। उसे बार-बार यही आभास हो रहा था जैसे किसी सुन्दरी ने अपनी स्याह जुल्फों को बिखेर दिया हो और इन जुल्फों से टकरा-टकरा कर आने वाली हवा कितनी अच्छी थी। भीनी-भीनी सुगन्ध भरी हुई थी। जीवन का रोम-रोम सिहर उठता था।

लेकिन चन्दन !

वह तो दूर कहीं अतीत के धुंधलकों में खोया पड़ा था। जीवन की कितनी लम्बी यात्रा उसने की थी। जब भी वह कभी सोचता उसकी आत्मा काँप उठती।

वह अपने अतीत को भूलने का प्रयत्न करता लेकिन उसे भुला न सका। जिन्दगी के गहरे घावों पर समय का मरहम रखने का यत्न किया लेकिन वह घाव कभी भर न सका वह

तो और भी गहरे होते गये।

घाव के उपर घाव लगता गया।

चोट के ऊपर चोट लगती गई।

और!

और यही थी उसकी जीवन गाथा।

चन्दन के सारे घाव ऐसे सुहाने मौसम में हरे हो जाते। बीता हुआ समय उसका मुँह चिढ़ाने लगता। अतीत की स्मृति उसके हृदय को कचूके लगाती। वह तड़प उठता। उसे ऐसा मालूम होता जैसे यह सुहाना मौसम सुलग रहा हो। बहारों को आग लग गई हो। फूलों की डालियाँ झुलस गई हों।

दूर उन काले गलद के बीच एक चेहरा उसकी ओर टकटकी बाँधे देख रहा था।

वही मोटी-मोटी स्याह आँखें!

कुछ लगाई कुछ उदास सी!

मोटे गुलाबी होंठ कंपन युक्त! फूल की पत्तियों की तरह लरजते हुए।

फूल-सा खिला हुआ चेहरा जो अचानक मुर्झा जाता वह कौन थी?

वह बादलों के बीच छुपी हुई नारी मूर्ति जिसने अपनी स्याह जुल्फें बिखेर दी थी और उन स्याह जुल्फों के बादल बन गए थे।

वह वही थी, वही, बिल्कुल वही!

उसके जीवन की अमर गीत!

उसके दिल की धड़कन!

उसके कला का जीवन!

सिर्फ इक कदम उठा था गलत राहे शौक में
और मंजिल तमाम उम्र मुझे ढूँढती रही

हाँ। केवल एक कदम !

केवल एक पग !

किसका ?

किसके पाँव की झंकार !

किसके दिल की पुकार !

थी कौन वह ?

वह अंजू थी।

'अंजू !'

चन्दन ने स्वतः उसका नाम लिया। उसके उदास अधरों में एक कंपन पैदा हो गई।

'अंजू ! मेरी अंजू ! तू कहाँ होगी !

यह हसीन मौसम, यह ठंडी हवा के झोंके, एक मदमाती सुन्दरी की तरह नृत्य करते जलद—यह सब तेरी याद दिलाते हैं।

तुम्हें याद होगा—

कभी हम मिले थे जिन्दगी की उदास और वीरान राहों पर, जब मैं थक कर चूर हो गया था, जब मेरे पाँव लड़खड़ा रहे थे। मेरी साँसें उखड़ी हुई थीं और मैं लड़खड़ा कर गिरने ही वाला था कि सहसा जीवन के किसी कोने से तुम निकल आईं। तुमने आगे बढ़कर मुझे अपनी अंक में भर लिया।

और मैं !

मैं अकस्मात पुकार उठा—

'कौन हो तुम ?'

'मैं—? सहारा !'

'सहारा !'

'हाँ सहारा।'

'किसका सहारा ?'

'बेसहारा का।'

'झूठ—धोखा !'

'नहीं झूठ नहीं, धोखा नहीं। मैं सहारा हूँ।'

'लेकिन मुझे अब सहारे की जरूरत नहीं। जिस रास्ते मैं चल पड़ा हूँ, उसी पर मुझे शांति मिलेगी। अब मेरी कोई मंजिल नहीं, अब मुझे जिन्दगी नहीं चाहिए। सहारा नहीं चाहिए।'

'मौत कभी भी मिल सकती है लेकिन जिन्दगी फिर कभी नहीं मिल सकती।'

'लेकिन मुझे तो जिन्दगी भी मौत के ही रूप में मिली है। मैं जीवित अवश्य रहा हूँ लेकिन जीवन मुझसे रूठा रहा। इससे संसार ने मेरी विवशता का उपहास किया, मेरा उपहास किया, मेरी कला का उपहास किया।'

'तो-तो तुम इस संसार का उपहास करो। प्रतिशोध की ज्वाला में अपने आपको मत जलाओ। इस संसार को जला दो।'

'थोड़ी देर सुस्ता लो।'

'सुस्ताने के लिए भी सहारा चाहिए।'

'सहारा तलाश किया जाता है। मिलता नहीं।'

'तलाश करते जब थक गया तो बस रास्ते पर निकला हूँ।'

'मगर यह रास्ता गलत है।'

'दुनियाँ की नजरों में गलत है लेकिन मेरी नजरों में ठीक है। जब इन्सान के जीने के रास्ते बन्द हो जाते हैं तो मौत का रास्ता अपने आप खुल जाता है। मेरी मौत भी बड़ी हसीन होगी—

कंवारे सपनों की मौत !

पवित्र भावनाओं की मौत !

मचलती हुए इच्छाओं की मौत !

अधूरी अभिलाषाओं की मौत !

उन गीतों की मौत जिन्हें किसी मंत्र पर गाया नहीं गया। उन कहानियों की मौत जिन्हें किसी कागज पर उतारा नहीं गया। मौत !

'हसीन मौत !

'जवानी की मौत !

संभाल मुझे अपनी बाँहों में। मिटा दे मेरे अस्तित्व को सदा के लिए। मुझे जीते जी तो शाँति मिली नहीं। शांति के लिए दर-दर की ठोकरें खाकर जब थक गया तो अब तेरे दरवाजे पर दस्तक देने आया हूँ।

मौत भी कितनी अच्छी है ! दुनिया-भर के दुखी लोगों को अपने अंक में आसरा देती है। बेसहारों का सहारा है। जिसे दुनिया ठुकराती है, उसे यह गले लगाती है।'

'वाह !'

'आप मुस्कराने लगीं ?'

'मस्कराती नहीं, आपकी कविता की सराहना कर रही हूँ।"

'यह कविता नहीं, दुखी दिल की पुकार है।'

'कविता का जन्म ही दुख से होता है।'

'तो मेरी मौत ही कविता को जन्म देगी।'

'मौत नहीं जिन्दगी !'

'जिन्दगी अब मेरे लिए नहीं रही। मैं जिन्दगी को इस दुनिया वालों के लिए छोड़ आया हूँ। जिन्दगी तो केवल उनके लिए है जिनके पास पैसा है, सुख है, जीने का सहारा है। उनके लिए नहीं है जिनके पास पैसा नहीं। यह मत भूलो, सुन्दरी कि आज के जमाने में पैसा केवल कुछ ही लोगों के पास है। पैसा ही आज के जमाने में जिन्दगी है जिसे कुछ ही लोगों ने कैद कर रखा है। करोड़ों लोगों का सुख चैन उनके पास जमा है। वह जिन्दगी के बदले में हमें मौत देते हैं—मौत और मैं आज उसी मौत को गले लगाने जा रहा हूँ।'

'तुम्हारा नाम ?'

'चन्दन—जिसकी सुगंध समाप्त हो चुकी है।'

'लेकिन मैं तो वह चन्दन हूँ जिसकी सुगंध कभी की समाप्त हो गई।'

'यह तुम्हारा भरम है।'

'काश ! यह भरम ही होता तो कितना अच्छा होता। लेकिन मैं अब इस सत्यता को भरम समझकर छला नहीं जा सकता।'

'छल का नाम ही तो जीवन है। अगर छल और पाखंड इस दुनिया में न होता तो जीवन अजीरन हो गया होता।'

'वह कैसे ?'

'अगर आप इतने ही अनजान हैं तो सुनिए—इस दुनिया का हर प्राणी जानता है कि जीवन का अन्त मौत है।'

'हाँ, जानता है।'

'फिर भी वह दुनिया भर की चीजों को अपनी समझता है। उन्ही के लिए लड़ता झगड़ता है। जबकि वह अच्छी तरह जानता है यह शरीर भी उसका अपना नहीं है। तो बताओ यह छल और धोखा नहीं तो और क्या है ?'

'हूँ !' वह चकित हो चौंक उठा था और ध्यान से उस सौंदर्य की प्रतिमा को निहारने लगा था।

सहसा उसकी निगाहें उस लड़की की निगाहों से टकरा गई।

वह पागलों की तरह उन मस्त आँखों में खो गया।

दिल की धड़कने तेज होने लगीं।

रोम-रोम से चिंगारियाँ फूटने लगीं।

यह सौंदर्य !

यह मदमाते नयन !

यह जवानी !

कहीं वह स्वप्न तो नहीं देख रहा है !

'स्वप्न नहीं, सत्य है। प्रत्यक्ष है।'

'मुझे संदेह है।'

'संदेह है तो दूर कर लो।' वह उसके समीप आ गई, बिल्कुल सीने के पास जहाँ से उसके शरीर में से निकलती हुई गरमी की लपट का वह आभास कर सकता था। उसके नयनों से निकलती हुई गरम हवा उसके चेहरे को छू रही थी।

एक युवती, एक जवानी पाल रही थी।

युवती—जिसकी परछाई के लिए वह आज तक तरसता

रहा। जिसकी कल्पना में जवानी के कई वर्ष नष्ट किए थे।

नारी स्पर्श के लिए यह रातों को जागता रहा। उसके कवाँरे सीने सूनी रातों में बिलखते रहे।

इसी नारी ने उसे निराशा दी थी, दुख दिए थे, टीस दी थी।

जवानी की चौखट पर पाँव रखते ही उसे औरत के सहारे की जरूरत अनुभव हुई लेकिन उसे कोई औरत नहीं मिली जो उसे प्यार से पुकारती।

जो उसके थके हारे शरीर को अपने अंक में भरकर सांत्वना देती।

उसके मित्र लड़कियों की बातें करते और वह सुलगते हुए दिल से सुनता रहता। तड़पता रहता। कोई कहता कि मैंने विमला को फंसा लिया है। कोई कहता मैंने रंजना से प्यार शुरू कर दिया है।

लेकिन वह—! वह क्या करे! कालेज में इतनी लड़कियाँ हैं लेकिन कोई भी भूल कर उससे बात नहीं करती। कोई नहीं पूछती—चन्दन तुम कैसे हो।'

यह गम उसे अन्दर ही अन्दर खाता रहा। वह अन्दर ही अन्दर सुलगता रहा। वह किसी से बात न करता। किसी सोसायटी में न बैठता। इसका नतीजा यह हुआ कि कालेज में उसे महान चुगद कहकर उसका मजाक उड़ाया जाता।

महान चुगद!

इस नाम ने तो रही सही कसर भी पूरी कर दी। अब तो नई लड़कियों को भी इसका उपहास उड़ाने का अवसर

मिल गया। पुरानी लड़कियाँ नई लड़कियों को बता देतीं कि अपने कालेज में एक महान चुगद भी है।

समय बीतता गया। दिल का घाव बढ़ता गया। किसी भी लड़के लड़की को एक साथ देखकर यह घाव रसने लगता–दिल की आग गीली लकड़ी की तरह सुलगती रही।

और एक दिन उसे औरत जात से घृणा हो गई।

अब लड़कियाँ उसका उपहास क्या करतीं ! वह नारी जात का उपहास करने लगा।

कालेज का जमाना इसी तरह बीत गया। फाइनल इयर पास करके उसने अपना प्रतिशोध कर लिया।

वह दृश्य भी दर्शनीय था। जब कालेज-प्रिंसीपल ने सारे लड़के लड़कियों के सामने उसकी पीठ ठोंकते हुए कहा था—

चन्दन जैसे विद्यार्थियों पर सारे कालेज को गर्व है बल्कि मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि चंदन पर पूरे देश को गर्व है। आज हमारे इस विद्यार्थी ने सारे प्रांत में प्रथम आकर अपना ही नाम उजागर नहीं किया पूरे कालेज का नाम उजागर किया है।

महान चुगद प्रांत भर में प्रथम रहा।

अखबारों के पहले पृष्ठ पर उसका फोटो छपा था।

जो लोग कल तक उससे बात करना भी पसंद नहीं करते थे वही उसके आगे-पीछे घूमने लगे। जो लड़कियाँ उसका मजाक उड़ाया करतीं, वह पास आकर बात करने में गर्व अनुभव करतीं लेकिन उसका घाव, उसके हृदय की चुभन तो अभी वैसी ही थी। वह जमाने की चाल को अच्छी तरह समझ चुका था।

आज का जमाना चढ़ते सूरज की अराधना करता है।

वह लापरवाही से कालेज कम्पाउंड से बाहर निकल आया और जाते-जाते कालेज की लम्बी-चौड़ी बिल्डिंग पर उसने एक हसरत भरी निगाह डाली जिससे उसका सम्बन्ध सदा-सदा के लिए टूट रहा था।

५

●●●

आज वही औरत उसके सामने खड़ी थी।

'आप मुझे घूर-घूर कर इस तरह क्यों देख रहे हैं?'

'इसलिए कि मैंने किसी औरत को जिन्दगी में पहली बार इतने समीप देखा है। मुझे अब भी संदेह है कि तुम औरत हो या औरत की कल्पना!'

'हा-हा-हा !' वह खिलखिला पड़ी।

उसे लगा जैसे यह औरत भी और औरतों की तरह उसका मजाक उड़ा रही।

'क्या आप भी मेरा मजाक उड़ा रही हैं ?'

'मैं तो नहीं, हाँ आप अवश्य मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।'

'मैं मैं···' वह कुछ बोल न सका।

'हाँ हाँ आप।'

'कैसे ?'

'आपको मैं औरत के रूप में नजर नहीं आती।'

'आती तो हैं लेकिन...।'

'लेकिन क्या ?'

'लेकिन मैं सोचता हूँ...।'

'तो आप अब तक सोच ही रहे हैं।'

'सोच-सोच कर तो यहाँ तक पहुँचा था कि अब सोचने की शक्ति ही खत्म हो गई थी लेकिन आपने एक नई सोच दे दी।

'मैंने नई सोच नहीं दी, नई जिन्दगी दी है।'

'जिन्दगी से पहले ही क्या मैं कम तंग हूँ ?।

'कारण ?'

'कारण तो उस बात का पूछा जाता है जिसका इलाज हो सके।'

'जब मैं मौत को जिन्दगी में बदल सकती हूँ तो कोई वजह नहीं कि मैं आपकी परेशानियों को हल न कर सकूं।'

'न जाने क्यों दिल को यकीन नहीं आता।'

'यह मुसीबत दिल ही ने तो पैदा की है। चलिए किसी रैस्टोरेंट में बैठ के बातें करें।'

'मेरी बात !'

'आपकी बातें तो सुन चुकी हूँ। अब आप थोड़ी देर मेरी बातें सुनें। फिर जो जी में आए करें।

इतना कह वह आगे चली और उसे भी विवश हो पीछे चलना ही पड़ा।

न जाने क्यों वह पत्थर से मोम हो गया था !

क्या सचमुच औरत में इतना आकर्षण है कि वह पत्थर को मोम बना सकती है ? वह चट्टानों को चकनाचूर कर सकती है ?

नारी से, नारी जाति से उसे आज तक घृणा थी और वही आज उसे जीवन-दान दे रही थी।

वह क्या सोचकर यहाँ आया था ?

एक उचटती-सी नजर उसने चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर डाली जहाँ वह आत्म-हत्या के उद्देश्य से आया था।

सहसा एक पहाड़ी ढोके से टकरा कर वह झुका तो उसका हाथ अंजू के कंधे पर जा पड़ा।

'ओह, क्षमा करना।'

'कोई बात नहीं।'

सारा रास्ता शाँति से कट गया। ऊबड़खाबड़ पहाड़ियों से चलते हुए वह माल रोड पर आ पहुँचा। वही माल रोड जिसे वह विदाई देकर चला आया था। वह अब भी पहले की तरह ही सजी हुई थी।

नव विवाहित जोड़े हनीमून मनाने शिमला आते हैं।

नये प्रेमी और प्रेमिकाएँ भी आती हैं जो घर से चोरी से भाग आते हैं।

अधेड़ उम्र वाले तो अपने बुढ़ापे को जवानी का रंग चढ़ाने शिमला आया करते हैं।

असफल प्रेमी भी आते हैं जो अपने घावों को शिमला के वायुमंडल में सुखाने के प्रयत्न करते हैं लेकिन सौन्दर्य देख देख सुलगते भी रहते हैं।

वह इसी रास्ते से अभी-अभी गया तो, उसके पास निराशा और असफलता की दुनिया भर की बेचैनी थी। घृणा थी। जीवन की बहारें शुष्क हो गई थीं। वह इस दुनियाँ को विदा कहकर नई दुनियाँ की खोज में चला था।

अब अंजू उसे फिर उसी दुनियाँ में लौटा लाई थी।

यह अंजू थी या कोई देवी जो उसे हंसती खेलती दुनियाँ की सुख शांति प्रदान पाने में सहायक हो रही थी।

फिर वही हंसती-खेलती जवानी, गुलाबी होठ, मटकते हुए कूल्हे, लहराती जुल्फें और उभरी छातियाँ।

इस औरत ने मनुष्य को मस्त बनाए रखने के लिए किन-किन चीजों का अविष्कार किया है!

मर्द तो औरत पर उसी समय मर मिटा था जब वह नित्य नये फैशन नहीं करती थी।

इसी के लिए उसने स्वर्ग को तिलांजलि दे दी।

आज की औरत तो उस औरत से कहीं ज्यादा सुन्दर हो गई है।

अंजू भी एक औरत थी। सुन्दर सी लड़की थी।

थोड़ी ही देर में वे बालजी रेस्टरां में था।

बाहर की अपेक्षा अन्दर बहुत कम रोशनी थी। धीमी-धीमी बत्तियाँ चारों ओर जल रही थीं जिनकी रोशनी में हाल में बैठे लोगों का चेहरा देखना कठिन था। दीवारों में चारों ओर बड़े-बड़े शीशे लगे हुए थे।

हाल के पिछले भाग में बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थी जिनसे दूर तक फैले हुए काले गहरे भूरे रंग के पहाड़ सपाट दिखाई दे रहे थे।

'बैठिए।' गुलाबी होंठ थरथराए!

वह थके हुए ढंग से एक सीट में धंस गया।

अंजू उसके सामने वाली सीट पर बैठी थी।

'क्या पीएँगे?'

'जो आप पसन्द करें।'

'जो आप पसन्द करें।'

वह अंजू की जवानी में खो गया। दूर सामने पहाड़ पर स्याह बादलों के झुंड ने पहाड़ों को ढाँप लिया था। बादलों के झुंड मस्त हाथी की तरह बढ़ते चले जा रहे थे। कुछ टुकड़े खिड़की के रास्ते अन्दर भी आते दिखाई दे रहे थे।

'मैं आपकी पसन्द से पीना चाहती हूँ।'

'मेरी पसन्द छोड़िए। मेरी पसन्द क्या हो सकती है। यह तो थोड़ी देर पहले आप अच्छी तरह देख चुकी हैं। ऐसे इन्सान से पसन्द के बारे में पूछना बेकार है।'

'हूँ! तो आप पर अभी वही भूत सवार है?'

'वह भूत तो उतर गया। अब दूसरा सवार है।'

'वह कौन सा ?'

वह कहना चाहता था कि तुम्हारे सौंदर्य का भूत अब सवार है लेकिन दिल की आवाज होठों तक आकर रह गई। वह इतना ही कह सका—

'इसी हँसती-खेलती दुनियाँ का भूत !'

'हूँ।'

'हाँ, यहाँ आकर तो ऐसा मालूम होता है कि किसी को कोई चिन्ता ही नहीं है।'

'सचमुच देखा जाए तो चिन्ता नाम की तो कोई चीज है ही नहीं। सुख-दुःख तो मानव जीवन के आभूषण हैं।' उसने माथे पर आई मोटी लट को पीछे करते हुए कहा।

'खुशी वह जेवर है जो खालिस सोने का है और गम की तो कोई कीमत ही नहीं। न ही इसे कोई पहनना पसन्द करता है। यह तो वह दुल्हन है जिसे सुहाग रात को दूल्हा छोड़ के सदा के लिए कहीं चला गया है।'

'आपका उदाहरण तो अनोखा है। विचार तो कलायुक्त हैं। आप कहानी लेखन क्षेत्र में आएँ तो सफल रहेंगे।'

'इसी लगन ने तो मौत की गोद में डाल दिया था।'

'सच्च !' वह कुर्सी से उछल पड़ी। उसका सीना थर्राने लगा।

'जी।'

'तो मेरा अनुमान गलत नहीं निकला।

'क्या अनुमान था आपका ?'

'यही कि आत्मघात की बात कोई कवि, कहानीकार, उपन्यासकार या चित्रकार—मेरा मतलब है कोई कलाकार

ही सोच सकता है ।'

'हूँ ऊँ !' उसने एक लम्बी साँस ली और फिर दूर आकाश पर छाए बादलों में खोकर रह गया। अब बादल भी पहले से कहीं गहरे हो चले थे ।

'यस सर ।' बैरे ने मेज पर आधा झुकते हुए कहा। वह आर्डर के लिए अंजू की ओर देखने लगा । अंजू उसकी ओर देखने लगी ।

दोनों की नजरें आपस में टकरा गईं ।

'क्या पसन्द करेंगी आप ?'

'मेरी पसन्द आपकी पसन्द से अलग तो नहीं ?'

वह थोड़ी देर के लिए चिंतित हो उठा । अपनी परेशानी को दूर करने के लिए मीनू देखने लगा ।

बैरा समझ गया कि अभी आडर देने का फैसला नहीं हुआ । वह सिर झुका कर चला गया ।

'आप आडर दीजिए ना !' अंजू ने बच्चों की तरह मचलते हुए कहा ।

'मैं क्या दूँ, यह तो मेरी समझ से बाहर है ।'

'कमाल है । इतना बड़ा मेनू पढ़कर आप कुछ पसन्द नहीं कर सकते ?'

'यही दोष तो मुझ में है ।'

'उफ । जरा-सी बात के लिए इतनी बहस ! अच्छा बाबा, मैं ही आडर देती हूँ ।'

'बआए ?'

'यस मैडम ?'

'दोप्लेट फ्रूटक्रीम,दो मसाला-डोसा और हॉफसेट काफी।'

'अभी लाया मैडम।'

वह मौन हो अंजू को निहारता रहा मानो पुजारी पूजा के समय मूर्ति पर ध्यान जमाए हो।

'इतनी सी बात के लिए घबराए हुए थे ?'

'घबराने की बात नहीं यह तो नियम की बात थी।

'नियम ! क्या मतलब ?'

'खाने के मामलों में मर्द से ज्यादा औरत को पता होता है।'

'हूँ ऊँ !'

'अगर मेरी बात बुरी लगी हो तो वापिस लेता हूँ !'

'नहीं, इस तरह तो हमने कभी यह बात सोची ही नहीं।'

'सोचने का काम तो विधाता ने मुझे सौंपा है।'

'अच्छा तो आप सोचते रहें। मैं भला इतनी बारीक बातों में उलझ कर क्या लूंगी।'

इतनी देर में बैरा खाने का सामान ले आया और फिर दोनों खाने में व्यस्त हो गए।

खाते-खाते दोनों की नजर एक दूसरे से टकराती रहीं।

'पसंद आया मसाला डोसा ?'

'जी ! ऐसा लगता है कि मसाला-डोसा यहाँ की स्पेशलटी है।'

'जी हाँ, और फ्रूट क्रीम का स्वाद देखिए। वह इससे ज्यादा स्वादिष्ट है।'

'जी, जी हाँ।'

इसी तरह बातें करते समय बीतता रहा। दोनों इस तरह बातें करते रहे जैसे बड़े पुराने साथी हों।

६

●●●

विधाता ने नारी जीव भी विचित्र घढ़ा है। असीमित आकर्षण, सुन्दरता समेटकर नारी को सौंप दिया। पुरुष उसका दीवाना बन गया। तभी तो भगवान के बनाए स्वर्ग को छोड़कर मर्द ने औरत को चुन लिया। इसका मतलब यह नहीं कि नारी के सामने स्वर्ग का महत्व नहीं, बल्कि

यह कि नारी में एक नहीं अनेक स्वर्ग समाए हुए हैं। जो मजा भगवान के स्वर्ग में मर्द को नहीं मिलता वह उसे नारी में मिल जाता है।

जिस होटल से वह निश्चय करके निकला था कि अब यह हँसती खेलती दुनियाँ सदा के लिए छोड़ देगा, आत्महत्या कर लेगा। उसी होटल में, उसी हंसती-खेलती दुनियाँ में वह फिर लौट आया। वही होटल था, वही कमरा था, उसी तरह उसका सामान बिखरा हुआ था। उसी बिस्तर पर वह आकर सो गया।

अनिच्छा से उसने अपने सामान पर एक उचटती सी नजर डाली और इतने बड़े परिवर्तन पर वह चौंक उठा। अगर वह आत्मघात कर लेता तो इस सामान का क्या होता।

कुछ किताबें मेज पर बिखरी पड़ी थीं। इनमें सबसे ऊपर पड़ी किताब 'जीने की कला'—अब भी उसका मुंह चिढ़ा रही थी। उसका विचार था कि यह नई किताब उसके जीवन के टिमटिमाते लौ को बुझने से बचा लेगी।

इसके अतिरिक्त और भी दर्शन की पुस्तकें थीं जिन्हें आत्मघात करने के निश्चय से पहले वह पढ़ चुका था लेकिन पुस्तक में और व्यवहारिक ज्ञान में कितना अन्तर है, यह उसे अब अनुभव हो चला था।

वह इन पुस्तकों की ओर देख मुस्करा पड़ा। बड़बड़ाने लगा—

जो काम इतनी किताबे न कर सकीं उसे एक लड़की ने कर दिखाया।

जीवन केवल कार्य रूपेण बन सकती है, दर्शन से नहीं

क्या यह सत्य नहीं है ?

यही सत्य है। आज तक का उसका संयोग दार्शनिक विचारधारा अर्थहीन हो गई। मनुष्य को जीने के लिए सहारे की जरूरत होती है।

वह सहारा अब मिल गया।

सहसा उसकी नजरों में अंजू की तस्वीर घूमने लगी।

क्या उसे अंजू से प्यार हो गया है ?

कहीं ऐसा तो नहीं कि एक धोखा खाने के बाद अब वह दूसरा धोखा खाने चला है ?

अंजू एक अजनबी लड़की है, कहाँ रहती है, उसका ध्येय क्या है ? यह सब कुछ वह नहीं जानता। इतने पर भी वह अंजू के इतने समीप आ गया है कि पीछे हटने का विचार भी नहीं उठता।

अंजू एक नयी जीवन-निधि है।

उसने एक सिगरेट सुलगाया और लम्बा कश लगाकर धुआँ का बादल कमरे में बिखेर दिया।

सिगरेट के धुयें में से वह आतीत को ढूंढ रहा था। लेकिन उसमें इतना साहस नहीं था कि अतीत से आँखें मिला सके।

अतीत ने तो उसे मौत के मुँह के धकेल दिया था जहाँ से अंजू उसे निकाल लाई थी। तो फिर क्यों न वह अतीत को सदा के लिए बिसरा दे, सदा के लिए भूल जाए।

दरवाजे पर सहसा आहट हुई और उसकी विचार धारा भंग हुई। नजर उठा कर देखा तो चकित हो गया।

अंजू !

कल की अंजू और आज की अंजू में कितना अन्तर था।

सफेद साड़ी, सफेद ब्लाउज और सफेद चप्पल! चेहरे का रंग लाली मिली हुई सफेदी में तरंगित। मोटी-मोटी स्याह आँखें झील की तरह गहरी। कंधों पर बिखरे बाल, तनी हुई भौहें, वृताकार पलकें, तीखी आँखें और गुलाबी होंठ जिनमें दुनिया भर का रस समाकर रह गया था।

यह अंजू थी या कोई संगमरमर की मूर्ति!

उसकी जुल्फें थीं या कंधे पर बिखरे हुए बादल।

उसकी जवानी थी या बहार का पहला झोंका।

होंठ थे या मदिरा के प्याले।

वह किस कवि की कल्पना थी या किसी चित्रकार की अति सुन्दर कृति।

उसे देख वह ज्ञान शुन्य हो गया।

'हे भगवान, मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ।'

'नहीं सपना नहीं देखे रहे हैं।'

उसके अधर हिले वह छमछम करती चंचल-सी अन्दर आ गई।

'क्या बात है? अभी तक यूँही बैठे हुए हैं।'

'आप की ही प्रतीक्षा कर रहा था।'

'मेरी प्रतीक्षा।'

'हाँ, हाँ, आपकी। क्या मुझे प्रतीक्षा का अधिकार नहीं?'

'आपको तो बहुत सारे अधिकार प्राप्त हैं। प्रतीक्षा तो साधारण सी बात है।' उसने बड़ी नजाकत से अपनी सफेद साड़ी के आँचल को उभरे हुए सीने के ऊपर करते हुए कहा।

'मेरा जीवन तो केवल इन्तजार में ही कट सकता है।'

'ओह! अब आप में इतना परिवंतन आ गया।'

अंजू के इस उत्तर पर वह झेंप कर रह गया। उसे अपने परिवर्तन का आभास हो गया। कहाँ, वह कल ही मौत की बातें कर रहा था और कहाँ आज बेधड़क ही प्रेमालाप कर रहा है। जैसे एक ही रात में उसका नया जन्म हो गया है।

'आपने सिगरेट क्यों बुझा दी।'

'सिगरेट की जरूरत नहीं।'

'क्यों ?'

'यह तो केवल एकांत का साथी है।'

'हूँ। तो आपने एकाँत का साथी पा लिया।'

'कल्पित वरना···'

'वरना क्या ?'

'वरना कल्पना का आभास मात्र है।'

'कल्पना सही लेकिन सहारा तो है।'

'हाँ, यह तो ठीक है।'

वह मुस्करा पड़ी और चन्दन मर मिटा।

'कहो रात कैसी गुजरी ?' उसे मौन देख अंजू ने पूछा।

'बड़ी सुहानी। और रातों से बड़ी भिन्न क्योंकि यह मेरे नव-जीवन की पहली रात थी।'

'नवजीवन की पहली रात।'

'हाँ अंजू। मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे अभी कल ही मेरा जन्म हुआ हो। इससे पहले का चन्दन तो आत्महत्या कर के मर चुका है। यह तो नया चन्दन है जो आपके सामने है।'

'चलो, मान लेती हूँ।'

'मानना ही पड़ेगा।'

'मान लिया ।'

'क्षमा करना अंजू । मैं तो भूल ही गया कि मेहमान हमारे कमरे में आया है ।' वह हड़बड़ा कर उठ बैठा और बैरे को आवाज दी ।

'यस सर'। बैरा तुरन्त आ पहुँचा ।

'दो कप चाय स्पेशल और साथ में खाने के लिए कुछ नमकीन ।' वह घबराहट में शीघ्रता से कह गया ।

'क्षमा करना अंजू । चाय मँगवाने में देर कर दी मैंने ।'

'इतनी जल्दी क्या थी ?'

'जी ।'

'क्या चाय इतनी जरूरी है ?'

'अवश्य ।'

'मैं तो नहीं समझती ।'

'आपकी तो बात ही निराली है ।'

'क्यों ?'

'फिर कभी बताऊँगा ।'

'आज ती बताइए ।'

'अभी समय नहीं आया ।'

'तो यह बात बताने का भी समय निश्चित है ?'

'मेरे विचार में तो अवश्य है ।'

इतनी देर में बैरा चाय लेकर आ गया और पास पड़ी मेज पर चाय सजा दी ।'

'आइये, जरा चाय तो पी लें ।'

'मुझे भला इन्कार कहाँ है ।'

'चाय बनाने की तकलीफ तो उठाएँगी ना ।'

'अगर आप कहें तो वरना मुझसे बेहतर सर्विस आप दे सकते हैं।'

'आपके पास बैठने से मुझे यह शोभा नहीं देता।'

'अच्छी बात है।'

वह चाय बनाने लगी।

चाय बनाते हुए कोमल बाहों को चन्दन निहारता रहा। उसकी पतली-पतली उँगलियों को देखकर उसे कुछ अजीब संवेदना का आभास होता रहा।

'लीजिए।'

'आज कितना अच्छा दिन है और कितना सौभाग्यशाली मैं हूँ।' उसने चाय का घूंट भरते हुए कहा।

'हूँ।'

'इसका मतलब है आप मेरी बात समझ गईं ?'

'मैं आपकी हर बात समझती हूँ लेकिन एक बात नहीं समझी।'

'कौन सी ?'

'यह फिर कभी बताऊँगी।'

'फिर कभी क्यों ?

'इसलिए कि मैं यह नहीं चाहती कि पुराने जन्म की कोई बात याद दिलाकर इस नये जन्म में कोई मुसीबत खड़ी करूँ।'

'ऐसी बात तो नहीं अंजू। सच तो यह है कि अतीत की बातों को याद करके मैं स्वयं हँस देता हूँ।'

'सच !'

'यानी आप हँस देते हैं लेकिन मेरा ख्याल तो बिलकुल उल्टा था।'

'वह कैसे ?'

'आप अब हँसते भी हैं !'

'हा हः हा हः ।' वह सचमुच हँस पड़ा ।

'उसे इस तरह हँसते देख अंजू भी मुस्करा पड़ी ।

'अब आपको विश्वास हो गया ?'

'हाँ ।'

'तो अब आप खुल कर बातें कर सकती हैं ?'

'फिर भी कुछ डरती अवश्य हूँ ।'

'फिर वही डर वाली बात !' वह झुंझला उठा ।

'आप तो नाराज होने लगे ।'

नाराज होने की तो बात ही है । आप पहेलियाँ बुझाती हैं ।'

'आदमी तो खुद एक पहली है ।'

'तो इसका मतलब है कि मैं एक पहेली हूँ ?'

'इसमें कोई संदेह तो नहीं है । आप तो एक उलझी हुई पहेली हैं ।'

'चलो भई मान लिया। आपकी बात तो माननी ही पड़ेगी ।'

'आप मेरी बात मानेंगे ?'

'आजमा लीजिए ।'

'फिर भी डरती हूँ ।'

'फिर वही डर !'

'हाँ, उस आदमी से तो डरना ही पड़ता है जो अपनी जिन्दगी को अपने ही हाथों खत्म करने पर उतारू हो जाए ।'

'इसका मतलब है कि मेरे दामन पर इतना गहरा दाग है जो कभी धुल ही नहीं सकता ।' वह अंजू के व्यंग्य को

भाँप गया।

'दाग नहीं चन्दन साहब।'

'तो ?'

'एक कहानी, भयंकर कहानी।'

'और परिणाम अति सुन्दर।' कहते हुए चन्दन ने उसके आँखों में झाँकने का प्रयत्न किया।

अंजू चन्दन की निगाहों का अर्थ समझ गई। वैसे भी हर औरत मर्द की निगाहों को भाँप लेने की योग्यता रखती है। अगर औरत में यह योग्यता नहीं होती तो मर्द उसे न जाने कहाँ पहुँचा देता।

'फूल वाला।' दरवाजे पर दस्तक हुई और दोनों का ध्यान बँट गया।

'ले आओ।' चन्दन ने आवाज दी।

फूल वाला मुस्कराता हुआ अन्दर आया लेकिन सहसा उसके पाँव लड़की को देख रुक गया।

'आओ भीमसिंह, रुक क्यों गए ?'

'साहब !' उसकी आवाज गले में फँस गई।

'क्या है ?'

'आज मेरे पास इतने अच्छे फूल नहीं।'

'क्यों ? वह गुलाब, लाल गुलाब तो बड़ा अच्छा है।'

'यह गुलाब, मोतिया, चम्बेली, सभी अच्छे फूल हैं लेकिन शायद मेम साहब को पसंद न आए।'

'जरूर पसंद आयेंगे। दो गुलदस्ते लगाओ।'

'अच्छी बात है।' भीमसिंह मुस्करा पड़ा।'

'यह फूल वाला बड़ा विचित्र आदमी है।'

'हाँ अंजू अपनी जिन्दगी क्या कम विचित्र है।'

'साहब ! यह गुलाब बड़ा प्यारा।' उसने एक फूल चन्दन की ओर बढ़ाया।

चन्दन ने फूल वाले का मतलब समझ लिया। फूल लेकर उसने बड़े प्यार से देखा जैसे वह फूल से ही पूछना चाहता हो कि उसकी असली जगह कौनसी है।

चन्दन ने अंजू की ओर देखा। अंजू उस फूल की ओर देख रही थी। उसकी आँखों में अजीब चमक थी। इस चमक का मतलब ?

चन्दन चकित हो गया। उसके विचारों की दौड़ रुक गई जैसे किसी ने उसे अनजाने में पकड़ लिया हो विचारों का एक बवंडर उठा और उसकी आत्मा पर छा गया।

शाँति और गम्भीरता—क्यों ? वह समझ न सका सामने दो आँखें मौन हो अब एक टक उसी को देखती कुछ कहना चाह रही थीं।

क्या उन आँखों की भाषा वह समझ गया ?

उसने एक उचटती निगाह फूल पर डाली।

फूल अब भी उसके हाथ में थरथरा रहा था।

वह क्या चाहता था ?

वह जो चाहता था उसकी पूर्ति के लिए उसके साहस ने जबाब दे दिया।

७

समय बदलते देर नहीं लगती। जीवन-चालन कुछ अनोखी ही है। पग-पग पर परिवर्तन है। मनुष्य सोचता कुछ है। होता कुछ है। कौन जानता है कि कल के दो अजनबी आज इतने गहरे मित्र हो जाएँगे। जो जीवन का अंत करने गया था उसे इतना सुन्दर खिलौना मिला जिसे खेलने से उसका

अब जी नहीं भरता।

मौत पीछे रह गई। जिन्दगी आगे बढ़ गई। विधाता ने मानव के साथ एक कमजोरी बाँध दी कि वह कभी अकेला नहीं रह सकता। जीवन माला के लिए उसे एक सहारे की आवश्यकता है। बचपन में माँ होती है। फिर प्रेमिका या पत्नी।

'लेकिन अंजू ?

वह तो न उसकी प्रेमिका है और न ही पत्नी।

अगर इन दोनों में से वह कुछ नहीं तो—तो वह उसकी क्या लगती है ?

यह विचार शायद अंजू के मन में उभर रहे थे। वह मौन बैठी थी।

'आज कहीं चलने का इरादा नहीं ?' अंजू ने मौन भंग किया।

'जहाँ कहो चला जाए।' उसने चौंक कर उत्तर दिया जैसे नींद से जागा हो।

'मैं कहूँ ?'

'हाँ, आप ही बतायें।'

'मैं क्या बताऊँ ! आप ही सोचिए, कहाँ चलना है।'

'चलना कहाँ है। यह शिमला है छोटी-सी जगह, यहाँ मालरोड, लक्कड़ बाजार, मोहर बाजार, और इसके सिवा यहाँ है क्या ?'

'बस यही कुछ है।'

'और क्या है ! सारे दिन यहाँ की चहल-पहल देखो। पागलों की तरह माल रोड के दो-चार चक्कर काटो और

फिर थककर किसी होटल में बैठो, चाय या काफी पी लो। यहाँ लोग सैर सपाटे के लिए ही तो आते हैं। उन्हें कोई काम तो होता नहीं।'

'काम ही करना हो तो शिमला आने की जरूरत ही क्या है अनार होटल में बैठ कर बन्द रहना है तो यहाँ आने की जरूरत क्यों है ?'

'तभी तो मैंने कहा था कि आप मुझसे बेहतर जानती हैं।'

'चलो, यूं ही सही, उठो भी यहाँ से। मेरा तो बैठे-बैठे दम घुटने लगता है।'

'मुझे उठने से इन्कार कहाँ है ! चलिए। अगर आप कहें तो कपड़े बदल लूं।'

'भला यह भी पूछने की बात है !'

'आप से पूछे बिना किसी काम को करने का साहस नहीं होता।'

'वह क्यों ?'

'वह इसलिए कि मुझे अब अपने जीवन पर कोई अधिकार नहीं। यह जिन्दगी तो आपने मुझे दी है। आप ही इसके मालिक हैं।'

'बातों में तो आपसे कोई जीत न सके।'

'मैं क्या कोई गलत बात करता हूँ !'

'गलत बात आप को न सूझती तो भला आत्म-हत्या की बात क्यों सोचते ! खैर अब चलिए भी।'

'लो सरकार नाराज मत हो। अभी आया दो मिनट में। 'उसने चुटकी बजाते हुए कुर्सी से उछल कर कहा।

अंजू फटी-फटी आँखों से निहारती रही। वह इतना

अधिक परिर्वतन देखकर चकित थी। चन्दन एक ही रात में जैसे बदल गया उसके चेहरे की उदासी लुप्त हो गई। उसकी आदतों में बचपना और शोखी भर गई। अन्जू को वह इस तरह समझ रहा था कि उसका कोई पुराना साथी मिल गया है।

यह बात सत्य भी थी। वह स्वयं चन्दन को अपना कोई खोजा हुआ साथी समझ रही थी। न जाने क्यों उसे चन्दन से लगाव हो चला था। उसमें उसे अपने मन की झलक दिखाई देने लगी थो उसकी ही बात में एक भोलापन था, सादगी थी। बुराई नाम मात्र भी कहीं झलकी नहीं थी। वह यह बात अवश्य समझ गई थी कि चन्दन भावुक है। जिंदगी की किसी ठोकर का सामना करना उसके बलबूते का काम नहीं जरा सी बात भी उसे परेशान कर सकती है। उसका हृदय फूल की पत्ती की तरह नर्म और नाजुक है।

चन्दन कपड़े बदल रहा था और अन्जू अब भी उसी सोच में डूबी हुई थी। वह अन्जू जिसे पाकर सब कुछ भूल गया था वह इस दुनियाँ को इस धरती को भूल गया लेकिन अन्जू उसे पाकर अपने को नहीं भूली।

वह सर से पाँव तक यह सोचकर सिहर उठी कि कहीं चन्दन उसे धोका नहीं दे रहा है।

वह कुछ परेशान सी हो गई लेकिन अभी वह कर भी क्या सकती थी। वह एक औरत थी। उसके अन्दर दया की भावना कूट-कूट भरी हुई थी। भारतीय नारी में इस भावना का अतिशय तो विशेषता है शायद इस देश की मिट्टी के कण कण में दया भाव भरा पड़ा है।

चन्दन गुसलखाने में गुन-गुना रहा था।

न यह चाँद होगा, न सितारे रहेंगे।

मगर हम हमेशा तुम्हारे रहेंगे।

इधर अन्जू भी अपनी दुनियाँ में खोई हुई थी।

'शायद मुझे देर हो गई। 'चन्दन ने अपना कालर ठीक करते हुए कहा।

'कोई बात नहीं।'

'आप भी निराली हैं' वह मुस्करा पड़ा।

'हम दोनों ही निराले हैं। चलो उठो अब यहाँ से दोनों चल पड़े।

माल रोड पर आज काफी चहल-पहल की। रात भर वर्षा होने के बाद आकाश आज कुछ साफ था। कहीं-कहीं हल्के बादलों की टुकड़ियाँ अब भी तैर रही थीं। उनके नृत्य ने मौसम में और निखार पैदा कर दिया था। ठण्डी हवा के झोंके सोने में सुगन्ध भरते जा रहे थे।

स्कैंडल प्वाइंट से होते हुए दोनों लाला लाजपतराय की मूर्ति के पास थोड़ी देर के लिए रुके। यहाँ चहल-पहल अधिक थी। चारों ओर जनसमूह उमड़ा पड़ रहा था। शिमला में सबसे अधिक रश यहीं होता है।

यहाँ तो जवानियाँ ही जवानियाँ बिखरी पड़ी थीं।

सभी हसीन, सभी जवान।

सुन्दर जोड़े, सुन्दर लिबास चारों ओर खुशी नृत्य कर रही थी। ऐसा लगता था कि जैसे गम नाम की कोई भावना इस धरती पर नहीं है।

सुहाना मौसम-सुहाने लोग—विधाता ने कितनी सुन्दर दुनिया बनाई है। उसने दिल ही दिल में यह गुनगुनाकर अन्जू का हाथ थाम लिया। कोमल बातें। उसे ऐसा लगा जैसे वायलन का तार छू लिया है और उसमें से कोई मधुर राग फूट पड़ा हो।

उनके सामने एक जवान लड़का और लड़की एक दूसरे के हाथ थामे खड़े थे। लड़की के बाल कटे हुए थे जो हवा के तेज झोंखे से उड़-उड़ कर उसके लिलार पर बिखर जाते थे। उसने स्कर्ट पहन रखा था घुटनों तक उसकी टाँगे नंगी थी। उन पर उगे हुए हल्के-हल्के भूरे स्याह बाल भी साफ दिखाई दे रहे थे।

हवा का एक तेज झोंका आया और उस लड़की का स्कर्ट उड़ कर ऊँचा उठ गया। उसकी गदराई जाँघ नंगी हो गई। एक छोटा सा अंडर वीयर दिखाई दे गया।

एक जवान लड़की को इस तरह नंगी देखकर उसकी भावनाओं में एक तूफान उठ खड़ा हुआ। एक अजीब सी हलचल उठी हृदय में जैसे किसी नदी में बाढ़ आ गई हो। उसने जोश में आकर अंजू का हाथ दबा दिया।

सामने वाली लड़की अपना स्कर्ट ठीक करने लगी। लाज के मारे उसका चेहरा सुर्ख हो गया।

'हमारे देश में स्कर्ट के रिवाज को तिलांजलि दे देनी

चाहिए।'

'हाँ, और मेरा भी यही ख्याल है।'

'यह शिमला भी बड़ी रंगीन जगह है।'

'इस मौसम में तो यह रंगीनी और तेज हो जाती है।'

'यहाँ आकर ऐसा लगता है जैसे दुनिया में सुख ही सुख है।'

'ऊपर से हर चीज ऐसी लगती है किसी के दिल के अन्दर आँककर कौन देखता कि अन्दर और बाहर में अन्तर कितना है।'

'कहीं आपका मतलब मुझसे तो नहीं है।'

'आप अकेले क्यों, इतने लोग हैं यहाँ। ऊपर से तो सभी खुश नजर आते हैं लेकिन अन्दर जाने क्या होगा। सब मस्त हैं। सभी हंसते-खेलते दिखाई दे रहे हैं लेकिन ऐसा भी होता है कि इन्सान हँसी-खुशी का मरहम अपने घावों पर रख कर अपना समय काट देता है।

'हाँ, अंजू, तुम ठीक कहती हो।'

'अब काफी का दौर चले। क्या राय है?' अंजू ने वार्ता का विषय बदला।

'हाँ हाँ! कब तक खड़े रहेंगे।'

वह दोनों काफी हाउस चले गए।

काफी हाउस में काफी भीड़ थी। लोग अपनी-अपनी बातों में व्यस्त थे। काफी के प्यालों के साथ दुनिया भर की बातें छाँटी जा रही थी। कोने वाली दो सीटों को देखकर दोनों वहीं बैठ गए।

साथ वाली मेज पर एक जोड़ा अपने आने वाली जिंदगी

के बारे में बात कर रहा था।

'राकेश, कभी-कभी तो मुझे डर लगता है।'

'डर काहे का ?'

'यही दुनिया का, समाज का।'

'अरे छोड़ो इस दुनिया को, छोड़ो इस समाज को। जब हम तुम राजी हैं तो दुनिया क्या बिगाड़ सकती है।'

'केवल दोनों के प्रेम से क्या बनेगा जब तक ब्याह न हो जाए।'

'ब्याह की जल्दी क्या है कामिनी !'

'इस डर-डर कर चलने के लिए ब्याह जरूरी है।'

'पगली' इस डर-डर कर चलने का ही नाम तो सच्ची मुहब्बत है।'

'राकेश, तुम्हें पता नहीं, मैं कितनी मजबूरी और परेशानी में हूँ।

'मेरे होते हुए मजबूरी और परेशानी ! कैसी बच्चों वाली बातें करती हो तुम !'

चन्दन और अंजू दोनों की बातें सुनकर मुस्करा पड़े।

'यह शिमला है।' अंजू ने अपनी हंसी को होंठों में दबाते हुए कहा।

'यहाँ लोग प्रेम जताने आते हैं।'

'कुछ लोग तो इसका उलट ही चलते हैं।'

'हाँ, उनमें से एक मैं हूँ।'

'आप जैसे और भी न जाने कितने होंगे।'

'हो सकता है ! ऐसी बातें सुनकर किसी न किसी के दिल पर अकेलेपन का भूत सवार हो जाता है और यही

उसे मृत्यु के अंक में पहुँचा देता है।'

'ठीक है। इन्सान के लिए तन्हाई सबसे खतरनाक है। इस एकांतवास में वह उल्टी सीधी बातें सोचता है। मुझे देखो कल तक इसी एकांतवास ने परेशान कर रखा था।

'माफ करना अंजू! आपकी और मेरी तन्हाई में अन्तर है।'

'वह क्या थी?'

'मेरी तन्हाई मौत के कारण हंसने लगी थी और आपकी तन्हाई ने मौत को जिन्दगी में बदल दिया है।'

'हाँ, कुछ ठीक है ही यह बात। मैं शिमला की रंगीनियों से तंग आकर वीराने में निकल गई थी कि शायद उन पहाड़ों में घूमने से दिल को कुछ चैन मिले।'

'अब तो चैन मिल ही गया होगा।'

'हाँ, न मिला होता तो इस होटल की बजाए कहीं और होती।'

चन्दन इस बात पर मुस्करा पड़ा।

अंजू भी अपनी हंसी न रोक सकी।

इसके बाद दोनों बड़ी देर तक विभिन्न विषयों पर बातें करते रहे। आधुनिक-काल की समस्याओं पर चर्चा छिड़ी। शिमला की रंगीनियों पर बहस हुई और समय कटता रहा।

शाम को दोनों ने इकट्ठे ही नीलम में खाना खाया और उसके बाद अंजू अपने होटल में चली गई।

८

●●●

उसका ख्याल था कि अंजू भी उन्हीं लड़कियों में से है जो अपने माँ-बाप के साथ शिमला आती हैं और फिर अकेले घूमती हैं। यहीं पर वह किसी न किसी सामान्य विचार वाले को अपना साथी बना लेती हैं। आजकल के माँ-बाप भी यही सोचते हैं कि शिमला आए हैं तो इस रंगीन मौसम

में जवान लड़की को साथ में रखकर क्यों रंग में भंग डालें अत: उसे अकेले घूमने की छूट दे देते हैं।

सच्ची बात तो यह है शिमला का मौसम इन्सान को ऐसी बात सोचने के लिए मजबूर भी कर देता है यहाँ बूढ़े जवान हो जाते हैं।

प्यार और मुहब्बत शिमला की धरती के कण-कण में भरा हुआ है। बाहर से आने वाले इसी रंग में रंगने के लिए आया करते हैं।

लेकिन अंजू की बात कुछ और थी। अंजू के कमरे में काई और नहीं था कमरे में पड़े हुए समान से उसने यही अनुमान लगाया कि वह यहाँ अकेले ही ठहरी हुई है।

'पसन्द आया मेरा कमरा ?' अंजू ने उसे मौन देखकर पूछा।

'जब इस कमरे की मालकिन पसन्द है तो कमरा भी पसन्द आयेगा ही। एक बात पूछ अंजू ?'

'पूछो।'

'क्या यहाँ अकेली हो ?'

'हा हा हा मैं आपका मतलब समझ गई।'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यह कि आप पूछेंगे, क्या मैं यहाँ अकेली ही आई हूँ ? यहाँ तो बहुत सारे लोग अकेले आते हैं।

'और यहाँ आकर उन्हें साथी मिल जाता है। उसने बात पूरी की।'

'कुछ लोग अपने साथी खो भी देते हैं।

'हाँ कुछ पा जाते हैं कुछ खो देते हैं। उसने कुछ बुझी

आवाज में कहा।'

'पाने और खोने का मतलब ?

'मतलब तो आप जानती हैं।

'यह तो तभी समझूंगी जब आप अपने बारे में कुछ बताएँगे।

'यानी आप मेरे बारे में जानना चाहती हैं ?

'अवश्य अगर आपको एतराज न हो।'

'भला मुझे क्या एतराज है। मेरे पास है क्या जो आप जानना चाहती हैं। मेरी जिन्दगी तो आइने की तरह साफ है।'

'साफ होती तो इतना उलझती क्यों ?

'यानी आप मेरे बारे में उल्झी हुई हैं ?

'आप के बारे में नहीं बल्कि उस भेद के बारे में जिसने आपको आत्महत्या के लिए उकसा दिया और इतनी खूबसूरत दुनिया छोड़कर आप जा रहे थे। खिला हुआ फूल मसला जाए तो चोट अवश्य लगती है।आप जैसा स्वस्थ,पढ़ा लिखा नौजवान जिसने अभी दुनिया में देखा ही कुछ नहीं अगर वह मौत को गले लगाने जाय तोइसके पीछे अवश्य भेद होगा।

'अन्जू !

'हूँ।

'अगर सच पूछो तो कोई भेद नहीं। केवल मेरी विचार धारा का प्रवाह था। मुझे यह हंसती खेलती दुनिया अच्छी नहीं लगती। जिन्दगी की सुलगती तन्हाइयाँ और एकांतवास जब कभी मैं इस दुनिया के बारे में सोचता तो कुछ समझ नहीं पाता। अगर इतनी बड़ी दुनिया को संक्षेप किया जाय तो जिन्दगी और मौत बस इतने में ही यह विशाल संसार

समा जाता है।

'यहाँ आप भूल करते हैं चन्दन साहब ! अगर आप यही बात यानी जिन्दगी और मौत को भूल जाएँ तो इस दुनिया में इतना कुछ है कि आप उसे संभाल नहीं सकेंगे। और अगर मैं इसकी प्रशंसा करूँ तो केवल इतना ही कहूँगी कि यहाँ केवल जिन्दगी है। मौत नाम की तो कोई चीज ही नहीं।'

'यह कैसे हो सकता है ?'

'यही तो एक भेद है जिसे हर एक नहीं समझ सकता। अगर इस भेद को समझ लिया जाए तो जीवन पथ पर आदमी कभी नहीं भटकता। खैर इसके बारे में बाद में बातें करेंगे। पहले यह बताइए कि आप को परेशानी क्या थी।

'मुझे क्या परेशानी थी यह तो अब मुझे भी पता नहीं।

'तो आप मुझसे कुछ छुपा रहे हैं।

'भला मैं आपसे क्या छुपा सकता हूँ !'

'मुझे तो ऐसा ही लगता है।'

'यह आपकी भूल है। मेरे बारे में आपका अनुमान गलत है।

अगर आप नहीं बताएँगे तो मुझे अपने गलत अनुमान को ही सही समझना पड़ेगा।'

'क्या अनुमान है आपका ?'

'यही कि आपने कोई ठोकर अवश्य खाई है।'

'कैसी ठोकर !' वह बिल्कुल अनाड़ी बन गया।

'यही कोई दिली ठोकर।'

'हूँ ! तो अब समझा !' उसने मुस्कराते हुए कहा जैसे

अपने पागलपन पर वह खुद ही मुस्करा रहा हो।

'समझ गये ना!' अंजू भी मुस्करा पड़ी जैसे उसने बाजी जीत ली हो।

'हाँ अंजू! मैं भी कितना पागल हूँ जो जमाने के छल कपट और ऊँच नीच को समझ नहीं सका आप शायद यह समझ रही हैं कि यह मैंने किसी लड़की से प्यार किया था और असफल होकर आत्महत्या करने चला आया।'

'प्रेम करना कोई पाप तो नहीं?'

'पाप हो या न हो लेकिन मुझसे तो कभी इससे पाला पड़ा नहीं।

'तो फिर प्राण त्यागने क्यों गए थे?'

'मैंने कहा न कि मैं पागल था केवल मेरा पागलपन था जिसे अब याद करता हूँ तो हंसी आती है।

'यह बातें अपनी कमजोरी पर पर्दा डाल सकती हैं लेकिन उसे खत्म तो नहीं कर सकती।'

'मैं इतनी गहरी बातों को तो समझता नहीं। सच बात तो यही है कि इस जमाने ने मुझ पर सितम ढाए कि मैं उसकी ताब न ला सका। वह घाव दिए जिसकी पीड़ा सहन न हो सकी। मैं अपने भावनाओं की वेदना को सहन न कर सका।

उसने बड़ी कोशिश की कि वह अपने को रोक ले लेकिन रोक न सका। आँखों में आँसू छलछला पड़े।

'अरे आपकी आँखों में तो आँसू भर गये।

'प्यार भरे शब्दों को सुनकर वह फूट पड़ा।

जीवन में पहली बार उसने किसी सुन्दरी को इतने समीप पाया था। पहली बार किसी के सहानभूति के शब्द उसने

सुने थे। उसे ऐसा लग रहा था कि उसकी आत्मा में भरा सारा दुख-दंद आँखों के रास्ते बह जाएगा।

'चन्दन……!

'अंजू !'

'यह आप रोने क्यों लगे। कौन-सा गम आपको अन्दर ही अन्दर इतना सुलगने पर विवश कर रहा है ! कौन सी ऐसी ठोकर लगी है जिसे खाकर आप उठ नहीं सके।'

'मैं क्या बताऊँ अंजू !'

'मुझसे तुम्हारे यह आँसू नहीं देखे जाते चन्दन मेरा दिल बैठा जा रहा है अगर तुम मर्द होकर परिस्थियों का सामना नहीं कर सकते तो मेरी जैसी लड़की का क्या हाल होगा।

अंजू ने अपने कोमल हाथों से उसके आँसू पोछे।

'अन्जू !'

'हूँ।'

'एक बात पूछूं।'

दस पूछो।

'यह दुनिया किसी को जीने क्यों नहीं देती। उसने अंजू का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा।

'दुनिया की बात छोड़ो इन्सान अपने जीने का मार्ग स्वयं बनाता है।

'जो इन्सान मार्ग ढूंढने में थक जाए ?

'थोड़ी देर के लिए सुस्ता ले।'

सुस्ताने के बाद भी अगर मार्ग मिले ही नहीं।

'आशा ही उसका सबसे बड़ा सहारा है।'

'जिसकी सारी आशाएँ ही टूट जाएँ ?'

'आशाएँ नहीं टूटती, यह तो इन्सान की भूल है।

'भूल नहीं अन्जू सच्चाई है। भूल का परदा डालकर वह जीना चाहता है। अब तुम ही बताओ कि जिसके जीने के सारे रास्ते ही बन्द हो जाएँ। जिसके अपने पराये हो जाएँ जिससे दुनिया की हर खुशी रूठ जाए, जिसे समाज में केवल इसलिए घृणा की दृष्टि से देखा जाय कि उसके कपड़े अच्छे नहीं। वह समाज में कलर्क बनने के बजाए बड़ा आदमी बनने के सपने देखता रहा। वैज्ञानिक बनने के सपने देखता रहा। केवल यह समझता रहा कि वह देश की भलाई के लिए आया है। वह साईंस का ग्रेजूएट प्राँत भर में प्रथम रहा लेकिन···कालेज के दरवाजे से बाहर आते ही सारे सपने टूट गए। सारे गीत लहूलुहान हो गये। सारी अभिलाषाएँ घायल हो गईं। इस समाज में उसे क्या मिल सकता था—दो ढाई सौ की कलर्की किसी सरकारी या प्रायवेट दफ्तर में वह भी बड़ी मेहनत और सिफारिश के बाद।

'इन्सान को अपने ध्यय पर पहुँचने के लिए वलि देनी पड़ती है चन्दन !

'वह तो मैं भी जानता हूँ। लेकिन यह तो नहीं हो सकता कि भूखा मरता शेर घास खाना शुरू कर दे। अगर यही हो तो शेर में और साधारण जानवर में अन्तर क्या रह जाएगा।

'लेकिन चन्दन ! यह दुनिया बड़ी अजीब है। यहाँ सब कुछ होता है। सब कुछ सहना पड़ता है बहुत सारी बातें तो ऐसी सहनी पड़ती हैं जिसे दिल भी सहने पर तैयार नहीं होता।

'यह बातें सुन-सुन मैं तंग आ गया था। मुझसे यह सब कुछ सहन नहीं हो सका और हो सकता है अंजू ! मैं जानता हूँ। तुमने मुझे एक ऐसा ही नौजवान समझा है जो प्रेम में असफल होकर आत्महत्या करने गया था और जो भी मेरी आत्महत्या का समाचार पढ़ता यही समझता।'

कुछ ठहर कर उसने आगे कहा—'इसमें मैं दुनिया को या किसी और को क्यों दोषी ठहराऊँ। हमारे समाज का ढाँचा ही ऐसा है। यहाँ बहुत सारे लोग इसीलिए आत्म-हत्या करते हैं या फिर बेकारी से तंग आकर प्राण त्याग देते हैं। मगर मैंने अपने जीवन से औरत को सदा दूर रखा है क्यों मैं यह समझता था कि औरत उन्नति के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा है।

'तो औरत आपके ख्याल में इतनी बुरी चीज है ?'

'बुरी नहीं अंजू ! मेरा मतलब इन्सान की उन्नति से है, उसकी प्रगति से है। मैं कुछ और बनना चाहता था। इश्क के चक्कर में फँस कर अपना भविष्य बरबाद नहीं करना चाहता था। मगर औरत के बारे में इतनी एततियान न बरतता तो प्राँत भर में प्रथम नहीं आता।'

'यह बात तो ठीक है। कालेज में बहुत से लोग जाते इसीलिए हैं कि कालेज लाइफ में इश्क अवश्य करना है। विशेषकर देहली के जवानों को तो यह बीमारी लग गई है। वहाँ तो यूनिवर्सिटी एरिया में ऐसे दृश्य दर्शनीय होते हैं।

'हाँ अंजू, मैं इस बीमारी से आज तक दूर रहा।'

'और इसी बीमारी ने आपको मरने से रोक दिया मेरा मतलब है उसी औरत ने जिसे आप प्रगति में रोड़ा समझते

रहे।'

'भई, अगर गलती से मेरे मुंह से कोई गलत शब्द निकल गया तो इसके लिए मैं माफी चाहूँगा। मेरा ध्यय तो कुछ और था।'

'वह तो मैं अब समझ गई वरना पहले तो मैंने आपको प्रेम का रोगी ही समझा था। फिर भी आपको यह रास्ता नहीं चुनना चाहिए था।'

'मैंने बताया न कि मेरे सामने और कोई रास्ता नहीं था। मौत का रास्ता ही खुला था जो मुझे सहरा दे सकती थी। इतनी बड़ी दुनिया में मुझे कहीं सहारा नहीं मिला।'

'आपने मरने के लिए भी अच्छी जगह ढूंढी थी ?'

'हाँ। मेरी इच्छा थी कि मरने से कुछ दिन पहले अच्छी जगह दिन काटूंगा और जब पैसे खत्म हो जाएँगे तब आत्म त्याग करूंगा।

'इसका मतलब है, अब आपकी जेब में पैसे नहीं हैं।'

'हाँ, अंजू ! अब तुमसे क्या छुपाऊँ।'

'अच्छा यह लीजिए।' अंजू ने अपनी पर्स से दस-दस के कुछ नोट निकाल कर उसकी ओर बढ़ाए।

'नहीं-नहीं, अंजू देवी ! मेरा दिल नहीं मानता।'

'यहाँ सवाल दिल का नहीं, जरूरत का है।'

'मगर मैं किसी पर बोझ नहीं बनना चाहता।

'यह तो ठीक है लेकिन यह बताएँ, अगर आप यह पैसे मुझ से नहीं लेंगे तो किससे लेंगे ? अगर घर माँ-बाप को भी लिखें तब भी पैसे आने में समय लगेगा।

'यह बात तो ठीक है लेकिन···' उसकी आवाज गले

में अटक गई।

'लेकिन-वेकिन छोड़िए।' अंजू ने जबरदस्ती उसके हाथ में पैसे देते हुए कहा।

कुछ देर हाँ नहीं होती रही। अंत में वह अंजू के आगे हार मान गया।

आकाश पर बादल छा गए थे। बिजली कड़क रही थी, थोड़ी ही देर में वर्षा शुरू हो गई।

६

पहाड़ी बारिश शुरू हो जाए तो रुकने का नाम नहीं लेती। वह कई बार जाने के लिए उठा लेकिन ऐसी वर्षा में जाने से अंजू ने रोक दिया।

वर्षा तेज होती गई।

दोनों होटल के कमरे में बैठे थे। दो जवान दिल जो

आपस में घुल मिल गए थे।

वर्षा के साथ बिजली कड़कती और जब भी बिजली कड़कती दोनों के दिल धड़क उठते।

'चन्दन, आज तुम यहीं सो जाओ।'

'नहीं अंजू, यह नहीं हो सकता।'

'मगर ऐसी बारिश में जाओगे कैसे ?'

'अभी थोड़ी देर में रुक जाएगी।'

'थोड़ी देर देखते-देखते तो ग्यारह बज गए। ऐसी रात में आधी रात को जाना कौनसी अकलमंदी है।'

'मजबूरी—कैसी ?'

'जाने की।'

'क्या यहाँ सोने के लिए जगह नहीं ?'

'है तो सही लेकिन…'

'लेकिन क्या ?'

'मुझे डर लगता है।'

'किस बात से ?'

'यूं ही।' वह दिल की बात अंज से नहीं कह सका। वह जानता था कि अंजू भी जवान है और वह भी। दोनों का एक कमरे में सोना ठीक नहीं। इसीलिए ऐसी रात में भी वह अपने होटल में जाना चाहता था।

'चन्दन ! अगर तुम अपने लिए नहीं रुक सकते तो मेरे लिए रुक जाओ। मुझे तो बिजली के इस गरजने कड़क बहुत डर लगता है।

'मैं मजबूर हूँ अंजू।'

'रुकने पर ना।'

‘कुछ भी समझो।’

‘मुझे विश्वास था कि तुम मेरी बात नहीं टालोगे।’

‘टाल कैसे सकता हूँ ?’

‘अच्छा, मैं बैरे को बुलाकर दूसरा बिस्तर लगवाती हूँ।, अंजू ने घन्टी दबाई और बैरा अन्दर आ पहुँचा।

‘यहाँ एक बिस्तर और लगाओ।’

‘अच्छी बात है मैडम।’

बैरा बड़ी गहरी नजरों से अंजू को देखता हुआ चला गया। चन्दन इन नजरों का मतलब अच्छी तरह समझता था और इसी बात से वह घबराता भी था।

थोड़ी ही देर में बैरे ने बिस्तर लगा दिया।

वर्षा अभी तक रुकी नहीं थी।

अंजू ने सोने का लिबास पहन लिया था लेकिन चन्दन के पास कोई कपड़े नहीं थे इसलिए उसे बदलने की जरूरत नहीं पड़ी।

अब सोने का उपक्रम करना चाहिए।’

‘हाँ’ इच्छा तो अब मेरी भी यही है।

और दोनों अपने बिस्तरों पर पसर गए।

कमरे की बड़ी बत्ती बुझा दी गई थी। अब केवल छोटी बत्ती जल रही थी। अंजू उससे थोड़ी ही दूरी पर लेटी हुई थी। वह तो शीघ्र ही सो गई लेकिन चन्दन से नींद शायद आजकी रात रुठी हुई थी। कई बार उसने जबरदस्ती आँखें मूँदकर सोने की कोशिश की लेकिन सब बेकार। नींद उसे न आई।

धनघोर वर्षा आरम्भ हो गई थी।

अंजू सीधी लेटी पड़ी थी। उसके काले बाल खुलकर कुछ तकिए पर और कुछ कंधों पर बिखर गए थे। उसका सुन्दर मुखड़ा नींद में भी कितना हसीन और खूबसूरत दिखाई दे रहा था। मस्त आँखों को पल्कों ने अपनी छाया में छुपा लिया था। उसके मधुर होंठ बिल्कुल अचल थे। वह इस समय संगमरमर की एक मूर्ति नजर आ रही थी।

बड़ी देर तक वह उसे देखता रहा। किसी पुजारी की तरह जो किसी मूर्ति के सामने ध्यान मग्न हो बैठा हो।

वह उसी तरह शांत लेटी हुई थी।

अंजू !

वह देवी जिसने उससे नया दान दिया था।

अंजू ने उसे क्यों बचाया ? यह प्रश्न उसकी आँखों के सामने घूम गया।

उसका अंजू से नाता क्या है ?

अंजू उसके जीवन में पहली लड़की है जिससे वह इतना प्रभावित हुआ है। उसकी इच्छा होती थी कि वह उससे हर समय बातें ही करती रहे।

उसकी अशांत आत्मा को अन्जू ने शाँति प्रदान की थी।

वह और गहरी नजरों से उस प्रेममूर्ति को देखने लगा।

कितना चाहने लगा था वह उसे। केवल दो ही दिन में वह उसके इतना करीब आ गया था जैसे वर्षों से उसे जानता हो।

अंजू भी जवान है और वह भी।

कहते हैं जवानी एक आग होती है और वहाँ दो जवानियाँ एक ही कमरे में लेटी हुई थीं।

क्या अंजू को उससे डर नहीं लगता ? किस तरह उसने एक नौजवान लड़के को अपने कमरे में सुला लिया ?

कहीं अन्जू को भी उससे प्यार तो नहीं हो गया ?

प्यार !

वह बड़बड़ाया और उठकर बैठ गया। उसे लगा कि अन्जू बहुत दूर है उसके समीप जाना चाहिए। अन्जू के बालों को सहलाने की इच्छा हुई। उसके कोमल हाथों से प्यार करने चाहा।

कई भावनाएँ सहसा जवान हो गईं।

इस बेचैनी और विकलता ने उसे बिस्तर से उठने के लिए विवश कर दिया।

उसे पता नहीं था कि वह क्या करने जा रहा है। दिलो-दिमाग पर भावुकता बुरी तरह छा गई। वह काबू से बाहर होता जा रहा था। उसके सोचने-समझने की शक्ति लुप्त होती जा रही थी। वह इस दुनिया से बहुत दूर किसी और दुनिया में पहुँच गया जहाँ अंजू और उसके सिवा और कोई नहीं था।

क्या यही प्रेम की दुनिया थी ?

क्या इसी को प्यार कहते हैं। प्रीति कहते हैं। प्रेम में क्या यही दशा होती है। विफलता बढ़ती है और दिल की धड़कनें जवान हो जाती हैं।

आज कुछ ऐसा समय है कि अन्जू के साथ सब कुछ किया जा सकता है। आज और अभी। अगर यह समय बीत गए यह घड़ियाँ गुजर जाएं तो बीता हुआ समय फिर हाथ नहीं आता।

आज और केवल आज ?

कल—कल किसने देखा है ?

हो सकता है सुबह होते ही अन्जू कहीं चली जाए या उसका कोई रिश्तेदार, मां बाप ही सुबह आ जाए।

फिर यह सारा खेल ही खत्म हो जाएगा।

फिर जीवनभर अवसर खोने के लिए हाथ मलना पड़ेगा।

वह अपने पलंग से उठ गया। धड़कते हुए दिल के साथ अंजू के पलंग के पास आ पहुँचा।

अंजू उसी तरह लेटी हुई थी प्यार की मूर्ति जिसके अंग-अंग में जवानी का जोश मीठी नींद के मजे ले रही थी।

अब वह क्या करे ! किस तरह अंजू को उठाए !

हो सकता है अन्जू उठते ही उसे गालियाँ देना शुरू कर दे। इस तरह पलंग के पास खड़े देखकर उसे क्रोध आ जाये।

वह भी तो एक जवान लड़की है।

चन्दन ! तू पागल है जो ऐसी बातें सोच रहा है। दुनिया बहुत आगे जा चुकी है।

अंजू अब तेरी है—केवल तेरी। तेरे सिवा किसी और की नहीं हो सकती। वह तुझसे कभी नाराज नहीं होगी। उसे भी किसी जीवन साथी की जरूरत है। उसे तुमसे कितनी सहानुभूति है ! वह कितने प्यार से बातें करती है।

तू बिल्कुल चुगद है जो उल्टी बातें सोच रहा रहा है।

अंजू ने तुझे यहाँ सुलाकर खुद ही मौका दिया है।

तुम्हें पता नहीं औरत बहुत सारी बातें अपनी जबान से नहीं कहती बल्कि संकेतों से समझाती है। तुम्हें यहाँ अपने

कमरे में सुलाने का ध्यय क्या था ?

विचारों का प्रवाह चलता रहा।

सहसा उसकी निगाह अन्जू के सीने पर पड़ी जो साँस के साथ ऊपर नीचे हो रहा था।

उसकी विह्वलता और बढ़ गई। भावनाओं में एक तूफान उठा। उसके हाथ बेकाबू होने लगे। रोम-रोम से चिन्गारी निकलने लगी।

जवानी की इस आग को केवल अन्जू ही मिटा सकती थी।

अन्जू उसके सामने चित थी।

उसकी मस्त जवानी उसे पुकार रही थी।

उसकी खुली जुल्फें चिल्ला-चिल्ला कर पुकार रही थीं कि चंदन अब तुम होश में नहीं रह सकते।

उसके रस भरे होंठ कह रहे थे कि अपनी जन्म-जन्म की प्यास बुझा लो। उसका उभरा हुआ सीना उसे बेकाबू कर रहा था।

उसके अन्तःकरण में एक भयानक आग जलने लगी जिसने शोलों का रूप धारण कर लिया।

वह दूरी मिटने लगी।

लहरों ने किनारों को तोड़ दिया।

अब वह और अधिक खड़ा नहीं रह सकता था।

और अधिक वह इस आग में जल नहीं सकता था।

अगर उसने अन्जू को अपने सीने से लगा न लिया तो वह खुद अपनी आग में जलकर राख हो जाएगा।

अंजू दीया है और वह पतंग—पतंग को दीए पर जल

मरना ही चाहिए।

भावुकता का एक और रेला आया और तूफान और तेज हो गया।

उसने अंजू को अपनी बाँहों में भर लिया। अपने प्यासे होंठ अंजू के अधरों पर धँसा दिए।

लेकिन उसे तुरन्त ऐसा लगा जैसे उसे बिजली का एक करंट लगा हो और उस करंट के कारण वह पलंग पर से नीचे फर्श पर आ रहा।

यह सब इतनी तेजी से हुआ कि वह कुछ सोच ही न पाया।

सर में काफी चोट लगी थी लेकिन वह अपनी चोट भूल अंजू की ओर देख रहा था।

अन्जू बिफरी शेरनी की तरह खड़ी थी। उसकी मस्त आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं।

'यह तुमने क्यों सोचा ?'

भावुकता वश उसकी आवाज भर आई और वह रोने लगी। उसकी लाल-लाल आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे।

वह कुछ बोलना चाहता था लेकिन हजार कोशिशों पर भी वह कुछ बोल नहीं सका।

'तुमने मेरी भलाई का यह बदला इस रूप में देना चाहा तुम तो पशु हो।'

'मुझे क्षमा कर दो अंजू, क्षमा कर दो।'

'मैं क्षमा क्या करूँ! मेरा दिमाग फट रहा है। मेरा विश्वास आज मनुष्यता से उठ गया।'

'मैं अपराधी हूँ अंजू, मुजरिम हूँ। पापी हूँ, पागल हूँ।

मैं कमीना हूँ। इन्सान नहीं शैतान हूँ। मैंने पाप किया है अंजू ! मेरे हाथ तोड़ दो जिन्होंने मनुष्यता के माथे पर कलंक का टीका लगाया है। मैं इस घर में रहने योग्य नहीं, मुझे मर जाना चाहिए।'

वह बच्चों की तरह बिलखने लगा।

'ओह, तुम्हारे सर से तो खून निकल रहा है। देखूँ, ज्यादा चोट आई है क्या।' यह कहते हुए वह चन्दन को उठाने के लिए झुकी।

'नहीं अंजू नहीं, मेरे पास न आना। मैं इन्सान नहीं शैतान हूँ। मुझसे दूर रहो। मैं तुम्हें डस रहा था मुझे मरने दो। निकल जाने दो रक्त मेरे शरीर से। यह सब गंदा खून है। इसी खून ने मुझे शैतान बनाया था।'

'नहीं, नहीं मैं तुम्हारा रक्त नहीं देख सकती। तुम कुछ भी बन जाओ लेकिन मैं-मैं तो औरत ही रहूँगी।

तुम औरत नहीं अंजू, कोई देवी हो। मुझे क्षमा कर दो। मुझसे भूल हो गई।' यह कहते हुए वह अंजू के पाँव पर गिर पड़ा।

'उठो चन्दन, यह तुम्हारी जगह नहीं। जो हो गया उसे भूल जाओ और जो होने वाला है उसके बारे में सोचो।

'तो क्या तुमने मुझे क्षमा कर दिया ?'

'मैं क्षमा करने वाली कौन होती हूँ। क्षमा करने वाला केवल भगवान है। यह काम उसने अपने हाथ ले रखा है।'

अंजू ने कपड़ा लेकर उसका घाव साफ किया।

'हे राम, कितना बड़ा जख्म है।'

'मेरे पाप के सामने तो यह जख्म बहुत छोटा है ।'

'चुप रहो ।'

'अंजू क्षमा कर दो, एक बार क्षमा कर दो । मुझे पता नहीं कि यह सब कुछ कैसे हो गया । यह मेरा इरादा…

'इरादा कुछ भी हो चन्दन, जब तक मुझे अपने आप पर विश्वास है दुनिया का कोई भी इरादा सफल नहीं हो सकता । इसमें मैं तुम्हें क्यों दोषी ठहराऊँ । यह दुनिया ही ऐसी है । जहाँ लड़का लड़की इकट्ठे हुए और लड़की ने जरा सी हमदर्दी दिखाई तो बस यही समझा गया कि प्रेम हो गया, प्यार हो गया ।

कुछ रुक कर फिर वह कहने लगी ।

क्या प्रेम केवल विलासता को पूरा करने का ही नाम है? असफल आकाँक्षाओं की पूर्ति का नाम ही प्यार है ? क्या इसके अलावा आदमी और औरत का कोई रिश्ता नहीं हो सकता ?'

'क्यों नहीं हो सकता ! अगर इस समाज में तुम्हारी जैसी लड़कियाँ पैदा हो जाएं तो अवश्य सब कुछ बदल जाएगा, सब कुछ ।'

'उठो कुर्सी पर बैठो । पट्टी बाँध दूँ ।'

'अंजू ! तुम क्यों पापी के ऊपर एहसान पर एहसान किए जा रही हो ।'

'यह एहसान नहीं नारी धर्म है ।'

मेरे जैसे पापी के साथ तुम नारी धर्म की बातें कर रही हो जो मनुष्यता के माथे पर कलंक है ।'

'गलती किससे नहीं होती चन्दन । अगर गलती का

सुधार कर लिया जाए तो गलती गलती नहीं रह जाती वह एक शिक्षा बन जाती है।'

'मैं सोचता हूँ अंजू कि जो काम मैंने अपनी जिन्दगी में भूल कर भी नहीं किया था। वह आज कैसे कर बैठा। औरत से तो मुझे शुरू से ही नफरत थी। चिढ़ थी। मैंने कभी प्यार के बारे सोचा ही नहीं तो फिर यह सब कुछ।'…

'यह सब कुछ मेरी हमदर्दी का जवाब है। मुहब्बत और प्यार कोई गुनाह नहीं लेकिन…। अंजू आगे कुछ बोल नहीं सकी।

'लेकिन क्या अंजू ? तुम किस सोच में पड़ गई ? तुम्हारी आँखें भरी-भरी दिखाई दे रही हैं। ऐसा लगता है कि तुम्हारे अन्दर भी कोई गम समा रहा है जिसे तुम अन्दर ही अन्दर पीए जा रही हो।'

'दुनिया में ऐसा कौन मनुष्य है जिसके अन्दर गम न हो।' अंजू की आवाज काँप रही थी।

'लेकिन अंजू मैं और सब कुछ सहन कर सकता हूँ लेकिन तुम्हें उदास नहीं देख सकता। मैं लज्जित हूँ अपनी भूल पर, मुझे क्षमा कर दो अंजू !'

'नहीं चन्दन ऐसी बात मत सोचो। मैं जानती हूँ तुमने कोई पाप नहीं किया। तुमने जो सोचा वह ठीक ही था। हर लड़का ऐसी ही बात सोचता है। तुम्हें दोषी मैं क्यों ठहराऊँ जब जमाना ही ऐसा है।'

'तो तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों हैं ?'

'यह कहानी फिर कभी बताऊंगी अब सो जाओ।'

१०

समय का धार तेजी से बदलता है। इसी समय के धारे ने दुनिया के कई रंग बदल कर रख दिए हैं। समय की चाल कुछ का कुछ बनाता है। समय ही जीवन देता है और समय ही मौत। उसके एक ही समय में कहीं खुशी मनाई जाती है और कहीं गम। कहीं किसी की अर्थी जाती है और साथ ही

किसी की बारत।

यह सब कुछ समय की देन है। समय की गति को भला कौन रोक सका है ! इन्सान का यह पागल-पन है जो समय के महत्व को समझ नहीं पाता वरना समय तो हर कदम पर इन्सान को एक पाठ पढ़ाता है।

इसी समय की चाल ने चन्दन की दुनिया को एक सिरे से ही बदल कर रख दिया। वह मौत की तलाश में निकला था। और उसे जिन्दगी मिली। इस जिन्दगी के साथ ही उसे एक चीज मिली थी। वह थी अंजू ! न जाने क्यों उसे अंजू से हार्दिक लगाव हो गया था। वह उसे मुहब्बत करने को तैयार नहीं था ?

यह प्रेम नहीं था तो और क्या था ?

उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते वह अंजू के बारे में ही सोचता। अंजू का भोला-भाला चेहरा हर वक्त उसकी आँखों के सामने घूमता रहता। अगर यह प्यार नहीं तो क्या है ? मगर इस प्यार का परिणाम तो वह रात को अच्छी तरह देख चुका था। अंजू ने उससे साफ-साफ कह दिया कि उसने जो किया वह गलत था, जो सोचा वह गलत था। मैं वह नहीं जो तुम समझ रहे हो, न वह बन सकूंगी जो तुम देखना चाहते हो।

इतना होने पर भी अब अंजू के बारे में कुछ इधर ऊपर की सोचना मूर्खता नहीं तो और क्या है ?

इतना सब कुछ होने पर भी अंजू से अपने को अलग नहीं कर सका। उसकी मोहनी सूरत उसकी आंखों के सामने हर वक्त थिरकती रहती। एकाँत में वह उसकी कल्पना में

सुलगता रहता। रात की नींद गायब थी और दिन का चैन हराम था।

उसे क्या हो गया ?

कहीं एक मौत से बचकर दूसरी मौत के चंगुल में तो नहीं जा फँसा।

अंजू उसे मिल नहीं सकती और जो चीज उसे मिल नहीं सकती उसके बारे में वह सोचता ही क्यों है ?

काश यह सोच विचार उसके वश में होता।

वह स्वतः बड़बड़ा उठता—

अंजू से अब वह कुछ कह भी नहीं सकता। अंजू के एहसान उसके ऊपर कम नहीं हैं। उन्हीं के तले वह दबा हुआ है।

अंजू उससे रोज मिलने आती लेकिन वह जो चाहता था वह नहीं हो सकता था।

फिर यह सब कुछ कब तक चलेगा।

एक बात जो बार-बार उसे परेशान कर रही थी वह थी अंजू की उदासी जो उसकी आँखों से फूट पड़ती थी। अंजू अपनी उदासी पर परदा डालने का बहुत उपक्रम करती मगर वह शायद यह नहीं जानती थी कि आत्म-वेदना कभी छुपाए नहीं छुपती, उठते हुए तूफान को किसने रोका है !

जब भी कभी वह इसके बारे पूछता, वह टाल जाती। वह अकेली लड़की शिमला में एक फैशनेबुल होटल में रह रही थी। उसे कोई चिन्ता नहीं थी लेकिन अकेली लड़की का वहाँ रहना उसे सोचने पर विवश कर देता।

'कहीं ऐसा तो नहीं कि अंजू किसी और से प्यार करती हो?'

सहसा यह प्रश्न उसकी आँखों के सामने उभरा।

यह हो सकता है। अगर यह बात न होती तो उसकी आँखों से आँसू न फूट पड़ते। वह उसे इस तरह धुतकार न देती। इसके पीछे जरूर कोई भेद है और यह भेद मुहब्बत के सिवा और कुछ नहीं।

प्रेम के पहले प्रहार ने ऐसी ठोकर दी थी कि वह औंधे मुंह गिरा था और सदा के लिए साहस ने ही साथ छोड़ दिया था। जीवन की यहाँ करवट भी कुछ अजीब थी। जो बात उसने कभी सोची तक न थी, वही हो गई थी और हुई भी थी खूब ढंग से।

ठण्डी हवा के तेज झोंके ने उसके विचार-प्रवाह को थोड़ी देर के लिए तोड़ दिया। इन झोंकों के साथ ही वर्षा की तेज बूंदे भी अन्दर आ गईं। उसने शीघ्रता से दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर दीं।

यह पहाड़ी बारिश भी अजीब है। इसका कुछ पता नहीं चलता। अभी-अभी धूप निकल रही है और अभी-अभी वर्षा होने लगी। वह बड़बड़ाता हुआ भीगे कागजों को ठीक करने लगा। जब सब काम खत्म हो गया तो आराम से कुर्सी पर बैठकर एक सिगरेट सुलगाया और पहला कश जरा लम्बा खींचा तो खाँसी आ गई। साँस उखड़ने लगा। चेहरे का रंग सुर्ख हो गया।

उखड़ी हुई साँसों पर काबू करते हुए उसने अपने आपको संभाला। फिर मेज से एक किताब उठाई और पढ़ने में व्यस्त हो गया। ऐसे समय किताबों में दिल भला कब लगता है। इससे तो दिल की बेचैनी और बढ़ जाती है। किताब खोलते ही उसे अंजू की तस्वीर दिखाई देने लगी।

अंजू ने मुझपर क्या जादू कर दिया है ! मैं भी कितना पागल हो गया हूँ। जिसे पा नहीं सकता उसी के बारे में सोचता रहता हूँ। जव उसने साफ और खुले शब्दों में कह दिया है कि मैं इस बारे में कभी सोच भी नहीं सकती तो वह ऐसी परछाई के पीछे भागने की क्यों कोशिश कर रहा है। परछाई तो कभी इन्सान के काम नहीं आती।

वह अंजू की तस्वीर से प्रेम कर सकता है लेकिन अंजू से नहीं।

तो क्या अंजू की तस्वीर उसका दिल बहला सकती है ?

नहीं। कभी नहीं।

वह मौत तो बहुत अच्छी थी। केवल एक ही बार मरता लेकिन अब तो जीवन भर सुलग-सुलग कर मरना होगा। यह कहाँ पता था कि तुमसे जीवन छीन कर मौत से बहतर जिन्दगी होगी।

दरवाजे पर दस्तक हुई और उसने अंजू को विचारों से पटक दिया लेकिन—लेकिन यह तो अंजू स्वयं थी। जिसके ख्यालों में वह खोया हुआ था वही उसके सामने खड़ी थी।

'बैठिए।' उसने यह कहते हुए अंजू को सर से पाँव तक देखा। आज तो अंजू सिरे से ही बदली हुई नजर आ रही थी। उसका लिबास इतना सुन्दर था कि वह देखते ही रीझ उठा।

चूड़ीदार पाजामा और ऊपर से खुला कुर्ता नुमा कमीज कंधे पर हल्का-सा गरम शाल। सिर के बाल हल्की बारिश के कारण भीगे हुए थे। वर्षा की बूँदें बालों पर मोतियों की तरह सरक रहे थे। कमीज भी थोड़ी भीग गई थी।

'तुम तो काफी भीग गई हो ?'

'पहाड़ों के ऊपर इतनी बारिश में घूमने में बड़ा मजा आता है।'

'पहाड़ों पर तो हर बात में मजा आता है। अगर न भी हो तो लोगों ने बना लिया है क्योंकि यहाँ तो आते हैं लोग मजे के लिए।'

'और आप हैं कि दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द करके बैठे हैं।'

'क्या करता ! बारिश जो आ रही थी, देखो सारी किताबें भीग गई हैं। कपड़े तक भीग गए हैं मगर तुम तो बरसात के मजे ले रही हो।

'कभी-कभी इन्सान अपने दिल को धोखा देने के लिए भी मजे की बात करता है।'

'दिल को धोखा देने के लिए ? तो क्या तुम अपने आपको धोखा दे रही हो ? क्या कहती हो अंजू ?'

'वही जो आप नहीं जानते।'

'मैं नहीं जानता ! क्या नहीं जानता मैं ?'

'अभी आप कुछ नहीं जानते। यहाँ कोई हंसता है तो कोई रोता है।'

'इन बातों से मुझे क्या मतलब ?'

'तुमसे है ! कैसे ?'

'हाँ मुझसे, या मेरी जैसी हजारों लड़कियों से जो ऊपर से तो खुश हैं लेकिन उनके अन्त:करण में हजारों गम छुपे हुए हैं। ऐसे गम जिनकी बात न वह किसी से कर सकती हैं और न अपने घाव किसी को दिखा सकती हैं।'

'आज तो तुम बड़ी निराशाजनक बातें कर रही हो अंजू !'

'आज आपसे ऐसी बातें करने को दिल चाहता है जो न कभी आपने सुनी होंगी और न सोची होंगी।

'अच्छा, कह डालो। साफ कहने का आदी हूँ और साफ सुनने का, इसलिए पहेलियाँ मत डालो, साफ-साफ कह डालो।

'बस, घबरा गए जरा-सी बात पर।'

'घबराने की बात नहीं अंजू ! मैं किसी का दुःख नहीं देख सकता और न किसी को परेशान देख सकता हूँ।

'यह भावना तो हम औरतों के हिस्से में आई है। भगवान ने हमें दुख सहने की शक्ति दी है। अपने देश की औरत तो दुनिया भर का दुख दर्द सहने के बाद भी उफ नहीं करती वह रो-रो कर जिन्दगी गुजार देती है लेकिन उसके होठों पर कोई शिकायत नहीं होती, कोई उफ नहीं होता।

'आज तो तुम कुछ बदली-बदली सी लग रही हो।'

'बदली नहीं हूँ। आज तुम्हें मैं अपना असली रूप दिखाने आई हूँ। वह रूप जिसके बारे में आप सपने में भी अनुमान नहीं लगा सकते। तुमने आज तक मेरा बाहरी रूप देखा है और उसी से यह अनुमान लगा लिया कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ।'

'इसमें क्या कोई संदेह है ?'

'सत्य बिल्कुल इसके विपरीत है।'

'वह क्या ?'

'मेरी असली जिन्दगी इसके बिल्कुल उल्टी है।'

'मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया।'

'आप मुझे हर वक्त खुश देखते हैं ना?'

'हाँ।'

'आप यह भी जानते हैं कि मैं सुन्दर भी हूँ।'

'मेरी नजरों में तो अति सुन्दर।'

'और आप यह सोचते हैं कि बड़ी अमीर हूँ, रुपये पैसे की मुझे कोई कमी नहीं।'

'हाँ, बिल्कुल ऐसा ही।'

'और शायद आप मुझसे प्रेम भी करते हैं?'

'अंजू देवी!' वह सहसा घबरा गया। जैसे इस प्रश्न के लिए तैयार न हो या उसकी चोरी पकड़ ली गई हो।'

'घबरा क्यों गए। प्रेम करना कोई गुनाह तो नहीं। इतनी बड़ी जिन्दगी काटने के लिए कदम-कदम पर सहारे की जरूरत होती है ऐसे जीवन साथी की जरूरत होती है जो दुख-सुख में हाथ बटा सके जो दिल की बात सुन सके और उदास जीवन में सुख के बीज बो सके।'

'मेरा अपना विचार तो यही है।'

'तो इसका मतलब है आप मुझे जीवन साथी बनाना चाहते हैं।

'हाँ अंजू! इसे मेरा पागलपन समझो या हार्दिक इच्छा। मैंने ऐसो बात सोची अवश्य है। मैंने अपना सब कुछ खोकर यह समझ लिया था कि तुम्हें पा लिया है। मैंने आज तक तुम्हारे सिवा किसी से प्रेम नहीं किया और न ही मुझे प्रेम करने का रास्ता मालूम है कि प्रेम कैसे किया जाता है।

'प्रेम किया नहीं जाता चंदन साहब, हो जाता है अपने

आप !'

'यही ख्याल मेरा भी था !'

'चन्दन !'

'हाँ अंजू !' उसने बड़े प्यार से उसकी आँखों की गहराइयों में उतरने की कोशिश की मगर उन आँखों में प्यार के बजाए गम तैर रहे थे।

'मैं तुम्हें बहुत अच्छी लगती हूँ ?'

'यह भी कोई पूछने की बात है ?'

'मैं तुम्हें अच्छी क्यों लगती हूँ ?'

'इसका तो मेरे पास कोई उत्तर नहीं, बस अच्छी लगती हो।'

क्या यह जरूरी है, जो अच्छा लगे उससे प्यार किया जाए।'

'हाँ, यह जरूरी है।'

'अगर वह प्यार न करे तो ?'

'तो—तो !' वह हकलाने लगा।

'मेरा मतलब है कि अगर तुम किसी से प्यार करो और वह प्यार न करे तो ?'

'क्यों नहीं करेगा जब एक को प्यार हो गया तो दूसरा क्यों नही करेगा।'

'यह तो जबरदस्ती वाली बात हो गई।'

'जबरदस्ती नहीं, अंजू ! यह तो दिल की बात है। सुना है प्रेम का जन्म आत्मा की गहराइयों से होता है अगर यह मान लिया जाए कि आत्मा ही परमात्मा है तो प्रेम ही परमात्मा है तो प्रेम तो परमात्मा की आवाज हो गई।'

'आप बहुत दूर चले गए ।'

'प्रेम के पथ में तो अक्सर दूर की बात सोचनी पड़ती है ।'

'तो आपको मुझसे प्रेम हो चुका है ।'

'अवश्य, चाहे आप बुरा मान जाएँ । मुझे इस बात को खुल कर तो नहीं कहना चाहिए मगर आपने पूछ लिया तो सच्ची बात मुँह से निकल गई ।'

'मैं आपकी सच्चाई की प्रशंसा करती हूँ । बुरा मानने का तो प्रश्न ही नहीं है ।'

अंजू के इस उत्तर से उसका दिल बल्लियों उछलने लगा । उसके जी में आया कि अंजू को अपनी बाँहों में भींचकर खूब जोर से प्यार करे । उसके रसीले अधर चूम ले और चिल्ला उठे—

अंजू तुम मेरी हो । मैंने तुम्हें पा लिया मेरी खोई हुई आशाएँ वापस आ गईं । मेरे अधूरे सपने पूरे हो गए । मेरी अभिलाषाओं और इच्छाओं की जो किश्ती डगमगा रही थी उसे फिर सहारा मिल गया ।

'चन्दन !'

'हूँ ।'

'तुम चुप क्यों हो गए ?'

'चुप नहीं, कुछ सोच रहा था ।'

'क्या सोच रहे थे ?,

'इस जिन्दगी के बारे में ।'

'सोचने का कोई फायदा नहीं । चलो उठो, बाहर चलें ।'

'यहाँ क्या बुरा है ?'

'बुरा तो कुछ नहीं, जरा एकांत में बातें करेंगे ।'

चन्दन एक बार फिर दिल ही दिल में झूम उठा और जल्दी से कपड़े पहन कर बाहर जाने के लिए तैयार हो गया ।

११

वही शिमला !

वही सजे सजाए लोग !

वही माल रोड !

माल रोड पर उसी तरह चहल-पहल थी। बारिश के बाद साधाणासी धूप निकल आई थी। शिमला की यही

विशेषता है। इसकी सुन्दरता में जरा भी अन्तर नहीं पड़ता। अगर कुछ चले जाते हैं तो कुछ नए आ जाते हैं और नये आने वालों को घूमने का शौक कुछ अधिक ही होता है।

अंजू उसके संग-संग चल रही थी। इस समय वह अपने आप को भाग्य-शाली समझ रहा था। इतनी सुन्दर लड़की उसके साथ थी। इसी लड़की ने उसके प्रेम की मस्ती को झटक कर चकनाचूर कर दिया था और आज ऐसा लग रहा था जैसे प्रेम आरम्भ हो रहा है।

'आओ एक कप काफी पी जाए।' अंजू ने चलते-चलते रुक कर कहा।'

'चलो। मैं सोच रहा था कि माल रोड के एक दो चक्कर और किए जाएँ। जरा तबीयत बहल जाए।'

'तो आपकी तबीयत अभी पूरी तरह बहल नहीं पाई।'

'हाँ अंजू! न जाने क्यों हमारा दिल आज उदास है।

कहीं बैठने के बजाए क्यों न घूमा जाए। बैठे-बैठे तबीयत उकत गई है।'

'हूँ।'

वह समझ गया कि दिल की बात अंजू भाँप गई है। यह प्रेम की आग भी खूब है। छुपाये नहीं छुपती और बुझाए नहीं बुझती। और औरत की निगाह तो मर्द को भाँपने की ताकत अच्छी तरह रखती है।'

'मैं भी चाहती थी कि कहीं दूर चलकर बातें करें।'

'तो चलो। मुझे भला इन्कार कब है!'

'चलो, पहले एक-एक कप काफी पीते हैं। आज तुम से बहुत सी बातें करनी हैं जो शायद अब जीवन में दोबारा न

हो सकें। यह जिन्दगी बहुत अल्प आयु है चन्दन खुशी के क्षण तो जिन्दगी में आते ही बहुत कम हैं।'

'आज तुम उदास-उदास सी लग रही हो। कहीं कोई भूल मुझसे तो नहीं हो गई।' अब वह माल रोड की रेलिंग के सहारे खड़े हो गए।'

'उदास नहीं चन्दन, आज मैं बहुत कुछ सोच रही हूँ। ऐसी बातें जो तुम सपने में भी नहीं सोच सकते। वही बातें आज तुम से बताना चाहती हूँ। यह मैं जानती हूँ कि तुम्हें यह सब सुनकर दुःख होगा।'

'मुझे दुख होगा।'

'हाँ, तुम्हें दुख होगा।'

'अगर ऐसी बातें तुम मुझसे क्यों करना चाहती हो ?'

'अगर न कहूँगी तो कुछ दिनों बाद तुम्हें और अधिक दुख होगा। हो सकता है तुम मुझसे नफरत करने लगो। यही वजह है कि तुम्हें वह सारी बातें बता देना चाहती हूँ।

'अच्छा चलो, बताओ।'

'पहले काफी पीयेंगे, फिर चलेंगे।'

'जैसी तुम्हारी मरजी।' उसने बुझे हुए दिल से कहा जैसे अपने मन को मार कर यह बात कही हो। उसके दिल की धड़कन तेज होती जा रही थी। उसे लग रहा था कि वह फिर किसी आफत का शिकार होने जा रहा है। न जाने अंजू उसे क्या बताने वाली है !'

इसी सोच में डूबा हुआ वह अंजू के साथ काफी हाउस पहुँच गया। शिमला में काफी हाउस का रश तो खत्म नहीं होता। जब जाओ भीड़ अवश्य मिलती है। सब लोग अपनी

दुनिया में मस्त नजर आते हैं। जो एक बार सीटपर बैठ गया वह उठता उसी समय है जब बैठा-बैठा थक जाता है।

थोड़ी देर इन्तजार के बाद एक सीट मिल ही गई।

दोनों कुछ देर मौन रहे। अंजू आज उसे कुछ बदली बदली नजर आ रही थी। ऐसा लग रहा था कि जो कुछ वह कहना चाहती है वह मजबूरी वश कह रही है।

'चन्दन !'

'हाँ अंजू !'

'मौसम कितना सुहाना हो गया है।'

'इसमें कोई शक नहीं। अगर मैं कोई कवि होता या लेखक होता तो कोई रोमानी कविता या रंगीन कहानी लिख डालता।'

'तो क्या आप लेखक या कवि नहीं बन सकते ?'

'वैसे तो इसके लिए कोई समय निश्चित नहीं है।'

'तो फिर देर काहे की ? दूँ कागज और पेन ?'

'पेन तो मेरे पास है। कागज चाहिए।'

'अभी लाती हूँ।' अंजू सचमुच उठकर चली गई।

उसने अंजू को कई आवाजें दी लेकिन वह सुनी अनसुनी कर गई। सभ्यता के कारण वह ऊँची आवाज नहीं दे सकता था। जो बात उसने मजाक में कही थी वह अंजू ने सच मान लिया था।

थोड़ी ही देर में अंजू कापी लेकर वापस आई।

'लीजिए ! खुले कागजों के बजाए कापी ले आई हूँ।' अंजू ने उसकी ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा।

'अरे, तुम तो सचमुच कापी ले आई ! मैं तो मजाक कर

रहा था।'

'हो सकता है, तुम मजाक मजाक में ही कलाकार बन जाओ।'

'कहाँ मेरी ऐसी किसमत!'

'भाग्य तो इन्सान खुद ही बनाता है। फिर इससे अच्छा अवसर तुम्हें कब मिलेगा! शिमला जैसा सुन्दर शहर, प्यारा मौसम, हसीन लोग।'

'अगर अपना ही दिल बुझा हुआ हो तो?'

'तो फिर वह कहानी या कविता और सुन्दर बन जाएगी।'

'ऐसा लगता है कि एक दिन तुम मुझे विवश कर दोगी कि मैं कलाकार बन ही जाऊँ।'

'चलो ऐसा ही समझ लो।'

इतनी देर में काफी आ गई। दोनों गरम-गरम काफी से दिल बहलाने लगे। शायद बातचीत का रुख कुछ बदल गया था इसलिए थोड़ी उदासी कुछ दूर हो गई थी।

काफी के बाद फिर दोनों माल रोड पर आगए। वहाँ रेलिंग के सहारे दृश्य देखते रहे। शिमला की सुन्दरता चारों ओर की पहाड़ियों में बिखरी पड़ी थी।

'चन्दन!'

'हूँ।'

'यह दुनिया क्या है?'

'एक सपना जो कभी सच लगता है और कभी झूठ।'

'और जब नींद खुल जाती है तो सपने का परिणाम क्या होता है?'

'सपना खत्म हो जाता है।'

'मगर मेरा ख्याल तो कुछ और है।'

'क्या है ?'

'यह दुनिया सुख और दुख का नाम है। अच्छे सपने सुख और दुख देते हैं। सपनों के अलावा यहाँ और कुछ है भी नहीं।

'कभी-कभी इस दुनिया से दिल क्यों उचाट हो जाता है ?'

'जब कोई बुरे सपने नजर आते हैं।'

'क्या दुनिया सपने के सिवा और कुछ नहीं।'

'कुछ नहीं अंजू। यहाँ केवल हम धोखा खाने के लिए और धोखा देने के लिए जीवित हैं। यही भावना तो मुझे मौत के समीप हो गई। जब इन्सान जीवन का ध्यय समझ जाता है तो जीवन को कुछ नहीं समझता। मैंने तो यही पाया कि यहाँ दु:ख ज्यादे हैं और सुख नाम मात्र नहीं। इन्सान जब अपनी इच्छाओं का गला घुटते हुए देखता है तो उसे यह सहन नहीं होता।'

'सच पूछो तो तुम्हारे इसी रूप से मुझे भय लगता है।'

'यह दुनिया ही ऐसी है अंजू ! यहाँ हर आदमी सच्चाई से डरता है। इस दुनिया में अब झूठ की पूजा होती है। सच्चाई तो यहाँ दम तोड़ रही है।'

'अगर तुम्हें एक सच्ची कहानी सुनाऊँ तो बुरा तो नहीं मानोगे ?'

'मेरे बुरा मानने का सवाल ही पैदा नहीं होता।'

'तो चलो नीचे, उस पहाड़ी पर एकान्त में बैठें।'

थोड़ी ही देर में नीचे ढलवान पर एक पहाड़ी नदी के

किनारे दोनों एक टीले पर जा बैठे। चारों ओर ऊँचे ऊँचे पेड़ों के झुंड थे।

पास के किसी गाँव में से शहनाईयों की आवाज आ रही थी। यह आवाज इतनी सुहानी थी कि चन्दन सुनते ही बेकल हो उठा।

'यह शहनाई सुन रही हो अंजू।'

'हाँ।'

'क्या तुम्हें शहनाई पसन्द नहीं ?'

'अच्छी लगने का वक्त होता है।'

'शहनाई अच्छी लगने का वक्त होता है ?

'हाँ चन्दन।'

'मुझे तो बड़ी अच्छी लग रही है। जी चाहता है गाँव में चलकर इस सीधे सादे लोगों की शादी देखी जाए। साथ में शहनाई भी सुनी जाए।'

'मगर हम लोग तो...'

'चलो अंजू चलो।' उसने उठते हुए कहा।

'चन्दन!' मैं यहाँ तुमसे बातें करने आई थी।'

'बातें तो और दिन भी कर लेंगे। शादी तो रोज नहीं आएगी।'

'शादी और मौत—यह रोज होते हैं।'

'अरे चलो ना ?' उसने बच्चों की तरह मचलते हुए कहा।'

'तुम्हारी जिद बेबस कर देती है।'

दोनों उबड़खाबड़ पहाड़ी पगडंडियों पर से होते हुए उस छोटे से पहाड़ी गाँव में पहुँच गए जहाँ शादी हो रही थी।

पहाड़ी लोग अपने खास लिबास—चूड़ीदार पाजामा, कमीज और बड़ी-सी पगड़ी में बड़े सुखी दिखाई दे रहे थे।

आगे-आगे शहनाई बजाने वाले थे और उनके पीछे बाराती। यहाँ बिजली की बत्तियाँ नहीं थीं। लाउड स्पीकर नहीं थे। बड़े-बड़े बैंडमास्टर नहीं थे।'

'देखो अंजू, कितने सीधे सादे लोग हैं ?'

'यह लोग ही सही अर्थों में मनुष्य हैं। इनमें बनावट का नामोनिशान नहीं। इनकी हर बात में जिन्दगी और सादगी है।'

'अपने शहरों में तो ऐसा नहीं होता।'

'शहर में लोग प्रकृतिक जीवन से बहुत दूर चले जाते हैं। उनके पास बनावट के सिवा और कुछ नहीं होता। ऊपर से जो वह दिखाई देते हैं, अन्दर से वैसा नहीं होते। जो उनके अन्दर होता है वह बाहर नहीं दिखाई देता। बनावट ने उन्हें मशीन बना दिया है। वह रोते हैं मशीन को तरह, हँसते हैं मशीन की तरह, खाते हैं मशीन की तरह। सच्चा सुख किसी के पास नहीं।'

'इन लोगों को देखो, किस तरह खुशी से दीवाने हो रहे हैं।'

'यह इन्सान हैं और हम मशीन। इन्सान और मशीन में जो अन्तर है, वही हम लोगों में और इन में सदा रहेगा।

'मेरा तो दिल करता है कि हम जीवन भर यहीं रहें। पास ही शिमला है, जब कभी दिल आया चले गए। वह दो चार दिन दिल बहलाया और फिर यहीं आकर रहने लगे।'

'कहने और करने में बड़ा अन्तर होता है।'

'अगर तुम हाँ करो अंजू तो मैं तैयार हूँ ।'

'तुम्हें यह विश्वास कैसे है कि मैं हाँ कर दूंगी ।'

'मेरा दिल कहता है ।'

'दिल तो गलत बातें कहता है ।'

'तो इसका मतलब है, तुम यहाँ नहीं रह सकतीं ।'

'ऐसा ही समझो । हाँ, तुम यहाँ रहना शुरू कर दो ।'

'मैं अकेले कैसे रह सकता हूँ ?'

'अकेले क्यों ? इतने सारे लोग तुम्हारे साथ होंगे ।' और इस शिमले में कोई न कोई अंजू भी मिल जाएगी ।'

'अंजू मिल जाएगी ?' वह फीकी हँसी हँसा ।

'क्यों ? क्या नहीं मिलेगी ?'

'नहीं, कदापि नहीं, अंजू इस दुनिया में दोबारा नहीं मिलेगी । वह इस दुनिया में केवल एक है, केवल एक । जैसे दूसरा ताजमहल पैदा नहीं हो सका वैसे ही दूसरी अंजू कभी पैदा नहीं होगी ।'

'मुझे लज्जित न करो चन्दन !'

'मैं सच कहता हूँ अंजू ।'

'मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ ?'

'मैं इतनी बात तो समझता हूँ अंजू ।'

'अब चलो ।'

'जरा ठहरो, देखो शहनाई कितनी सुन्दर लग रही है । मजा आ रहा है । जी चाहता है कि इसी तरह शहनाई बजती रहे और हम दोनों इसी तरह सुनते रहें ।'

'हर वक्त हर चीज अच्छी नहीं लगती । सब वक्त की बातें हैं । कभी-कभी इन्सान इन सब चीजों से तंग आ जाता

है। यह सुहाना मौसम ऐसा लगता है जैसे अंगारे बरसा रहा हो। यह शहनाई दिल के घावों को हरा कर देती है। दिल को लुभाने वाले गीत राख हो जाते हैं। और यही गीतों के राख इन्सान दुखी और परेशान कर देते हैं।'

'तुम बहुत उदास हो गई हो।'

'सच्ची बातें उदासी का ही रूप धारण करती हैं।'

'अंजू, हमें गीतों की बातें करनी हैं। न कि गीतों के राख की। इस दुनिया को केवल गीतों से प्यार है। गीतों की राख से नहीं। इस राख से दुनिया डरती है। लोग पुर्निमा के चाँद को देखते हैं, अमावस की काली रातों से नफरत होती है।'

'बाबू जी, बाबू जी।' एक पहाड़ी ने उन्हें बीच में टोकते हुए कहा।

'क्या है भाई ?'

'आपको हमारे गाँव के मुखिया बुला रहे हैं।'

'हमें ?'

'हाँ बाबू जी।'

'चलो।'

१२

गाँव का मुखिया बड़े आराम से चारपाई पर बैठा हुक्का पी रहा था । उम्र पचास के लगभग होगी लेकिन सेहत इतनी अच्छी थी कि नौजवान को मात कर रहा था। सुर्ख चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूछें, मोटी मगर थोड़ी-सी चिपटी नाक, कसरती शरीर, सफेद चूड़ीदार पाजामा, सफेद कमीज,

ऊपर भूरे रंग की वास्कट, सिर पर बड़ी-सी पगड़ी, मोटी-मोटी आँखें !

'बाबू जी, आप लोग शहरी हैं ना।'

'हाँ जी।'

'हमारे गाँव में कैसे आ गए ?'

'शहनाइयों की आवाज हमें खींच लाई।'

'हम देहातियों की शादी देखने आए थे ?'

'हाँ !'

'बैठो बेटा, बैठो।' पास पड़ी चारपाई की ओर उसने संकेत किया।

दोनों मुखिया के सामने ही बैठ गए। उनके इर्द-गिर्द बहुत सारे लोग पत्थरों पर बैठे हुए थे।

'पसन्द आया हमारा गाँव ?'

'क्यों नहीं पसन्द आया। गाँव के साथ-साथ आप लोगों का प्यार बड़ा पसन्द आया। कितना प्यार है यहाँ।'

'बेटा, हम लोग गरीब हैं। हमारे पास प्यार के सिवा और रखा ही क्या है।'

'नहीं चौधरी साहब, यह बात नहीं। गरीब और अमीर का सवाल नहीं। कितनी अच्छी है आपकी छोटी-सी दुनिया यहाँ चारो ओर खुशी नाच रही है। हर तरफ प्यार के सागर उमड़ रहे हैं।'

'यह बातें कहके हमें लज्जित न करो बेटा। हम लोग सचमुच गरीब आदमी हैं।'

'चौधरी साहब, इस दुनियाँ में न कोई अमीर है और न गरीब। न कोई छोटा है न बड़ा। भगवान ने हम सब को

एक-सा पैदा किया है। इस दुनिया में सबसे पहले इन्सान का जन्म हुआ है। और इन्सान सबके सब एक ही तरह से जन्म लेते हैं। एक ही तरह मरते भी हैं। इतना होने पर भी यह दुनिया इस बात को समझ नहीं पाती। जब इन्सान की जिन्दगी और मौत एक जैसी है तो इन्सान के बीच में इतना अंतर क्यों है।'

'हाँ, यह बात तो सही है।'

'चौधरी साहब, अमीरी गरीबी या बड़े-छोटे की दिवारें इन्सान ने खड़ी की हैं। किसी धर्म, किसी राष्ट्र या किसी देश में यह सब कुछ किसने बनाया, किसने पैदा किया।' चन्दन भावुक बन गया था।

'बेटा, तुम भूलते हो। यह सब कुछ किस्मत की देन है।'

'किस्मत और भाग्य—यह सब हम अपनी कमजोरियों को छुपाने के लिए कहते हैं। इन्सान अपने गुनाहों पर परदा डालने के लिए भाग्य का सहारा लेता है। इन्सान के माथे पर जो स्याह दाग है उन दागों को छुपाने के लिए हम भाग्य को कोसते हैं। सच पूछो तो भाग्य नाम की कोई चीज नहीं, यह स्वार्थी, बेइमान और धोखेबाज इन्सानों के दिमाग की उपज है जिन्होंने सीधे-सादे इन्सानों के अधिकारों को अपने कबजे में कर लिया है। उनकी तो वही दशा है जैसे बच्चे को बहलाने के लिए खिलौना दे देते हैं। वैसे ही भूख से बिलखते हुए, बेबस और विवश इन्सानों को बहलाने के लिए उन्होंने भाग्य नाम का खिलौना दे दिया है ताकि वह इससे अपना दिल बहलाते रहें।'

'तुम शहरी बाबू हो बेटा, तुम्हें ऐसी बातें नहीं करनी

चाहिए।'

'मैं बाबू नहीं चौधरी साहब। मैं इन्सान हूँ, तुम्हारी तरह एक इन्सान ! तुम्हारे और मेरे में कोई अंतर नहीं। अगर अंतर है तो वातावरण का। मैंने ऐसे वातावरण में जन्म लिया है जहाँ इन्सान की कुछ कीमत नहीं। जहाँ इन्सान नहीं बसते, मशीनें बसती हैं।'

'तुम्हारे विचार तो शहरी लोगों से बिल्कुल अलग हैं।

'इन्हीं शहरों ने तो मनुष्यता का गला घोंटा है। यहाँ इन्सान एक खिलौना जैसा है। जहाँ इन्सान नाम की वस्तु ढूंढने से भी नहीं मिलती। चारों ओर मशीन ही मशीन है मगर आज भी देहातों में सच्ची मनुष्यता दिखाई देती है।'

अंजू हैरानी से चंदन के बदले हुए चेहरे की ओर देख रही थी जो क्रोध और वेदना के मिले-जुले भावों से सुर्ख हो रहा था। वह बोलते समय ऐसा लग रहा था मानो बहुत बड़ा लीडर स्टेज पर भाषण दे रहा हो।

यह चन्दन बोल रहा था कि एक सुलझा हुआ इन्सान था।

'बेटा, तुम्हारी बातें तो बड़ी दिल को लुभाने वाली हैं। तुमसे मिलकर तो ऐसा लगता है कि अपने किसी सगे संबंधी से भेंट हुई है।'

'धन्यवाद !'

'धन्यवाद की जरूरत नहीं। तुम लोग हमारे मेहमान हो ! और मेहमान भगवान से भी अधिक प्यारा होता है। आज रात तुम लोग हमारे यहाँ ही रहो, आज यह शादी होगी, नाच गाने होंगे ! तुम्हें भला यह नाच कहाँ पसंद आएँगे ! तुम लोग तो बड़े-बड़े नाच गाने देखते होंगे।'

'वह सब बनावट है चौधरी। सच्ची जिन्दगी तो इन्ही लोक-नृत्यों में है।'

फिर शादी की रस्में अदा होने लगीं। उसके बाद लोक नृत्य शुरू हुआ। इसमें पहाड़ी औरतें और मर्द दोनों नाच रहे थे। ढोल और पहाड़ी तबले की थाप पर सधे हुए पाँव थिरक रहे थे।

इनके शरीर का अंग-अंग थिरक रहा था।

पाँव की मिलावट में कहीं भी तनिक अंतर नहीं था।

पहाड़ी औरतों की पथरीली छातियाँ ढोल की आवाज के साथ कपड़ों के भीतर भी थिरक-थिरक भावनाओं के तूफान पैदा कर रही थीं।

कहाँ गए वह नई सभ्यता के समर्थक? कहाँ हैं वह अंग्रेजी सभ्यता के पुजारी? जिन्होंने भारतीय कला को समझा ही नहीं।

कहां हैं वह राक एंड रोल के शौकीन लोग?

कहां हैं वह अंग्रेजी पढ़कर भारतीय-सभ्यता को भूलनेवाले?

वह फिल्मों के प्रोड्यूसर और डायरेक्टर कहाँ हैं जो अपनी फिल्मों में भारतीय परम्परा का उपहास करते हैं?

हमारा भारत जो सारी दुनिया को सभ्यता सिखाता रहा जिसने सती सावित्री, सीता, द्रौपदी, महारानी झाँसी, मीरा जैसी वरांगनाएँ पैदा की?'

बुध, नानक और महात्मा गांधी जैसे शांति के अवतार पैदा किए।

जिस देश की धरती ने भगवान कृष्ण, राम, चाणक्य, सम्राट चन्दरगुप्त और अशोक, छत्रपति शिवाजी और गुरू

गोविंदसिंह, सुभाश और भगतसिंह जैसे वीर पैदा किये।

इसी देश में नेहरू ने जन्म लिया, शास्त्री ने जन्म लिया।

इसी देश में दुनिया को रास्ता दिखने वाली पवित्र पुस्तकें वेद, पुराण और मनुस्मृति रची गईं।

इसी देश ने कालिदास को जन्म दिया, बालमिकि को जन्म दिया। तुलसी इसी धरती पर परवान उठे। महात्मा कबीर इसी धरती पर खिले। गालिब और सुमित्रा नन्दन इसी धरती की देन हैं।

इस देश की कहानी बड़ी लम्बी है। कभी मिट नहीं सकती। आधुनिक सभ्यता इसे लाख पीछे डालना चाहे लेकिन यह कभी सम्भव नहीं होगा। इस देश की कहानी कभी मिटेगी नहीं, इस सभ्यता पर आंच भी नहीं आ सकती। इस देश की सभ्यता को पाश्चात्य सभ्यता न तो कभी नीचा दिखा सकी और न दिखा सकेगी।

यह देश सारी दुनिया को रोशनी दिखाता रहा और दिखाता रहेगा।

यूरोप की औरतें इस देश की औरतों का कभी भी मुकाबिला नहीं कर सकतीं। राजपूताना के इतिहास को दुनिया की कोई औरत भूल नहीं सकती। जोहर की रस्में इस देश की अपनी कहानी हैं। अपने आप को जीवित जलाना इसी देश की औरतों का काम था।

चन्दन बहुत दूर इतिहास के खंडहरों में घूम रहा था। उसे पता ही नहीं चला कि नाच कब बन्द हुआ।

'आप कहाँ पहुँच गए ?' अंजू ने उसे झिंझड़ते हुए कहा।

'हूँ !' वह चौंक पड़ा जैसे नींद से जागा हो।'

'हूँ क्या हुजूर, नाच खत्म हो गया।'

'जी !'

'अच्छा तो चलें ।'

'जाना कहाँ बेटा ! अब रात आधी से अधिक बीत गई । चलो खाना खा लो । आप के सोने का प्रबंध हो गया है ।'

'नहीं चौधरी साहब···'

'यह समय जाने का नहीं, यह पहाड़ी इलाका है । रात के समय जानवरों का डर रहता है ।

'रात को यहीं रहो, सुबह चले जाना ।'

चौधरी की बात को टालने का साहस न हो सका ।

अंजू अजीब नजरों से उसकी ओर देख रही थी ।

गाँव का सादा खाना उन्होंने खूब जी भर कर खाया ।

दोनों को एक कमरे में सोने के लिए जगह दे दी गई । दो चारपाइयाँ साथ-साथ बिछाई हुई थीं ।

यह हसीन रात !

यह रंगीन मौसम !

यह वातावरण !

इस रात की तंहाई में दो धड़कते हुए दिल !

जवान दिल !

ऐसे में नींद किसे आती !

दोनों काफी देर करवटें बदलते रहे मगर दिल की बेचैनी इन करवटों से दूर नहीं होती ।

दोनों कभी-कभी एक दूसरे को देख लेते ।

दोनों की आँखें आपस में टकराईं ।

दिल की धड़कनें तेज होती गईं ।

आत्मा की बेचैनी बढ़ती गई ।

'चन्दन !'

'हाँ अंजू !'

'तुम मुझे इस तरह घूर-घूर क्यों देख रहे हो ?'

इस बात का तो मुझे भी पता नहीं ! मुझे तो यह भी पता नहीं कि मैं हूँ कहाँ और क्या कर रहा हूँ, मुझे तो केवल तुम्हीं नजर आ रही हो।'

'मुझे इस तरह न देखा करो चन्दन।'

'मैं कहाँ देखता हूँ अंजू, यह तो आँखों का काम है।'

'दिल और आँखें ही तो इन्सान को धोखा देती हैं। आँखों के धोखे से पत्थर हीरा समझा जाता है और काँटे फूल।'

'मैं तो एक भटका राही हूँ, हर एक को मंजिल समझ लेता हूँ।'

'चन्दन !'

'क्या कहना चाहती हो ?'

'बहुत कुछ कहना चाहती थी लेकिन तुमने अवसर नहीं दिया।'

'इससे अच्छा अवसर अब कब मिलेगा ?'

'अगर मैं यह कहूँ कि तुम जिसे फूल समझ रहे हो यह केवल पत्थर है जिसे तुमने गीत समझा है वह आँसू है, जिसे तुमने मधुर समझा है वह कठोर है, जिसे तुमने मोती समझा है वह ओस की बूँद है।'

'मैंने यह सब कुछ सोचा ही नहीं कि फूल क्या है, पत्थर क्या है। आँसू क्या है, मधुरता और कठोरता में अन्तर क्या है। मोतियों की तलाश में अगर ओस की बूंद मिले तो अन्तर क्या पड़ता है।'

'चन्दन तुम जिस ओर बढ़ रहे हो, वह आग है, भयानक आग।'

'जिन्दगी की एक आग से तो निकल आया और मैं समझता हूँ कि यह आग उस आग से भयानक नहीं।

'वह आग तो तुम्हें केवल एक बार ही जलाती और यह आग सदा जलाती रहेगी।'

'मुझे इस जलन में शांति मिलेगी।

'तुम समझते क्यों नहीं चन्दन!'

'मैं समझ कर करूँगा भी क्या?' उसने हाथ बढ़ाकर अंजू की हथेली अपने हाथों में ले ली।

अंजू पानी से निकली हुई मछली की तरह तड़प कर रह गई। वह अपना हाथ छुड़ाना चाहती थी लेकिन छुड़ा न सकी।

'अंजू!'

'हाँ चन्दन!'

'कितनी कोमल है यह हथेली!'

'यह मेरी हथेली नहीं पत्थर का टुकड़ा है।'

'यह काली-काली जुल्फें!'

'यह जुल्फें नहीं काले नाग हैं। तुम्हें डस लेंगे इनसे दूर रहो।'

'इनके जहर में भी मुझे जिन्दगी मिलेगी। मैं तो विलवा मंगल की तरह इन काले नागों को रेशम की कोर समझ लूँगा।'

'मैं थक गई हूँ।'

'आओ, मेरी गोद में आ जाओ, बड़ा आराम मिलेगा।'

'आराम, हूँ।' उसने घृणा और क्रोध से भौएँ सिकोड़ लीं।

'अंजू, क्या तुम्हें इस जीवन से कोई प्यार नहीं।'

जिन्दगी और प्यार! जानते हो इसने दिया क्या।'

'नहीं।'

'नहीं जानते तो सुनो। इस जिन्दगी ने मुझे केवल आँसू दिए हैं। कुछ अधूरी अभिलाषाएँ। कुछ असफलताएँ, यह सब कुछ देने के बाद जिन्दगी में मुझसे लिया क्या।'

'क्या लिया ?' चन्दन ने उत्सुकता से पूछा।'

'मेरा जीवन।'

'यह क्या सुन रहा हूँ मैं ?'

'वही जिसकी आशा नहीं थी।'

'ऐसा न कहो अंजू, मेरा दिल टूट जाएगा।'

'दिल तो पहले ही टूटा हुआ है।

'चन्दन ! मैं जानती हूँ इन बातों से तुम्हें दुःख होगा।'

'अंजू मैं सब सहन करूँगा लेकिन आज की रात···केवल आज की रात मैं तुम्हारे सान्निध्य की भीख मांगता हूँ। मुझमें और सहन शक्ति नहीं। तुम्हारी बातें मुझे पागल बना रही हैं।

'पागलपन तो एक भावना का नाम है। यह मनुष्य को ऊँचा उठाती है।'

'ऐसे ही पागलपन ने तो मुझे मौत के मुँह में धकेल दिया था मैं इस देश को कुछ देना चाहता था लेकिन इस देश ने मुझे मौत दी और उस मौत को तुमने टाल दिया।'

'मैंने बुरा काम तो नहीं किया ?'

'मैंने बुरा कब कहा है ?'

'अब तुम क्या चाहते हो ?

'जो मैं चाहता हूँ क्या तुम दे सकोगी ?'

'मेरे पास रखा ही क्या है ?'

'नई जिन्दगी।'

'फिर तुमभूलते हो मेरे पास न नई जिन्दगी है न पुरानी।'

'तुम्हारे पास बहुत कुछ है अंजू ! यह लाल लाल गाल, यह रसीले अधर, यह—हाय राम—उभरी छातियाँ जिसमें प्यार भरा दिल ! मैं तो केवल तुम्हें चाहता हूँ।' यह कहते हुए चन्दन ने उसे बाहों में भर लिया।

उसके प्यासे होंठ कुलबुला रहे थे।

दोनों जवानी के दिलों की धड़कने तेज हो गईं।

चन्दन उसके अधरों में अपने अधर धसाने ही वाला था कि झटके से उसने अपने को चन्दन के बाँहों से अलग कर लिया और चीख पड़ी—चन्दन।

'अंजू।' वह भी दीवानों की तरह पुकार उठा।

'दूर रहो मुझसे चन्दन। मैं औरत हूँ, भारतीय नारी। मेरा स्त्रीत्व ही मेरी जिन्दगी है। मैं अपने अन्दर की नारीत्व की हत्या नहीं करना चाहती, मेरी हमदर्दी का मत-लब यह नहीं कि तुम मेरी इज्जत पर डाका डालो। मेरी जवानी का रस चूस लो।'

अंजू की आँखें सुर्ख हो गई। उसका सारा शरीर पत्ते की तरह काँपने लगा। वह औरत नहीं भूखी शेरनी दिखाई दे रही थी।

चन्दन उसकी हालत देखकर घबरा गया।

१३

वह अपने बिस्तर में औंधे लेटा सुबकियाँ भारता रहा। आँखों से आँसू बहते रहे और तकिया गीला होता रहा। उस कमरे में केवल उसकी सिसकियाँ सुनाई देती रहीं।

देर तक आँसू बहते रहे।

देर तक सिसकियाँ गूँजती रहीं।

उसमें अब अंजू से आँखें मिलाने की भी ताकत नहीं थी। मिलाता भी किस मुँह से ! कौन-सा नेक काम उसने किया था। एक बार उसकी इज्जत लूटने की कोशिश की तो उसने क्षमा कर दिया। अब दोबारा फिर उसने उसके साथ वही कुछ करना चाहा। उसके पवित्र शरीर को दाग-दार बनाने की कोशिश की।

अंजू के पवित्र नारीत्व को लूटने का प्रयत्न किया। उसके माथे पर कलंक का टीका लगाना चाहा।

उसके अन्दर के साफ और स्वच्छ एवं पवित्र औरत की हत्या करनी चाही।

आत: वह बड़बड़ाने लगा

मैं पापी हूँ।

मैं अपराधी हूँ।

'मैं अत्याचारी हूँ।

'मैं नीच हूँ।

मैं कमीना हूँ।

'मैं इन्सान नहीं, शैतान हूँ,

शैतान—जो दुनिया में केवल बुराई के बीज बोता है और मनुष्यता का शत्रु है।

ऐसे शैतान को तो मर जाना चाहिए।

उसके आँसुओं का वेग तेज हो गया। वह अपने मुंह पर अपने ही हाथों चाँटा मारने लगा।

'क्या करते हो चन्दन ! तुम्हें क्या हो गया है ! कहीं पागल तो नहीं हो गए ?'

अंजू का दिल पसीज गया। औरत के अन्दर का दया-

भाव जाग उठा। वह उठकर उसके पास आई और उसके हाथों को पकड़ लिया।

'तुम मुझसे दूर रहो अंजू।'

'दूर रहने पर भी दूर नहीं रह सकती। मुझसे तुम्हारे यह आँसू नहीं देखे जाते।' अंजू ने उसके आँसू पोंछते हुए कहा।

'मैं दया के भोग्य नहीं अंजू! मैं तो जहरीला नाग हूँ। मैं तो उस आदमी को डसता हूँ जो मुझे दूध पिलाए।'

वह और जोर से रोने लगा। आँसुओं की धार और तीव्र हो गई।

'नहीं चन्दन, तुम इन्सान हो और भूल इन्सान से ही होती है।'

'लेकिन यह भूल ऐसी नहीं जिसे तुम क्षमा करो अंजू!'

'यह क्षमा करने वाली ही भूल है चन्दन! जो कुछ तुमने किया वह अच्छा नहीं था लेकिन गुनाह नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह तो प्रकृतिक है। दो जवान दिल जब एकांत में मिलते हैं तो धड़कते हैं, मचलते हैं। यह तो वह खिला फूल है जिसे देख भौंरे आ ही जाते हैं। दीया जलने पर पतंगे आते ही हैं!'

'यह क्या कह रही हो तुम?'

'मैं औरत हूँ चन्दन! मुझे बहुत कुछ सोचना पड़ता है। तुम्हें भी देखना है और अपने आपको भी। मैं नहीं चाहती कि मेरी वजह से तुम्हारा दिल टूटे।'

'मैंने पाप किया है। अपराध किया है, मुझे सजा मिलनी ही चाहिए। तुम मुझसे दूर रहो, पास न आओ। कहीं मुझसे

फिर वही भूल न हो जाए। तुम्हारे एहसान का बदला चुकाने के बजाए मैं तुम्हें तबाह करना चाहता था। तुम सती सावित्री हो, सीता के बराबर हो। मैं लक्ष्मण बनने के बजाए रावण बन गया।'

'तुम रावण नहीं। अगर रावण होते तो आँसू न बहाते।'

'काश यह आँसू मेरे गुनाहों को धोते।'

'गुनाह नाम की कोई चीज नहीं इस दुनिया में। अगर आभास हो जाए कि यह गुनाह है तो वह गुनाह नहीं रहता।'

'नहीं अंजू ! मुझसे पाप हुआ है'

'पाप तुमसे नहीं हुआ। मैं ही आभागी हूँ जो तुम्हारे प्यार को ठुकरा रही हूँ। मैं जानती हूँ तुम्हारी इच्छाएँ सुलग रही हैं। तुम्हारी भावनाएँ भटक रही हैं। तुम्हारी कामनाएँ जवान हैं। तुम्हारी आभिलाषाएँ मचल रही हैं। पापी तुम नहीं चन्दन, मैं हूँ।'

'अंजू।'

'हाँ चन्दन, मैं पापी हूँ। मैंने ही तुम्हारी सोई इच्छाओं को भड़काया है, जगाया है। मैंने ही तुम्हारी भावनाओं को जवान किया है। मैं सुन्दरी हूँ और तुम—तुम मर्द हो। मुझे देखकर तुम्हारा दिल अगर न भटकता तो—तो क्या होता। मैं ही अभागिन हूँ जो तुम्हारे प्यार का उत्तर प्यार से नहीं दे सकती। मैं तुम्हारे प्यार को कुचल रही हूँ। तुम्हारे अन्दर की सुलगती ज्वाला को शन्ति करने के बजाय और भड़का रही हूँ ताकि यह ज्वाला तुम्हें ही भस्म करे।'

इतना कहते-कहते अंजू को आँखो से आँसू निकल आए उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से छुपा लिया।

'तुम रो रही हो अंजू !'

'आज जी भर रोने दो मुझे। हो सकता है यह आँसू मेरे अन्दर की सुलगती ज्वाला को शाँत कर दें। मेरे गुनाहों को धो दें।'

'यह कैसी बातें कर रही हो अंजू ! आज पत्थर में जोंक लग रही है।'

मैंने कहा ना कि तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुम जवान हो और मैं—मैं हसीन हूँ। यह मौसम सुहाना है। एकांत है। ऐसे में दो धड़कते हुए दिल यही कुछ करते। खूब खुल के करते, छक के करते, मगर—मगर मैं ही अभागिन हूँ—अभागिन जो तुम्हारे पवित्र प्यार को न पा सकी। मुझे इस प्यार का हक भी नहीं।

'तुम्हें प्यार का हक नहीं ?'

'हाँ, यह हक मुझ से छीन लिया गया है।'

'क्यों ?'

'बहुत सारे दुख ऐसे होते हैं जिसे औरतें अन्दर ही अन्दर पी जाती हैं। भगवान ने जहाँ औरत को इतना सुन्दर बनाया है, वहाँ अनेकों दुख सहने की शक्ति दी है।'

'मेरी समझ से तो यह सब कुछ बाहर है।'

'जो बातें तुम्हारी समझ से बाहर हैं। वही तो समझाना चाहती हूँ लेकिन तुम तो अवसर नहीं देते।

'इससे अच्छा अवसर अब कब मिलेगा ?

'अवसर तो अच्छा है लेकिन डर जाती हूँ।'

'डर कैसे ? अन्जू तुम जो कुछ कहना चाहती हो, साफ-साफ कह दो कि मैं तुम्हें पसन्द नहीं करती। मुझे तुमसे घृणा है।

आज मैं यही कुछ तुमसे सुनना चाहता हूँ।'

'यह सब सुनने के लिए बहुत बड़ा दिल चाहिए।'

'मेरा दिल इतना छोटा नहीं।

'लेकिन मुझे तो यह सब कुछ कहने के लिए सीने पर पत्थर रखना पड़ेगा।

'यह पत्थर तो एक बार रखना ही पड़ेगा। कब तक तुम मुझसे यह सब छुपाती रहोगी ?

'यह सब कुछ मैं जानती हूँ। लेकिन जब भी मैंने कुछ कहने का साहस किया तुम्हारी आँखों में प्यार का सागर उमड़ता देख डर गई, दिल की बात जबान तक आई लेकिन होंठों से बाहर नहीं आ सकी अन्दर ही अन्दर गीली लकड़ी की तरह सुलगती रही।

'आखिर तुम कहना क्या चाहती हो ?

'वही जो तुम सुनना नहीं चाहते। मैं तो जिन्दगी के दो-राहे पर खड़ी हूँ। मैं सोच रही हूँ कि मैंने कितनी बड़ी भूल की कि जो बातें तुम्हें पहले ही दिन बतानी चाहिए थी वह आज तक क्यों न कह सकी।'

'अंजू ! मुझसे अब और यह सब कुछ सहन नहीं होता।

'मैं जानती हूँ।

'तो-तो फिर इसका परिणाम क्या होगा ?

'जो प्यार का परिणाम होता आया है।'

'प्यार !'

'वह खुशी से झूम उठा—'यह नाम तुम्हारे अधरों पर आया है अंजू ? आज तुमने प्यार का नाम लिया है।

'इसीलए कि मैं जानती हूँ तुम्हें मुझसे प्यार हो गया है।

क्या यह झूठ है ?

'नहीं यह झूठ नहीं सच है। इसे पाप कहो या पुण्य मगर मैं तुम्हें चाहने लगा हूँ। तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो मेरा दिल हर वक्त तुमसे बातें करने को चाहता है। मैं चाहता हूँ कि तुम हर वक्त मेरे सामने बैठी रहो। तुम्हारा आंचल इसी तरह ढलका रहे, इसी तरह हमारे सीने में खल-बली मचाता रहे। मैं अपना होश खोता रहूँ और ··और तुम में पूरी तरह खो जाऊँ।

'चन्दन ! क्या तुम्हें आशा है कि मैं तुम्हें धोका दूँगी ?

'मैं जानता हूँ अजू तुम मुझे धोका नहीं दोगी। तुमने तो मुझे दुनिया के धोके से बचाया है।'

'चन्दन मैं ही सबसे बड़ा फ्राड हूँ। जो तुम देख रहे हो वह नहीं हूँ मैं। जो तुम चाहते हो, वह मैं नहीं बन सकती। तुम्हें मैं प्यार नहीं दे सकती। मैं तुम्हारी भटकती हुई आत्मा को शन्ति नहीं दे सकती। मैं तो वह सेज हूँ जिसपर बिस्तर ही नहीं है। मैं तो एक बेसुरा गीत हूँ। धोखा हूँ।

'मेरा दिल मत तोड़ो अंजू।'

यही सोचते-सोचते तो यह दिन देखना पड़ा है।

'यही प्रेम-भरा दिन हमारी जिन्दगी में एक नया मोड़ लाएगा।'

'होगा तो नया मोड़ ही—लेकिन अच्छा होगा या बुरा इसका फैसला समय ही करेगा।'

'क्या दुनिया में प्रेम के सिवा और कोई काम नहीं।'

'क्या······क्या कहती हो अंजू ?'

'इस प्रश्न का उत्तर चाहिए।'

'इसके उत्तर देने से पहले मेरा भी एक प्रश्न है।'

'क्या ?'

'क्या प्रेम पाप है '

'मैंने तो कभी नहीं कहा।'

'तो अगर मैंने प्रेम किया तो वह भी एक काम था।'

'मैं कुछ और पूछना चाहती हूँ।'

'पूछो।'

'बुरा तो न मानोगे ?'

'अंजू की बात का बुरा मानने वाला चन्दन नहीं होगा

'तुम्हारी यही बातें तो मेरी जबान पर ताला लगाये रहती हैं। मैं जो कहना चाहती हूँ कह नहीं पाती। तुम प्रेम पथ पर इतना आगे बढ़ गये हो कि एक पग भी पीछे हटना कठिन होगा।

'मगर मैं पीछे हटूँगा तब ना।'

'तुम नहीं हटोगे, मुझे हटना पड़ेगा।'

'क्यों ?'

'इस क्यों का उत्तर सुनने की हिम्मत भी है तुममें ?'

'मौत से ज्यादा बुरी खबर तो नहीं हो सकती ?'

'मरना तो कोई बुरा नहीं अगर एक बार हो लेकिन ऐसी खबरें सुन सुन कर तो बार-बार मरना पड़ता है।'

अंजू ?'

'अगर मैं यह कहूँ चन्दन कि मैं तुमसे प्यार नहीं करती।'

'यह कैसे हो सकता है। यह असम्भव है।'

'यह हो सकता है। यह सम्भव है।'

'हूँ ऊँ।'

'हाँ तुम मुझे भूल जाओ। यह भूल जाओ कि अंजू नाम की कोई लड़की तुम्हें कभी मिली थी। भूल जाओ कि तुमने कभी उसे प्यार किया था।'

'क्या सब कुछ तुम हृदय से कह रही हो ?

'हृदय मेरा अपना होता तो बात ही क्या थी। यह दिल नहीं पत्थर का टुकड़ा है। यहाँ प्यार नहीं पनप सकता चन्दन! कभी नहीं पनप सकता।'

'क्यों ?'

'केवल इसलिए कि मैं भारतीय नारी हूँ। मुझसे यह अधिकार छीन लिया गया है।'

'किसने छीना ?'

'हमारे समाज ने, हमारी सभ्यता ने।'

'यह बात मेरी समझ से तो बाहर है।'

'इसे इस तरह समझ लो कि तुमसे प्यार का हक केवल तुम्हारी ब्याहता बीवी को होगा। किसी दूसरे को नहीं।'

'अंजू !' वह तड़प उठा।

'वह तड़प उठा। दर्द की एक टीस सीने में हुई। उसे लगा जैसे आकाश नीचे आ गिरा हो। धरती का सीना फट गया हो। वह भंवर में फंसकर चक्कर खा रहा हो। यह दुनिया घूम रही हो। वह सागर में डूबता जा रहा हो। कोई उसे निकालने वाला न हो, कोई उसकी आवाज सुनने वाला न हो। वह पानी से निकली मछली की तरह तड़प उठा।'

'चन्दन !'

वह मौन रहा।

'बोलते क्यों नहीं चन्दन, तुम्हें क्या हो गया ?'

'फिर वह कुछ बोल न सका।'

'बोलो तो सही।'

'क्या बोलूं। बोलने का अब मुझ में साहस ही कहां रहा ! काश उस दिन तुम मुझे मौत के मुँह से न निकाल लातीं तो आज यह जिन्दा मौत तो न देखनी पड़ती। मैं भी कितना अभागा हूँ कि जितना ही जिन्दगी को गले लगाने का यत्न करता हूँ उतना ही यह जिन्दगी मुझे ठुकराती है। जब मौत को गले लगाने गया तो उसने भी धक्का दे दिया।'

'मैं जानती हूँ कि तुम्हें पीड़ा पहुँचाने की मैं ही जिम्मेदार हूँ।'

'अपना दुर्भाग्य छुपाने के लिए मैं तुम्हें दोष क्यों दूं ? मैं तो सचमुच अभागा हूँ। जब प्यार चाहा तो धुतकारा गया। जब चैन चाहा तो बेचैनी मिली।'

'मुझे क्षमा करो कि मैंने तुम्हारा दिल तोड़ा है। मुझे पता नहीं था कि प्यार में तुम इतना आगे बढ़ आए हो। मैंने तुम्हें आगे बढ़ने से रोकना चाहा, तुम्हें समझाना चाहा लेकिन अवसर ही नहीं मिला। मुझे मालूम था कि इसका नतीजा खराब होगा लेकिन चाहते हुए भी मेरी आवाज मेरे होंठों पर न आ सकी।'

'अंजू, मैं कह चुका हूँ कि यह मेरा दोष है, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। मैंने प्यार करने से पहले पूछा ही कब कि तुम कौन हो ? क्या करती हो ? तुम्हारी जिन्दगी कैसी है ?'

'लेकिन क्या प्यार करने से पहले यह बातें पूछनी जरूरी होती हैं। यह बात मेरी समझ में नहीं आती।'

होती हैं ! यह बात मेरी समझ में नहीं आती ।'

'अब मुझे क्षमा करो चन्दन !'

'क्षमा तो मुझे माँगनी चाहिए अंजू ! मैंने तुम्हारे पति-वृत धर्म को तोड़ने का यत्न किया । मैंने किसी की अमानत लूटना चाहा। अपराधी तो मैं हूँ जो एक शादी शुदा स्त्री से प्यार करने लगा। मुझे तो विधाता भी क्षमा नहीं करेगा। तुम औरत नहीं देवी हो ।'

'हम इस रिश्ते के अलावा क्या और रिश्ते बांध कर नहीं रह सकते ?'

'क्यों नहीं रह सकते ? आज से हम प्रेम के पवित्र बंधन में बंध जाते हैं ।'

'कौन सा ?'

'दोस्ती का बंधन ।'

'तुमने तो मेरे मुँह की बात छीन ली। मुझे दुनिया में सब कुछ मिल गया। मुझे आज तक कोई मित्र नहीं मिला था। इसके लिए मेरी आत्मा भटकती फिरती थी। मेरा दिल तड़पता था लेकिन अब तुम मेरी दोस्त हो—

उसने अंजू का हाथ पकड़ कर चूम लिया। इस चूमने में अब कोई बुराई नहीं थी। कोई बुरी भावना नहीं थी। प्यार तो था लेकिन विलासता से दूर।

'चन्दन !'

'हां अंजू ! अगर हम पति पत्नी बन के नहीं रह सके तो दो दोस्त बन के तो सारी उम्र रह सकेंगे। क्या लड़का लड़की मित्र बनकर नहीं रह सकते ।'

'अब इस पवित्र सम्बन्ध को कोई विछेद नहीं कर

सकत। आशा है अब तुम पहले की तरह प्यार करते रहोगे ?'

'पहले से भी अधिक।'

'बाबू साहब–बाबू साहब, चाय पीलो।' किसी पहाड़ी ने बाहर से द्वार खटखटाया। और बात वहीं टूट गई।

१४

सब कुछ बदल गया।

परिस्थिति बदल गई। विचारधाराएँ बदल गईं। जिंदगी बदल गई और जमाना बदल गया।

जब वह होटल पहुँचा तो ऐसा लग रहा था कि कोई बहुत बड़ी बाजी हार गया हो लेकिन बदले में और बाजी

जीत ली हो। हाल में वैसी ही चहल-पहल थी। चारों ओर खुशियाँ बिखरी थीं।

रात का खाना उसने अंजू के साथ ही खाया। खाते-खाते बातें भी चलती रहीं लेकिन आज की बातें और पिछली बातों में कितना अन्तर था।

'होटल से बाहर निकल जब अंजू जाने लगी तो जाने कैसी चुभन सी होने लगी। न जाने क्यों उसका दिल डूबने लगा। दिल की धड़कन तेज हो गई।

'अंजू से कुछ विचित्र सम्बन्ध स्थिर हो गया था। सारा दिन बातों में बीत गया। कभी माल पर घूमते, कभी किसी होटल में और कभी स्कैंडल प्वाँइट पर।

संध्या रिंक में गुजारी।

अब रात की तन्हाई उसे डस रही थी। आज की रात भी बदली-बदली सी लग रही थी अंजू की याद भी उसे बेचैन कर रही थी। लेकिन उसकी याद में पहले जैसी चुभन नहीं थी।

अब तो केवल एक मानसिक लगाव था।

कल तक वह प्रेमिका थी और आज मित्र !

केवल मित्र

एक प्रश्न बार-बार उसके मन पर हथोड़े की चोटें मारता था। अगर अंजू विवाहित है तो वह अकेली शिमला क्यों आई है ? इसके पीछे कौन-सा भेद है ? अंजू एक स्वतंत्र विचार वाली लड़की सही लेकिन वह किसी की पत्नी है तो इस तरह अकेली शिमला में कैसे घूम रही है।

'हो सकता है उसका पति कहीं दूर रहता हो

या······या फिर······

यहाँ उसके विचारों का प्रवाह रुक-सा गया। इन प्रश्नों का उसके पास उत्तर नहीं था और न ही अंजू से कुछ पूछने का साहस ही होता था। यह बातें तो अंजू से पूछनी चाहिए थी। जब उसे मित्र बना लिया तब तो पूछने में हर्ज नहीं।

जाने से पहले उससे यह बातें मालूम करनी हैं ऐसा निश्चय उसे करना पड़ा।

जाने से पहले—लेकिन जाना कहाँ होगा ?

सहसा उसके विचारों की धारा बदल गई। वह किसी गहरे सोच में पड़ गया। यह बात तो उसने सोची ही नहीं कि वह जाएगा कहाँ ? अंजू के प्यार में उलझकर वह सब कुछ भूल गया था और भूलता क्यों नहीं ? शिमला आकर वापस जाने का तो ख्याल भी नहीं आया था। वापसी की सब आशायें तो समाप्त हो चुकी थीं।

मनुष्य भावनाओं की धारा में बहकर क्या कुछ कर डालता है लेकिन जब होश आता है तब पता चलता है कि वह कितनी बड़ी गलती कर बैठा था।

आज जब उसने वापस जाने की बात सोची तो एक एक करके सब चीजें सामने आने लगीं।

माँ का उदास चेहरा !

वह इतने दिनों से अपने बेटे के गम में घुल-घुलकर पागल हो गई होगी। पीट-पीट कर उसने अपनी छाती लाल कर ली होगी।

वह माँ जो उसे देखे बिना रोटी तक नहीं खाती थी उसके दिल पर भला क्या बीती होगी ! उसकी आँखों के सामने अंधकार ही अंधकार होगा। उसका जवान बेटा जो गुम हो

हो गया है।

उफ ! वह कितना पागल हो गया था घर से भागते समय।

पिता जी !

जिनके बुढ़ापे का सहारा केवल मैं था, उनके दिल पर भला क्या बीतती होगी। वह पागलों की तरह शहर भर ढूढ़ते फिरते होंगे। कहाँ-कहाँ उन्होंने उसकी तलाश में धक्के खाए होंगे। रो-रो के उनकी आँखें सूज गई होंगी।

हे भगवान !

उसने अपना सिर थाम लिया।

वह क्या कर बैठा था !

अच्छे खासे घर में कुहराम मचा दिया। दुर्भाग्य ने तो उसका पीछा नहीं छोड़ा। इतनी बड़ी दुनिया में उसे कहीं शाँति नहीं। जिन्दगी उसे पग-पग पर धोखा देती रही। और वह धोखा खाता रहा।

इन्हीं तमाम बातों से उकता कर वह भागा था। अब फिर यही बातें उसके मत्थे चढ़ेंगी। वही परिस्थितियाँ होंगी वही दशा होगी। उसी वातावरण में वह फिर फंस जाएगा।

अब इस जगह रखा ही क्या है, वह अब इन वेदनाओं की चिता में जलता क्यों है ? अब उसकी बीमार और बेचैन आत्मा को सहारा कौन देगा ?

तो क्या अब उसकी दुखी आत्मा को कहीं शन्ति नहीं मिलेगी ?

अब अंजू भी उसके लिए कुछ नहीं कर सकती। यह ठीक है कि अंजू उसकी मित्र बन गई है।

लेकिन इस जवानी की उम्र में उसे मित्र की बजाए प्रेमिका का प्यार चाहिए !

ऐसी प्रेमिका का प्यार चाहिए जो उसकी उमड़ती हुई इच्छाओं को आत्मा की बेकली को, दिल की धड़कनों को और प्यासे होंठों को संतोष दे सके, तृप्ति कर सके।

इन बातों के लिए उसे अब अंजू की जरूरत नहीं। अंजू का यह रूप उसको कुछ नहीं दे सकता जो उसे चाहिए।

उफ ! वह तो अब केवल छला जाने के लिए ही जीवित रह गया है !

आत्मा की विह्वलता बढ़ती रही सिगरेट पर सिगरेट फूँकता रहा। सिगरेटों की कितनी डिब्बियाँ खाली हो गईं। धूयें से कमरा भरता रहा मगर नींद तो जैसे उसके लिए रूठी हुई थी।

पिछली रात भी वह सारी रात सो नहीं सका था।

आज की रात तो पिछली रात से अधिक कठोर थी।

एक ही रात में वह सब कुछ हार गया था।

खुशी देकर आँसू ले लेना – यह प्रेम का ही परिणाम है।

इस खूबसूरत मुहब्बत का परिणाम कितना भयानक है। लेकिन यह मुहब्बत तो केवल एक हीओर से हुई थी।

रात इसी तरह भागती रही।

वह कल्पनाओं के सागर में गोते लगाता रहा।

प्रेम की सुलगती चिता पर उसका अंग-अंग भस्म होता रहा।

इतनी बड़ी दुनिया में कोई नहीं था जो उसकी आत्मा को तसल्ली देता, जो उसके आँसुओं को पोंछता।

न जाने कितनी करवटें बदली लेकिन नींद तो फिर भी रूठी रही।

इसी तरह सुबह हो गई।

होटल के बैरे ने बेड टी के लिए दरवाजा खटखटाया।

'शुक्र है भगवान, कोई तेरा बन्दा देखने तो आया।'

वह उठकर आइने के सामने अपनी आँखों को मसलता हुआ गया। पपोटों में जलन थी। आँखें लाल हो रही थी। सर भारी था। सारी रात आँखों में कट गई थी।

चाय का गरम-गरम प्याला उसने जल्दी से होंठों में लगा लिया। जल्दी में उसके होंठ जल गए मगर दिल की जलन होंठों की जलन से कहीं अधिक थी।

'क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ?'

दरवाजे पर खड़ी अंजू को देख वह हैरान रह गया। सुबह ही सुबह!

हे भगवान, यह क्या देख रहा हूँ? कहीं यह भरम तो नहीं? कहीं यह सपना तो नहीं?' वह बड़बड़ा उठा।

'क्या दिन में भी सपने देखते हो चन्दन?'

'कुछ ऐसा ही लगता है। इसे मेरा सपना समझो, या मनकी बौखलाहट। आओ, आओ, अन्दर तो आओ।

उसने बैरे को बुला कर चाय का आडर दिया।

'आज सुबह ही सुबह सूर्य की किरणों के साथ तुम अन्दर कैसे आ गई?'

'क्या मेरा आना वुरा लगा है?'

फिर वह अंजू की मदमस्त आँखों में खो गया। उसकी खुली स्याह जुल्फें, उसकी सुन्दरता बढ़ा रही थीं। सफेद साड़ी

में लिपटी वह कितनी सुन्दर दिखाई दे रही थी।

यह क्या ? वह अंजू को देख एक बार फिर दीवाना होता जा रहा है। उसका दिल फिर तेजी से धड़कने लगा।

चन्दन, दरअसल मुझे रात भर नींद नहीं आई।' अंजू ने अपनी मदमाती आँखों को झपकाते हुए कहा।

'नींद तो मुझे भी नहीं आ सकी अंजू ! ऐसा लगता है कि हम दोनों जीवन की बाजी हार गए हैं। काश कोई दिल की गहराइयों में झाँककर देखता !

'आज तुम फिर भटक रहे हो चन्दन !'

'अब मैं जीवन में कभी नहीं भटकूँगा। अब तो बुझे दीये की तरह शांत जलता रहूँगा, सुलगता रहूँगा। रात भर मैं सोचता रहा और मुझे लगा कि मैं अब इतना आगे बढ़ गया हूँ कि पीछे आना बड़ा कठिन है।'

'फिर ?'

'फिर क्या होगा, यह मैं समझ ही नहीं सका। मिलन का सम्बन्ध तो है ना, लेकिन प्रेम किसी बंधन को तो नहीं देखता यह तो प्रकृति की देन है। यह सम्बन्ध हमने बनाया है। इसका मतलब यह है कि हमने अपनी विचार-धाराओं की गति बदल दी लेकिन प्रेम तो प्रकृति की उपज है, वह भला खत्म कहाँ हो सकती है !'

'कुछ भी हो चन्दन, अब तो तुम मुझे भूल ही जाओ। आज मैं वापस जा रही हूँ।'

'वापस।' वह सहसा घबरा उठा।

'हाँ, रात मुझे एक तार मिला है।'

'कहाँ से ?'

'अस्पताल से।' कसौली अस्पताल से।'

'अस्पताल।'

'हाँ, यह भी तो एक भेद है जो आज तक मैं तुम से कह नहीं सकी लेकिन आज जाने से पहले मैं तुम्हें सब कुछ बताने आगई हूँ। हो सकता है हम लोग अब फिर कभी मिल ही न सकें। आज बहुत सारी बातें करने को दिल चाहता है।'

कहो अंजू, कहो। बहुत सारी बातें कहो। हो सकता है यह जिन्दगी अब रहे न रहे।'

'यह बात कहकर मेरा दिल न तोड़ो चन्दन। मेरी आत्मा में एक चुभन होने लगती है। मुझे भय होने लगता है कि कहीं मेरा पतिवृत धर्म टूट न जाए। इसी डर से तुम्हें मिलते ही कह दिया ताकि अगर कभी भटकूँ तो तुम मुझे बचा सको।'

अंजू, तुम कभी ऐसी आशा न रखना कि मैं तुम्हारी पवित्रता पर आँच आने दूँगा। मैंने तुम्हें प्यार जरूर किया है लेकिन वह प्यार इस लिए नहीं कि तुम्हारे शरीर को रौंद सकूँ, तुम्हारी आत्मा को कुचल सकूँ। वह प्यार नहीं विलासता है, विलासता तो कहीं और भी पूरी की जा सकती है लेकिन प्यार तो हर जगह नहीं मिल सकता।'

'आज हम लोग बिछुड़ भी तो रहे हैं।'

'यह तो एक दिन होना ही था।'

'जाने से पहले एक छोटी सी कहानी तो सुन लो।'

'कहो।'

'चन्दन, असली जिन्दगी में तो मैं तुमसे कहीं अधिक दुखी हूँ अन्तर केवल इतना है कि इस दुनिया से घबराकर तुम आत्महत्या करने चले आए और मैं आत्महत्या करने के

बजाए पहाड़ पर आ गई। मैं वह अभागी औरत हूँ जिसकी शादी के छः माह बाद ही उसके पति को तपेदिक हो गया।

अंजू।' वह घबराकर बोल उठा।

'हाँ चन्दन। मैं कितनी आभागिन हूँ, कितनी दूखी हूँ, कोई नहीं जानता। कोई सोच भी नहीं सकता कि जिन्दगी ने मुझसे कितना बड़ा बदला चुकाया है।'

'अब क्या हाल है तुम्हारे सुहाग का ?'

'क्या बताऊँ ? यह सब कुछ जानने के लिए सीने पर पत्थर रखना पड़ेगा कोई छोटा सा दुख नहीं जिसे मैं दो शब्दों में बता दूँ। औरत की सुन्दरता देखकर लोग रीझ उठते हैं। मर्द के सीने की धड़कने जवान हो जाती हैं, कोई नहीं जानता कि हमारे सीने में कितनी आकांक्षाएँ तड़प रही हैं, कितनी अभिलाषाओं के दम घुट रहे हैं। कितना दुख सीने को छलनी बना रहा है। इस दुनिया का मालिक जब दुख बाँटने लगा तो औरत की सुन्दरता देखकर वह भी इतना प्रभावित हुआ कि सारे दुख और पीड़ा उसी की झोली में डाल दिया।'

'सुख दुख के लिए औरत और मर्द को अपना ही पल्ला भारी दीखता है। तुम्हारी बातें बता रही हैं कि तुम बहुत दुखी हो। अगर मैं तुम्हारे किसी काम आ सकूँ तो मुझे खुशी होगी।

'नहीं चन्दन, मैं तुम्हें किसी तरह का दुःख नहीं देना चाहती मुझे तो भगवान जाने अभी कहाँ कहाँ भटकना होगा। इन अस्पतालों के चक्कर काटने होंगे। जब तक वह ठीक नहीं होगा।'

'तुम अकेली कैसे यह सब झेल सकोगी ?'

'झेलना ही पड़ेगा। जो दुख भगवान ने दिया है या अपने नसीब में लिखा है। वह तो भुगतना ही पड़ेगा।'

'नसीब नाम की कोई चीज नहीं इस दुनिया में। यह सब तो एक फ्राड है, धोखा है। एक छल है जो इन्सान खाता रहता है। जब वह परिस्थितियों के आगे हार जाता है तो उसे नसीब के हवाले कर देता है। भाग्य और नसीब इन्सान स्वयं ही बनाता है और स्वयं ही मिटाता है। इन्सान की बेबसी और मजबूरियों का नाम ही नसीब है, भगवान है।'

'ठीक है चन्दन, मगर क्या करें। मजबूरियों के आगे जब इन्सान बेबस हो जाता है तो नसीब को ही कोसना पड़ता है यह हमारे देश के करोड़ों इन्सानों की आवाज है जो परिस्थितियों के सताए हुए हैं। जिन्हें भूख और गरीबी ने तग कर दिया है। जो बेचारे इन्हें दूर नहीं कर सकते वह तो नसीब का दोष देंगे ही।'

'ऐसा कहने के लिए उन्हें विवश किया गया है।'

'हाँ और इन्हें, इन बेबस लोगों को किसी ऐसे इन्सान की जरूरत है जो इन्हें ठीक राह दिखा सके। गंदी बस्तियों में रहने वाले लोग, गाँव के वासी, गरीब मजदूर, जिनका इस मंहगाई ने कचूमर निकाल दिया है, जो रोटी को भी तरसते हैं। जिन्हें अपने बच्चों को पालने के लिए दूध की कुछ बूदें भी नसीब नहीं। उनको टीवी नहीं होगी तो क्या होगा! वह बेचारे इस महारोग का इलाज भी तो नहीं करवा सकते और बिलख-बिलख कर मर जाते हैं, तड़प-तड़प करप्राण त्यागते हैं। जो आदमी रोटी के लिएपरेशान हो वह

भला दवाइयाँ कहाँ से खरीद सकता है !

इन सरकारी अस्पतालों की लाइनों में लगने की मरीज में हिम्मत ही कहाँ है ! हमारे देश में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो उन दवाइयों को जो सरकार गरीबों के लिए फ्री देती है, ब्लैक में बेच देते हैं।'

'उफ चन्दन, हम कहाँ पहुँच गए, हमारा देश कहाँ पहुँच गया है। इस देश को प्रेम और प्यार की जरूरत नहीं, इन्सानियत के प्रचार की जरूरत है। इन्सान को इन्सान बनाने की जरूरत है जो दौलत के नशे में पत्थर हो गया है।

'चन्दन। तुम्हारी मंजिल यहाँ खत्म नहीं हुई। यहाँ से तुम्हारी नई जिन्दगी शुरू होती है। इस देश के भूखे, नंगे और गंवारों को किसी ऐसे की जरूरत है जो उनके घावों को भरने में सहायता दे। यह दुखभरी आँखें, पीले चेहरे, पिचके मैल, सूखी हड्डियाँ किसी ऐसे इन्सान को पुकार रही हैं जो उन्हें जीवन दान दे सके।'

'मगर मैं अकेला क्या कर सकता हूँ अंजू !'

'तुम अकेले कहाँ हो ? तुम्हारे साथ हजारों और लाखों होंगे। यह देश ज्वालामुखी के मुँह पर खड़ा है। यह राष्ट्र तबाही के रास्ते पर खड़ा है आज दौलत की भूख ने हम लोगों को देश-द्रोही बना दिया है अगर यह बात न होती चन्दन तो इस देश में विदेशी मिशनरी के लोग भारतीयों को हर साल ईसाई नहीं बनाते। यह दोष उन मिशनरियों का नहीं जितना अपने देश के दौलत के पुजारियों का है। वह लोग तो हमारी विवशता का फायदा उठाते हैं।

'एक ओर वह देश हैं जो पैसे के जोर से अपने धर्म को

दुनिया के कोने-कोन में फैला रहे हैं दूसरी ओर हमारे देश में पूँजी पतियों की सरकार बनाकर जनता का खून चूसरहे हैं।'

'तुम्हारी इन्हीं बातों ने तो अंजू, मेरी आंखें खोल दी हैं। तुम्हारे सीने में कितना दर्द छुपा है अपने राष्ट्र और देश के लिए !'

'यह सब कुछ मुझे इन्हीं दुखों ने सिखाया है।'

'तुम आदर्श नारी हो। तुमतो अंधेरे रास्ते की रोशनी हो।'

'मैं कुछ भी नहीं चन्दन ! अगर तुम मुझे खुश देखना चाहते हो तो मुझे भूल जाना और कभी आत्महत्या के बारे में मत सोचना।'

'मैं जीऊँगा अंजू तुम्हारे लिए और तुम्हारे इन आदर्शों के लिए अगर तुम मेरे साथ न होगी तो तुम्हारी स्मृति की छाया तो होगी ही।'

'आज मैंने सब कुछ खोकर सब कुछ पा लिया। अब मैं जा रही हूँ वापस कसौली। वहाँ डाक्टरों ने मुझे अस्पताल में रहने की अनुमति नहीं दी लेकिन मेरे दिल को चैन कहाँ। तुम्हारे साथ कुछ दिन रहकर गम का बोझ हल्का हो गया था। रात के तार से यही जान पड़ता है कि उनकी दशा अच्छी नहीं।'

'दशा अच्छी नहीं !'

'हाँ, लाख कोशिशों पर भी उनकी दशा नहीं सुधरी क्योंकि वह भी बड़े भावुक हैं। अपने दुख के बजाए इस देश के करोड़ों आदमियों के दुःख के बारे में सोचते रहते हैं। वह कहते हैं मैं एक टीबी का मरीज अगर कसौली आगया तो क्या हुआ इस देश में लाखों आदमी इस रोग से केवल इसलिये मर जाते हैं कि वह इलाज नहीं करा सकते।'

'उफ अंजू ! तुम्हारी कहानी कितनी दर्दनाक है !'

'अब सब कुछ भूल जाओ चन्दन, सब कुछ। और मुझे अनुमति दो।'

यह कहकर वह जाने लगी तो उसकी आँखों से आँसुओं की कुछ बूंदें टपक पड़ी जिन्हें वह पी जाने का असफल प्रयत्न करती रही।

अगर कभी मेरी जरूरत पड़े तो मुझे सच्चा साथी समझकर याद कर लेना। यही मेरी अंतिम इच्छा है।' उसने अपना पता एक कागज के उपर लिखकर दे दिया।

'अच्छा विदा चन्दन।'

उसे लगा कि बात के साथ उसके आँसुओं की धार तेज हो गई हो।

१५

जो आग अंजू ने लगाई थी उसे आँसुओं ने बुझा दिया। अब आँसुओं की लगी आग कौन बुझाए। प्रेम की आग बुझती भी तो नहीं। उसने लाख चाहा कि अंजू की याद को अपने से सदा के लिए अलग कर दे—होटलों में बैठ कर, मित्रों की मण्डली में, पुस्तकों में—लेकिन वह भूलने वाली चीज थी

भला ! वह जितना भुलाने की कोशिश करता उतनी ही तेजी से वह याद आती।'

शिमला से वह देहली आ गया।

घर वाले अपने खोए बेटे को पाकर अत्यन्त खुश हुए। माँ ने अपनी गोद में बिठा कर बेटे की बलाएँ लीं। पागलों की तरह सीने से लगा कर प्यार करती रही। माँ की भटकती हुई ममता अपने जिगर के टुकड़े को पाकर विभोर हो गई।

'तू कहाँ चला गया था बेटे। तू कितना कमजोर हो गया है। इतने दिनों क्या खाने को नहीं मिला ? तू ही तो इस घर की रोशनी है मेरे लाल !'

माँ उसके सिर पर हाथ फेरती रही। प्यार करती रही। खुशी के मारे उसकी आँखों से आँसू निकल आए।

यह आँसू भी कैसे विचित्र हैं ! अधिक खुशी हो तो भी वह निकलते हैं। दुख हो तो भी निकल आते हैं। यह आँसू तो आत्मा के आभूषण मालूम होते हैं।

बाप भी बोल रहा था—'तुझे हो क्या गया। तू हम लोगों से रूठ क्यों गया। क्या तुझे अपने बूढ़े बाप का भी ख्याल नहीं आया। तू मेरे बुढापे की लाठी बनने के बजाए मुझे धक्का देकर चला गया था।'

'नहीं पिता जी, यह बात नहीं।'

'और क्या कहूँ बेटा। मैं तो वह बदनसीब बाप हूँ जो अपने इकलौले बेटे को खुश नहीं रख सका। मेरा जवान बेटा मुझसे यूँही रूठ कर चला गया जैसे मैं उसका कुछ लगता ही नहीं था। तुझे मालुम नहीं कि तेरे जाने के बाद हम लोगों पर

क्या गुजरी। काश ! इन दीवारों के मुँह में जबान होती तो तुझे यह बताती कि तेरी माँ तेरे जाने के बाद किस तरह बिलखती रही। ममता किस तरह तड़पती रही। कितने आँसू उसने तेरी याद में बहाए ! किस तरह उसने अपना सीना पीट-पीट कर लाल कर लिया।'

'बस करो पिता जी, बस करो।'

'क्या बस करूँ। इस घर की बरबादी की छोटी-सी झलक तुम्हें दिखाई है। तुम्हें शायद पता नहीं कि तुम्हारे जाने के बाद सात दिन तक इस घर में चूल्हा तक नहीं जला, जलता भी कैसे ! जिस घर का चिराग बुझ रहा हो उस घर में खाने की बात भला किसे सूझती !

'मुझसे भूल हो गई पिताजी, मुझे क्षमा कर दो।'

वह बाप के पाँव पर गिर गया।

'क्षमा तो हम लोगों को माँगनी चाहिए। हमसे कोई भूल हो गई जिसकी वजह से हमें इतना दुख उठाना पड़ा। जिसकी वजह से तुम्हारी माँ भटकती रही, मैं जगह-जगह धक्के खाता रहा। ज्योतिषियों से पूछता रहा। तुम्हारी माँ सुबह से शाम तक देवी देवताओं के सामने नाक रगड़ती रही। यह तेरी माँ नहीं कोई देवी है। उसी की दुआओं ने तुम्हें बचा लिया है। जा, उसके पाँव में गिर !'

'माँ, मेरी माँ, मुझे क्षमा कर दो। मैं भूल गया था भटक गया था, पागल हो गया था।'

वह माँ के पाँव पर गिर पड़ा।

'नहीं बेटे नहीं। तेरी जगह वहाँ नहीं मेरी छाती में है।

माँ ने उसे उठाकर सीने से लगा लिया।

'अरे, तेरा शरीर तो गरम हो रहा है। तेरा माथा तप रहा है। तुझे बुखार है। चल लेट चारपाई पर। मैं तेरे लिए गरम-गरम दूध लाती हूँ।'

'नहीं माँ, मैं ठीक हूँ। तू ही कमजोर हो गई है। चलो, मैं तुम्हारे पैर दबा हूँ। तुम अब ठीक हो जाओगी माँ।'

'मैं तो अब बिल्कुल ठीक हो गई मेरे बेटे। मुझे अब कोई दुख नहीं। उस मुरली वाले ने मेरे सारे दुख हर लिए। अब तो मैं जल्दी ही पाठ कराऊँगी। ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगी।

'अच्छा-अच्छा, पहले अच्छी तो हो जाओ। फिर जो तुम्हारे जी में आए करना।'

'अब मुझे छोड़ के तो नहीं जाओगे?'

'नहीं माँ नहीं, कभी नहीं जाऊँगा।'

कई दिन तक माँ ने उसे घर से बाहर नहीं निकलने दिया। बिस्तर पर लिटाए रखती थी। ताजा फल और दूध देती रही। उसका ख्याल था कि मेरा बेटा बहुत कमजोर हो गया है। माँ की ममता का पता उसे घर आने पर लगा था।

एक दिन बातों ही बातों में उसने माँ से कह दिया कि जीवन दान देने वाली एक लड़की थी।

'वह कौन थी।'

'उसका नाम अंज है माँ।'

'भगवान भला करे उसका जिसने मेरे बेटे की जान बचाई। कहाँ है वह, उसे साथ क्यों नहीं लाए?'

'वह साथ नहीं आ सकती थी माँ।'

'क्यों?'

'बस यूँही। वह नहीं आ सकती थी। अगर वह आ

जाती तो घर में कितनी रौनक होती भला !'

'तो वह तुम्हें पसन्द है ?'

'मुझे तो पसन्द है लेकिन···'

'लेकिन क्या ? क्या उसके माँ-बाप नहीं मानते ? मैं आज ही तुम्हारे पिता जी को उनसे मिलने के लिए भेजती हूँ। उनका पता बता। तेरी खुशी से ज्यादा मुझे कोई चीज इस दुनिया में प्यारी नहीं।

'नही माँ यह बात नहीं, यह बात नहीं। अंजू बहुत अच्छी लड़की है। माँ-बाप की बात तो नहीं। सब भाग्य का खेल है। वह मेरी होते हुए भी मेरी नहीं हो सकती। मैं उसे चाहते हुए भी चाह नहीं सकता। वह देवी है। उसे पूजा जा सकता है क्योंकि उसने तुम्हारे बेटे के प्राण बचाए हैं।'

माँ ऐसी दार्शनिक बात समझ न सकी वह बोल पड़ी—

'मैं अपने बेटे के लिए अंजू से भी सुन्दर बहू लाऊँगी।'

'नहीं माँ, मुझे कोई बहू नहीं चाहिए। मुझे कोई लड़की नहीं चाहिए। मैं ऐसे ही ठीक हूँ।'

'नहीं बेटे, तुम्हारी यह उदासी मुझसे देखी नहीं जाती। मैं जानती हूँ, बहू आने के बाद तू जरूर सुखी हो जाएगा।'

'क्या पता माँ, कि बहू आने पर मैं सुखी हूँगा या दुःखी। जो काम जिन्दगी का सुख समझ कर शुरू किया था वही दुख बन गया।'

अब सब दुख दूर हो जाएँगे। तेरे पिताजी कह रहे थे कि चन्दन की नौकरी का प्रबन्ध हो गया है।'

'नौकरी की बात मत करो माँ। मैं नौकरी नहीं करना चाहता मैं वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ।'

'जीवित रहने के लिए इन्सान को पता नहीं क्या कुछ करना पड़ता है। अभी तो यह कोई सरकारी नौकरी नहीं जो तू परेशान हो रहा है। यह क्लर्की भी नहीं है। वहाँ तू मैनेजर बनकर जाएगा।'

'सच माँ।'

'हाँ बेटा, तेरे पिता जी आएँगे तो पूछ लेना।'

माँ से बातें करके वह गम हल्का करता रहा। वह जानता था कि जीने के लिए उसे कुछ करना ही होगा। अंजू की बात तो उसे माननी है। और फिर एक दिन वह इस फर्म में मैनेजर बनकर आ गया।

जीवन की इस नई यात्रा में उसने उपन्यास लिखना शुरू किया। पहला उपन्यास उसने एक असफल वैज्ञानिक के जीवन पर लिखा जो वैज्ञानिक बनने के लिए दुनिया भर में ठोकरें खाता रहा।

इस उपन्यास को लोगों ने बहुत पसन्द किया। पसन्द क्यों न किया जाता। यह उपन्यास उसने अंजू की स्मृति में लिखा था। सच्ची कहानी तो कभी असफल नहीं होती। उसका नाम उसने रखा था—'स्मृति के छाये।'

वह दिन उसके जीवन का भाग्यशाली दिन था जिस दिन उसे अंजू का पत्र मिला। लिखा था।

अच्छे चन्दन

नमस्ते

आशा है आप सकुशल होंगे।

सबसे पहले तो अपना उपन्यास स्मृति के छाए की सफलता पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करो। मुझे तो

सपने में भी यह आशा नहीं थी कि तुम किसी दिन इतना अच्छा उपन्यास लिख सकोगे। एक वैज्ञानिक के जीवन को तुमने जिस तरह समाज के सामने रखा है वह केवल तुम्हीं कह सकते थे। आजकल के लेखक नहीं जो रहते तो महलों में हैं और बातें मजदूरों और किसानों की करते हैं। या वह जो मदिरा में मस्त सड़कों पर आवारा घूमते हुए समाज सुधार के नारे लगाते हैं। कोई उनसे पूछे, समाज क्या है ?

समाज तो स्वयं हम हैं। कुछ मनुष्यों के मिलने और इकट्ठे रहने का नाम समाज है। इस समाज में जब हमी गंदगी के कीड़े छोड़ते फिरेंगे तो हमारे इस समाज का क्या परिणाम होगा ?

आज हमारे समाज को ऐसे लेखकों की आवश्यकता है जो भूखे मरते लोगों के दुखों को जान सकें।

आज कमर तोड़ मंहगाई ने लोगों को परेशान और बेहाल कर रखा है। खाने की कमी ने हजारों तरह की बीमारियों को जन्म दिया है। इस देश में सौ में नब्बे बच्चे ऐसे मिलेंगे जिन्हें दूध नहीं मिलता। यह बच्चे बीमारियों का शिकार नहीं बनेंगे तो क्या होगा। जिनका बचपन ही भूखा है उन्हें जवानी कहाँ से आएगी !

आज हमारे समाज में केवल हाय पैसा—हाय पैसा मचा हुआ है। जिस समाज में इन्सान को छोड़कर दौलत की पूजा हो, वह समाज अधिक देर खड़ा नहीं रह सकता। वह तो एक बारूद के ढेर पर खड़ा है। जब भी किसी ने जरासी आग दिखाई कि वह भड़क उठेगा और उसके बाद इस समाज में केवल आग ही आग दिखाई देगी।

आज इस समाज में चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है। कुछ लोग बेकारी से भूखे बिलख रहे हैं कुछ काम करते हुए भी परेशान हैं क्योंकि उन्हें जितना मिलता है, पूरा नहीं पड़ता। अपने परिवार का पेट नहीं भर सकते, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते। इसी चिन्ता में घुल-घुल कर मर रहे हैं। चिन्ता की चिता पर जलते हुए इन्सान बीमारियों का शिकार नहीं होंगे तो क्या होगा ?

दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी समाज में हैं जिनके पास असीमित पैसा है। अपने भाइयों का खून चूस-चूस कर उन्होंने इतना धन एकत्र किया है। वह बड़े-बड़े होटलों में जाते हैं, क्लबों में जाते हैं बड़ी-बड़ी कारों में घूमते हैं। बहुत सारे इन्सानों की खुशी कुछ ही लोगों ने कैद कर रखी है। वह मजबूर और दुखी इन्सानों की विवशता का पूरा-पूरा लाभ उठा रहे हैं।

खैर यह बात भी छोड़ो। लोग कहेंगे, यह लड़की पागल है। समाजवाद और साम्यवाद का प्रचार कर रही है। मुझे तुम्हारी यह बात बहुत पसन्द आई कि वह समाज कहाँ रहेगा, उस समाज में खुशहाली कहाँ से नजर आएगी जिसमें वैज्ञानिक क्लर्क बन जाए और क्लर्क इंजीनियर बन जाए। इंजीनियर गणित के प्रोफेसर बन जाएँ और कलाकार रोटी के लिए अपनी आत्मा बेच दें। नाली की ईंटें महलों में लगा दी जाएँ तो उसका ढाँचा बिगड़ेगा ही।

हीरोइन के साथ इंसाफ न करने के लिए शायद आप मजबूर थे यह सही है। इसमें सारा दोष मेरा ही है। काश ! मैं उपन्यास की सफल नायका बन सकती !

मैं अभी तक अस्पताल के ही चक्कर काट रही हूँ। वह कभी अच्छे हो जाते हैं और कभी फिर हालत खराब हो जाती है। मैं अभी जीवन से निराश नहीं हुई हूँ।

अभागी—अंजू

यह था अंजू का पत्र जिसे उसने एक बार नहीं अनेक बार पढ़ा।

'बाबू जी !'

'बाबू जी !'

उसने घबरा के आँखें खोलीं तो सामने भूरेसिंह खड़ा था।

'क्या बात है ?'

'आज घर नहीं जाएँगे ?'

'घर ! किसका घर, कौन सा घर ?

'सब लोग चले गए और आप अभी इस तरह ऐसे बैठे हैं जैसे यहीं रहना है।'

'तुम्हारा मतलब है, दफ्तर में छुट्टी हो गई ?'

'कब की हो चुकी। मैं तो केवल आपकी राह देख रहा हूँ। काफी देर बाहर बैठा रहा, फिर आपके सामने आकर बैठा मगर आप तो न जाने कौनसी दुनिया में पहुँचे हुए थे। आखिर तंग आकर आवाजें दीं मगर एक दो आवाजों से तो कुछ बना ही नहीं।'

'आज तो न जाने कहाँ चला गया था। खैर एक कप चाय लाओ, फिर चला जाए।

भूरेसिंह समझता था कि आज तबीयत उदास है और गरम चाय ही सहारा देगी।

१६

●●●

दफ्तर का वातावरण दिन-प्रतिदिन तीखा होता गया रतना ने सारे दफ्तर में एक न बुझने वाली आग लगा दी थी। दफ्तर का स्टाफ काम कम करता था और बातें अधिक। रतना की कहानियों में और उसके चर्चे में समय कट जाता और हर बात के लिए चन्दन ही जिम्मेदार था क्योंकि वह

B—7

मैनेजर था। उसके लिए एक नई मुसीबत खड़ी हो गई थी। लोगों के निजी झगड़े भी चन्दन को ही सुलझाने पड़ते थे।

स्टाफ के सदस्य अब समय से कुछ पहले ही आकर ग्राउंड में बैठ जाते। जब तक रतना नहीं आती वहीं जमे रहते। जब रतना दिखाई देती तो लोगों की आँखों में अजीब चमक आ जाती। लोगों की भूखी नजरों से यह साफ प्रकट था अगर उन्हें जरा ढील मिल जाए तो लोग उस लड़की पर भूखे कुत्तों की तरह टूट पड़ेंगे।

हजारों लाखों साल बीत गये पर आज भी पुरुष स्त्री के लिए उत्सुक ही है। औरत उसकी कितनी बड़ी कमजोरी है!

दफ्तर में पहुँचने पर दिन भर यही चक्कर चलता रहता। कुछ लोग जलते रहते। कुछ सुलगते रहते। अगर किसी से यह कह दिया गया कि रतना से फाइल ले आओ तो वह रतना से चिपकना ही चाहता था जैसे वह फाइल लेने नहीं रतना को ही लेने गया था।

यह वातावरण दिन प्रति दिन दृढ़ होता गया पार्टी-बाजी बढ़ गई। कुछ लोग तो खुलकर रतना पर डोरे डालने लगे।

आज सुबह आते ही एक नया तूफान उठा जब स्टाफ से सुभाष ने यह बात बताई कि रात रतना मनोहर के साथ पिक्चर देखने गई थी।

मनोहर अभी नया-नया ही आया था। इसलिए इस खबर को सुनकर सारे स्टाफ में एक खलबली मच गई।

बलदेव अपनी कुर्सी पर बैठा फाइलों में खोया हुआ था। उसके सामने ही रतना की सीट थी। कभी-कभी वह कन-खियों से रतना को देख लेता।

आज रतना ने फीरोजी रंग की साड़ी पहन रखी थी।

शरीर पर छोटा सा ब्लाउज था जिसकी वजह से उसका पेट छातियों तक नंगा था। बाजू न होने से बगल में उगे हुए बाल भी दिखाई दे जाते। यह सही है कि अर्धनंगी औरत बहुत खतरनाक होती है।

'उस्ताद आज तो बड़ा मोहक दृश्य है।' सुभाष ने उसकी पीठ पर हाथ मारते हुए कहा।

'कैसा मोहक दृश्य ? यहाँ तो अपनी किस्मत पर रो रहे हैं।'

'तुम तो खुश किस्मत हो जो सीट भी सामने मिली है।'

'सामने वाली सीट क्या करेगी। यहाँ तो सुबह से शाम तक जलना पड़ता है।'

'हाँ, हम लोगों के हिस्से में जलन के सिवा कुछ नहीं मिला। हमसे तो मनोहर अच्छा है जो अभी कल आया है और आज उसका दोस्त बन गया। उनके साथ फिल्में देखी जाती हैं। अरे हमसे कहा होता तो एक छोड़ दस फिल्में दिखा देते।'

'अपना-अपना भाग्य है यार ! वह मोती दान करके आया और हमने काँटे दान किए होंगे जो हमसे इतनी नफरत है।

'कभी-कभी ज्यादा नफरत भी मुहब्बत बन जाती है यार।'

'तो तुम्हारा ख्याल है कि एक दिन हमसे प्यार हो जाएगा।'

'क्यों नहीं होगा। कहो तो आज ही हम रतना को सिनेमा ले चलें। आज बिल्कुल नई फिल्म लगी है तीसरी कसम।'

'वाह ! नाम तो बड़ा अच्छा है—तीसरी कसम !'

पहली कसम—मनोहर के साथ अब नहीं जाना।

दूसरी कसम—यह लड़कपन छोड़ो, हमसे दिल लगाना।

तीसरी कसम—हर रात हमारे साथ बिताना।

'छोड़ो यार, कविता मत करो।'

'कविता कैसे छोड़ूँ! रतना ने कवि बना दिया है। जरा देखो उसकी काफिर जवानी, किस तरह बल खा रही है। जवानी की तरंगें अंग-अंग से निकल रही हैं। यह अधनंगा, कोमल शरीर कितना आकर्षक है!'

'काम की बात करो कुछ!'

'बताओ कोई ऐसा काम जो उसके पास जाकर उसकी तरंगित जवानी की लहरों का मजा ले लूँ। जी चाहता है उसके कोमल शरीर पर हाथ फेरता रहूँ।'

'इससे अच्छा काम क्या मिलेगा। तीसरी कसम की टिकटें तुम्हारे पास हैं। इसी बहाने मिल आओ। अगर सिनेमा जाने के लिए तैयार हो गई तो मजा आ जाएगा फिर वहाँ बैठाकर जो जी आए करना।

'बात तो ठीक है! अच्छा जाता हूँ।'

'हलो रतना, माफ करना! सुबह-सुबह ही तंग करने चला आया।

'कहिए, क्या सेवा करूँ आपकी।'

'सेवा कैसी, अरे यह तो हमें करनी चाहिए।'

सुभाष कुर्सी पर हाथ टेक थोड़ा झुककर रतना के ब्ला-उज में उसके उभरे सीने को परखने लगा।

रतना ने जल्दी ढलका हुआ आँचल सीने पर फैला लिया औरत मर्द की इन नजरों को भाँपने की शक्ति रखती है।

'रतना, आज एक नई फिल्म लगी है।'

'लगी होगी।' उसने लापरवाही से उत्तर दिया।

'प्रसिद्ध कवि शैलेन्द्र की बड़ी अच्छी फिल्म है। वह इसमें

काम भी कर रहे हैं। राजकपूर और वहीदा रहमान की बेहतरीन जोड़ी है।'

'आप तीसरी कसम की पब्लिसिटी कर रहे हैं?'

'इस लिए कि आप देखने के लिए राजी हो जाएँ।'

'मुझे अगर देखनी होगी तो खुद ही चली जाऊँगी।'

'अगर आप मेरे साथ चलें तो।'

'क्यों?'

'क्यों तो आधी लड़ाई होती है। हाँ—कहना चाहिए।'

'मिस्टर, आप मुझे गलत समझते हैं। जाइए, अपना काम कीजिए।'

'काम करते-करते तो यह हालत हो गई कि शरीर चकनाचूर हो गया और दिल भी। और काम भी किसके लिए किया जाए। कोई जीवन साथी हो तो काम करने का मजा भी है।'

'मिस्टर सुभाष! यह दफ्तर है। किसी फिल्म का स्टूडियो नहीं है। इसलिए बेहतर है आप मेरा पीछा छोड़ दें।'

'मिस रतना, दिल को तो बहुत समझाता हूँ लेकिन यह साला मानता ही नहीं।'

'हूँ! तो अगर आपसे नहीं मानता तो मुझे मनाना पड़ेगा इसलिए बेहतर यही है कि आप अपनी इज्जत संभालते हुए यहाँ से उठ जाएँ।'

'तो क्या मैं मनोहर से भी गया गुजरा हूँ! अगर तुम उसके साथ जा सकती हो तो मेरे साथ जाने में क्यों इन्कार है?'

'जो तुम सोचते हो, वह कभी नहीं होगा। कौन अच्छा है और कौन बुरा है। यह सोचना मेरा काम है, आपका नहीं।'

'तो मेरे साथ जाने में बिल्कुल इन्कार है?'

'मैंने हाँ कब की थी ?'

'यह सौदा बहुत महंगा पड़ेगा रतना ! अब भी सोचलो।'

'मैंने सोच लिया है।'

'अच्छा, तो मैं देखूँगा कि तुम मनोहर के साथ कैसे जाती हो। अब तुम्हारे साथ मनोहर रहेगा या मैं।'

उसने अपना कमानीदार चाकू निकालकर उसे खोलते हुए हवा में लहराया जैसे उसे धमकी दे रहा हो।

'तो आप मुझे कत्ल करने की धमकी दे रहे हैं ?'

तुम्हें नहीं मनोहर को करूँगा। उसने मेरे अन्दर आग लगाई है। उसे मालूम नहीं कि सुभाष को चैलेंज करने का मतलब क्या है।'

'तुम सब कुछ गलत समझ रहे हो। अगर तुम समझते हो कि मुझे तंग करोगे तो मुझे मजबूर हो मैनेजर से शिकायत करनी पड़ेगी।'

'तो फिर तुम भी अपना बुरा भला सोच लेना।' यह कह कर सुभाष चला गया। क्रोध से उसका चेहरा तमतमा उठा था।

यह बात छुपने वाली नहीं थी। सुभाष ने रतना को कत्ल की धमकी दी है। शाम तक यह बात चन्दन के पास पहुँच गई। वह सुनकर चकित हो गया। भगवान जाने इस दफ्तर का क्या बनेगा। अगर यही बात रही तो भूरे सिंह की बात एक दिन सही होकर रहेगी कि इस दफ्तर में खून होगा।

'तो क्या रतना का खून होगा ?' वह बड़बड़ा उठा।

रतना एक अधखिली कली है। उसका दोष केवल इतना ही है ना कि वह एक लड़की है। भगवान जाने किन मजबूरियों के कारण वह इस दफ्तर में नौकरी करने आई है।

अगर उसके साथ कोई मजबूरी न होती तो वह कभी इस तरह नौकरी न करती। यहाँ हर वक्त लोग उसको शिकार बनाने के लिए सोचा करते हैं।

इसका दूसरा रुख कुछ और ही था। रतना एक सुन्दर लड़की थी। सुन्दर लौंडिया देख कर नौजवानों का जोश में आजाना कुदरती बात है। वह अपनी भावुकता को रोक नहीं सकते। जवानी में किसे सोचने समझने का होश होता है। इस उम्र में उपदेश तो कोई काम नहीं करता।

पहले तो उसने चाहा कि सुभाष को बुला कर समझाया जाए लेकिन वह इस आग में इस तरह नहीं कूदना चाहता था उसे डर था कि कहीं लोग यह न कहें कि चन्दन खुद भी रतना के चाहने वालों में से है।

'मैं अन्दर आ सकती हूँ?' रतना की आवाज थी।

'आइए।'

'मैं आपसे कुछ जरूरी बातें कहना चाहती हूँ।'

'बैठिए! खड़े-खड़े तो बात नहीं होती।'

'शुक्रिया।' उसने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

'अब बताइए। आप क्या कहना चाहती हैं?'

'आज मुझे जान से मार डालने की धमकी दी गई है।'

'जी?'

'आप मैनेजर हैं। आपको अपने दफ्तर के में बारे इल्म नहीं?'

'मैं मैनेजर हूँ लेकिन ज्योतिषी नहीं हूँ। खैर आपने बता दिया तो अच्छा ही किया।'

'आप मेरी रक्षा के लिए क्या कर रहे हैं?'

'दफ्तर के बाहर रक्षा के लिए मेरेपास प्रबन्ध नहीं और

न दफ्तर के कानून में कहीं यह लिखा है कि मैनेजर अपने स्टाफ के घरों का भी जिम्मेदार है। अगर दफ्तर में कोई ज्यादती आपके साथ हो तो मैं हर तरह उसे दूर करने की कोशिश करूँगा।'

'और अगर दफ्तर के बाहर दफ्तर ही का कोई आदमी मुझे तंग करे तो ?'

'यह आपका निजी मामला होगा। उसमें मैं कैसे हस्ता-क्षेप करूँगा।'

'तो क्या आपके समाज में औरत को नौकरी करके रोटी खाने का भी अधिकार नहीं।

'इस अधिकार को तो कोई नहीं छीन सकता मगर मुसीबत यह है कि हमारे समाज में अभी इतनी जागृति नहीं आई कि औरत मर्द इकठ्ठे काम करें और—और भावुकता उत्पन्न न हो विशेषकर जवानी की उम्र में।'

'एक मजबूर और बेसहारा औरत अगर नौकरी न करे तो रोटी कहाँ से खाये ? है कोई रास्ता आपके समाज में उसे जीवित रहने का ?'

'वह शादी कर ले।'

'शादी ! करूँ ! कितना आसान सा जबाब है ! आप चौदहवीं सदी की बातें कर रहे हैं। मैनेजर साहब ! आजकल शादी से पहले लड़के वाले पूछते हैं—दहेज क्या मिलेगा ? लड़की काम करती है या नहीं ? अगर काम करती है तो कितना कमाती है ?'

'ऐसे लोग शादी नहीं करते। दौलत से नाता स्थापित करते हैं। औरत तो घर की लक्ष्मी होती है।'

'वह औरत को लक्ष्मी नहीं बनाना चाहते बल्कि औरत

के जरिये लक्ष्मी बनाना चाहते हैं।'

'इस काम के लिए तो समाज में और भी रास्ते खुले पड़े हैं।' चन्दन ने चिढ़कर कहा।

'इसका मतलब है, आप मेरी सहायता नहीं कर सकते।'

'मैं मजबूर हूँ। मुझे तुमसे ही नहीं पूरी औरत जाति से हमदर्दी है मगर मैं क्या करूँ, यह मेरी समझ से बाहर की बात है। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि लोग अपनी बहिनों को, जवान बीबियों, को जवान बेटियों को दफ्तरों में काम करने क्यों भेजते हैं ? वहाँ काम करने वाले दूसरे मर्दों पर क्या गुजरती है। क्या यह बातें लोग नहीं जानते। सब जानते हैं। जानबूझ कर अनजान बन गए हैं। पैसे के नशे ने उन्हें अन्धा बना दिया है। मोटी सी बात समझ लो। अगर इस दफ्तर में कोई तुम्हें तंग करता है तो दूसरे दफ्तरों में उसकी बहन, बीवी, बेटी को भी कोई तंग करता होगा। जो आशाएँ लोग तुमसे यहाँ रखते हैं वही आशाएँ लोग उनकीबेटी और बहन से भी रखते होंगे। मगर इन बातों को सोचता कौन है ?

इन बातों को अगर कोई सोचता है तो लोग उसे पागल कहते हैं। इन्हीं पागलों में मेरा पहला नम्बर है। यहाँ जान बूझकर पागल बनना पड़ता है। सब कुछ देखते हुए आँखों पर पट्टी बाँधनी पड़ती है। समय ऐसा जटिल है कि किसी को आप सुझाव नहीं दे सकते।'

'आपके ख्यालात तो बहुत अच्छे हैं।' रतना पिघल गई।

अच्छे ख्यालों के लिए इस धरती पर कोई जगह नहीं, रतना ! मुझे दुख है कि ऐसी दशा में मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता। मुझे अपनी इज्जत का भी ख्याल

है। मेरी तुम से जरा सी हमदर्दी का मतलब सारा स्टाफ यह निकालेगा कि मेरा तुमसे लगाव है और फिर मुझमें एक दोष भी है और वह दोष यह है कि मैं अभी तक क्वांरा हूँ।'

'आपने अभी तक शादी नहीं की।'

'नहीं, और न करने का इरादा है।'

'क्यों ?'

'यह मेरा अपना निजी मामला है।'

'मगर इतनी लम्बी जिन्दगी कैसे बीतेगी ?'

'स्मृति के छाए में।'

'इसका मतलब है, आपने किसी से...।'

'मुहब्बत की थी ?'

'जी, जी।'

'ऐसी तो कोई बात नहीं है जिसे मैं प्यार कह सकूं लेकिन रतना यह बातें तुम्हारे पूछने की नहीं है।'

'वह तो मैं भी जानती हूँ कि मुझे किसी की निजी जिन्दगी में दखल देने का कोई अधिकार नहीं लेकिन प्रसंग वश पूछ लिया था। जिन्दगी भर अकेला रहने की बात मेरी समझ में नहीं आई।'

'बहुत सारी बातें समझ नहीं आतीं।'

'दफ्तर के लोग आपके बारे में ठीक कहते हैं।'

'क्या कहते हैं मेरे बारे में ?'

'यही कि औरत के मामले में आप बिल्कुल चुगद हैं। औरत के नाम से ही आपको चिढ़ है। यहाँ तक कि आप दफ्तर में भी औरत रखने के पक्ष में नहीं थे।'

'इसका मतलब यह तो नहीं कि मुझे औरतों से घृणा है। औरत तो जन्मदाता है। जननी है। उससे नफरत का सवाल

ही नहीं उठता।

'तो आप शादी क्यों नहीं करते ? मेरा मतलब है आपको शादी से क्यों नफरत है ?'

'शादी से मुझे नफरत नहीं। शादी तो खुशी का नाम है। मैं किसी और कारणवश विवश हूँ रतना ! वह विवशता भी ऐसी है जो बताई नहीं जा सकती। उसे न बताने से ही मुझे खुशी मिलती है।'

'आपकी मरजी।'

यह बात रतना ने कुछ इस ढंग से कहा कि उसे अंजू याद आ गई।

'अंजू !' सहसा उसके दिल के गहराइयों से एक चेहरा उभरा जो रतना के चेहरे के सामने खड़ा हो गया।

'तुम दोनों कितनी एक सी हो फिर भी तुम दोनों में कितना अन्तर है ? एक प्यार की देवी है और दूसरी नई खिली कली जिस पर भवंरे मंडरा रहे हैं। एक ने उसे नई जिन्दगी दी थी, दूसरी उसे कहीं छीन न ले।

'चन्दन को लगा कि इसके दिल की धड़कने तेज हो गई हैं। वह रतना की नशीली आँखों का शिकार हो रहा है। रतना उसके दिलो दिमाग पर छाती जा रही है।

रतना या अंजू—यह क्या हो गया है दोनों चेहरों का अन्तर कम क्यों होता जा रहा है। उसके अन्दर सोई प्रीति जाग क्यों रही है ? इस राख के ठेर से चिंगारियाँ क्यों निकल पड़ीं ?

रतना उसे इस तरह घूर क्यों रही है ? कहीं रतना को मालूम तो नहीं कि मैं अंजू से प्यार करता हूँ ! लेकिन अंजू के प्यार की कहानी तो स्वयं अंजू को अभी तक मालूम

नहीं। इसे कहाँ से मालूम होगी ?'

कमरे में विचित्र सन्नाटा छा गया था। बड़ी देर तक दोनों एक दूसरे को घूरते रहे।

चन्दन ने घबड़ा कर अपनी आँखें नीची कर लीं।

'रतना तुम जा सकती हो।'

'अगर आपकी यही मरजी है तो जाती हूँ। मेरा ख्याल है आप मेरी बातों का बुरा नहीं मानेंगे।

चन्दन ने एक सिगरेट सुलगाई और शांत बैठा उसका धुआँ वातावरण में बिखेरता रहा ?

१७

दफ्तर से बाहर निकलने पर भी चन्दन की आत्मा की पीड़ा कम न हो सकी। वहाँ से सीधा वह एक होटल में चला गया। इस समय उसे रतना की चिन्ता नहीं थी बल्कि रतना की लगाई हुई उस आग की चिन्ता थी जिसने एक मुर्दे में नई जान डाल दी थी। उस प्रेम कथा को जिसे वह बड़ी कठिनाई

से भुला पाया था, आज रतना ने फिर कुरेद दिया था।

अंजू से उसे प्रेम था वह इस बात से इन्कार नहीं कर सकता था। उसने अंजू को भूलने की पूरी कोशिश की थी लेकिन वह भूल न सका दिल को बहुत समझाया लेकिन दिल भला मानने वाला था ? अंजू से प्रेम का अधिकार तो छिन गया था क्यों विवाहित स्त्री के साथ प्रेम करने का किसी को अधिकार ही नहीं। उसका पति ही उसका परमेश्वर होता है। वह अच्छा हो या बुरा हो, उसकी पूजा करनी होती है।

अंजू आजकल की आधुनिक सभ्यता में रंगी हुई लड़की नहीं थी, जो उसके लिए अपने पति को छोड़ देती। वह तो इतनी भयानक बीमारी में भी उसकी सेवा कर रही थी। उसकी जिन्दगी के लिए दिन रात दुआयें माँग रही थी। ऐसी लड़की से प्रेम कैसा ? वह स्वतः बड़बड़ाने लगा।

मगर प्रेम करनान करना उसके अपने वस में तो था नहीं। माँ बाप ने विवाह के लिए उसे मजबूर किया। कई लड़कियाँ स्वयं उसे निजी रूप में मिलीं या माँ-बाप द्वारा दिखाई गई। कुछ लड़कियों के फोटो भी आए लेकिन न जाने क्यों वह हर लड़की की तुलना अंजू के साथ करके उसे छोड़ देता।

अंजू इस दुनिया में केवल एक थी। अगर वह इस जन्म में उसकी नहीं हो सकी तो क्या हुआ ! अगले जन्म में पाने के लिए वह भगवान से प्रार्थना करता रहेगा। अगले जन्म में ही वह मिल जाए तो उसे संतोष होगा।

यही बात थी जो उसने सारी उम्र शादी न करने का फैसला कर लिया था। वह जीवित है केवल अंजू के लिए और मरेगा तो भी अंजू के लिए।

उसे अपने मूक प्यार पर पूरा-पूरा विश्वास था। प्रेम

का मतलब केवल वासना नहीं भोग विलास नहीं। प्रेम तो पूजा का नाम है। औरत का शरीर तो हर जगह मिल सकता है लेकिन सच्ची मुहब्बत तो कहीं नहीं मिल सकती।

आज रतना ने शाँत सागर में ककरी फेंक दी थी। सोए हुए अरमानों को फिर से जगा दिया है। अंजू की याद रह रह कर उसे आ रही थी।

'कहीं उसे रतना से प्यार तो नहीं होने लगा ?'

उसने अपने से ही प्रश्न किया।

'नहीं नहीं, हरगिज नहीं। यह बात तो सपने में भी सोची नहीं जा सकती। वह रतना से प्यार नहीं कर सकता। उसने कसम खाई है कि अंजू के अलावा वह किसी लड़की से प्यार नहीं करेगा। लेकिन रतना और अंजू की शक्लें कितनी मिलती-जुलती हैं !

वैसी ही नशाली आँखें, वही भोला-भाला चेहरा, वैसे ही पतले-पतले लाल लाल अधर, बातचीत का ढंग भी वैसा ही अन्तर केवल इतना है कि रतना की हर बात से शोखी टपकती है और अंजू बड़ी गम्भीर थी।

आत्मा की बेचैनी बढ़ती रही। दो कप गरम-गरम काफी पीने के बाद भी उसकी बेचैनी कम न हो सकी। वहाँ से निकलकर वह सीधा बाजार में आ गया। दुकानें सजी हुई थी। लोग खूब बने संवरे बाजार में घूम फिर रहे थे।

चन्दन की बेचैनी बराबर बढ़ती ही रही। वह अपनी गलती पर पछता रहा था। आज के आधुनिक फशन को कोस रहा था जो विलासी जीवन को प्रोत्साहन देता है।

वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ घर की ओर चल पड़ा।

घर में भी शाँति नहीं थी। उसकी माता जी किसी लड़की

की कहानी लेकर बैठ जातीं। उनकी समझ में यही बात थी कि चन्दन की उदासी की वजह शायद उसकी शादी ही है। अगर शादी से यह समस्या हल हो जाती तो चन्दन कब की कर चुका होता।'

अब तो उसकी यह हालत हो गई कि जब भी शादी की चर्चा होती उसका दिल बुरी तरह दुखी हो जाता। उसने अपनी जिन्दगी का ध्येय केवल यही समझा था कि घर से दफ्तर और दफ्तर से घर। इससे अधिक अगर दिल घबड़ाया तो थोड़ा बहुत लिख लिया।

यह ठीक है कि समय ने और जमाने की ठोकरों ने, उसकी मुसीबतों ने और दिल की पीड़ा ने उसे एक सफल कलाकार बना दिया था। वह अच्छा खासा खिलौना था जिससे उसके पढ़ने वाले दिल बहला लेते थे। कोई नहीं जानता था कि लोगों का दिल बहलाने वाले इन खिलौनों की अपनी दशा क्या होगी। वह गम की आग में स्वयं जलते रहते हैं। इन गमों का नतीजा यही निकलता है कि इस दुनिया के कलाकार केवल चालीस पचास तक दम तोड़ जाते हैं।

इन मरने वालों के दिलों में हजारों नहीं लाखों इच्छाएं सदा के लिए सो जाती हैं। इन बेचारों की आत्माओं को शायद कभी शाँति नहीं मिल सकेगी। मरने के बाद भी इस तरह भटकती रहेंगी।

यही सोचता वह सो गया।

उसने सोचा था शायद सुबह दफ्तर पहुँचने पर दिल बहल जाएगा मगर दफ्तर में चैन कहाँ। कुछ अभागे दुनियाँ में ऐसे भी हैं जिन्हें शांति कभी नहीं मिलती। सारी उम्र सुलगते-सुलगते बीत जाती है। बिल्कुल दीये की तरह। दीये का काम केवल जलना है और वह उस समय तक जलता रहता है जब तक उसमें तेल है।

चन्दन को लगा अब शायद उसकी जिन्दगी का दीया अधिक देर न जल सकेगा। वह जीवन की यात्रा में बहुत थक गया है। अब उसे अगर आराम न मिला तो जल्द ही बुझ जाएगा।

आज रतना उसे दफ्तर के दरवाजे पर ही मिल गई। वह बड़ी सुन्दर वोइल चेक की कमीज और चूड़ीदार पाजामा पहने थी। उसका आंचल सीने से ढलका हुआ था। उभरा सीना साफ छलक रहा था। उसने अपने बालों को फिल्मी हीरोइन की तरह संवार रखा था। कजरारे आँखों में काजल की डोरियाँ पलकों से बाहर कनपटियों तक आ गई थीं।

कितनी हसीन लग रही थी वह!

उसके चलने के ढंग में भी नजाकत थी। ऐसा लगता था कि जब वह चलती है तो सारा वातावरण डोलने लगता है और जब रुक जाती है तो सारा वातावरण स्थिर हो जाता है।

सुन्दरता में शायद वह शक्ति है जो पत्थरों को भी पिघला सकती है। नदी के बहाव को रोक और तूफानों को थाम सकती है।

रतना! नहीं यह तो अंज है!

नहीं नहीं, यह तो रतना है!

अंजू है···रतना है!

उसे क्या हो गया है आज ! उसकी नजरें क्यों धोखा खा रही हैं ? वह क्यों रतना को अंजू समझ रहा है ? वह रतना को घूर-घूर कर क्यों देख रहा है ? स्टाफ के लोग क्या कहेंगे ? लेकिन उसकी नजरें रतना के चेहरे से हट नहीं सकीं वह रतना को अंजू के ही रूप में देख रहा था

'नमस्ते चन्दन साहब !' दो कोमल बाँहें उसके सामने उठीं।

'नमस्ते !' उसने बड़े प्यार से उत्तर दिया और आगे बढ़ गया।

पीछे चन्दन ने आवाज सुनी। शायद सुभाष कह रहा था। 'अरे हमें भी नमस्ते कर लिया होता ! हाँ भई, हम कोई मैनेजर थोड़े ही हैं !'

'मगर हमारे मैनेजर साहब तो देवता हैं। वह तो औरत के नाम से ही डरते हैं। उनसे कुछ मिलने वाला नहीं हैं।'

'मगर यह काफिर जावानी तो सीने में आगलगा रहीहै।'

'आज तो जरूर कहीं बिजली गिरेगी ! आज खैर नहीं प्यारे सुभाष !'

'देखो, किस पर गिरती है ?

यह आवाजें उठती रहीं और चन्दन सब कुछ सुनते हुए भी अनसुना और अनजान बन गया। वह जानता था कि इस उम्र में उपदेश कुछ काम नहीं करता। यह जवान लड़के हैं, जवानी की आग से बच नहीं सकते। यह तो अपने दिल की भड़ास बोल कर ही निकालेंगे।

आज दफ्तर मे उसका दिल नहीं लग रहा था। वह एक दिन में ही रतना के इतने पास कैसे पहुँच गया ? उसने तो रतना के बारे में कभी सोचा भी नहीं था। अब घड़ी-घड़ी वह रतना के बारे में क्यों सोच रहा है ?

कहीं रतना उसकी जिन्दगी तो नहीं बन गई

कहीं रतना के सियाह जुल्फों ने उसे फाँस तो नहीं लिया !

रतना को बार बार देखने का मतलब क्या है ?

क्या इसी को प्यार कहते हैं ?

किसी के बारे में हर बात सोचना, किसी के ख्यालों में खोये रहने का ही नाम तो प्यार है !

हे भगवान मुझे क्षमा करना। मैं फिर बहक रहा हूँ ! मेरे पाँव एक बार फिर डगमगा रहे हैं। एक ठोकर खाकर मैं अभी तक सँभल नहीं पाया। यह दूसरी ठोकर अगर लग गई तो कहीं का नहीं रहूँगा।

मगर यह ठोकर खाऊँगा ही क्यों ? मैं उस के प्यार के बारे में भला कैसे सोच सकता हूँ जिसे मैं जानता तक नहीं।

तुम नहीं जानते तो क्या हुआ ? तुम्हारी आत्मा तो जानती है। उसके अन्तःकरण से एक आवाज आई।

यह झूठ है। मेरी आत्मा केवल अंजु को जानती है। जीवन में प्यार केवल एक बार ही होता है।

मगर अंजू तो विवाहित है।

रतना के बारे में भी भला क्या कहा जा सकता है! अगर यह विवाहित न भी हुई तो हो सकता है किसी से पहले से ही प्यार करती हो। इसकी और अंजू की उम्र में अन्तर कितना है !

नहीं चन्दन तुम प्यार करने की भूल मत करना।

'मैं अन्दर आ सकती हूँ ?'

'आइएगा।' सामने रतना थी।

मेरी जान खतरे में है।'

'क्या ?'

'जी, मेरी जान खतरे में है।'

'आपकी जान और खतरे में। यह मैं क्या सुन रहा हूँ ?

'जी जी, मेरी जान खतरे में है, मैं आपको लिखकर दूँ क्या ?'

'मगर बात क्या है ?'

'बात क्या होनी है ? बस यही है कि मैं जिस जिस को पसन्द आ जाऊँ, उसका दिल बहलाया करूँ, अगर नहीं बहालऊँगी तो जान से हाथ धोना पड़ेगा।'

'अजीब बात है।'

'हाँ लगती तो अजीब ही है ! मगर आप के दफ्तर मेंहर बात अजीब होती है। यहाँ का पूरा स्टाफही अजीब है। यहां तो साठ साल के बूढ़े भी प्रेमी बनते हैं चाहें मैं उन्हें अपने बाप के बराबर समझ कर क्यों न बातें करूँ। दूसरी ओर यह स्टाफ है जिसमें कोई मजनूँ से कम नहीं। सभी रोमियो हैं राँझा हैं मगर इनप्रेमियों और उन प्रेमियों में अन्तर केवल इतना ही है कि वह सब अपनी प्रेमिका की खुशी के खातिर अपनी जान पर खेल गये थेओर यह नए मजनूँ अपनी विलासिता के लिए अपनी प्रेमिकाकी जान लेने की धमकी देते हैं।'

'यह सब कुछ अपने देश का दुर्भाग्य है रतना। इस देश ने पाश्चात्य सभ्यता को तो अपना लिया मगर इसे वह रास नहीं आती क्योंकि इस देश की अपनी सभ्यता इतनी गहरी है कि विदेशी सभ्यता इसकी जड़ें नहीं काट सकती हम लोग जिनको कापी करने की कोशिश करते हैं वह लोग तो अपने बहन भाई माँ बाप और मित्र आदि के बारे में बिलकुल लापरवाह हैं। वहाँ तो केवल स्वार्थ के कीटाणु ही पलते हैं। यह कीट अब धीरे-धीरे हमारी सभ्यता में घुसकर हमारी

संस्कृति की जड़ें खोखली कर रहे हैं। अब दफ्तरों में इश्क के ड्रामे रचाए जाते हैं। इतने मर्दों के बीच भला एक औरत कर भी क्या सकती है और अपनी विवशता पर केवल आँसू बहा कर रह जाती है।'

'इन आसुओं पर भी तो किसी को दया नहीं आती।'

'दया ! अब इस समाज में दया नाम का तो कोई भाव शेष नहीं। यहाँ तो एक इन्सान दूसरे इन्सान की मजबूरियों से लाभ उठाता है। इन्सान इन्सान के खून का प्यासा हो रहा है ! एक ओर लोग रोटी के लिए भटक रहे हैं, रोटी के लिए तरस रहे हैं और दूसरी और खाने के लिए सोचा जाता है कि क्या खाया जाय, इतनी चीजों में से किस किस चीज को खाने के लिए चुना जाय। आज इस देश के बच्चे दूध के लिए तरस रहे हैं। वही बच्चे जिन्होंने कल जवाहर बनना है,गाँधी और सुभाष बनना है, पटेल बनना है इन्हीं बच्चों को अब भूख निगल रही है। मजबूरियाँ नोच रही हैं। ऐसी बात नहीं कि देश में किसी चीज की कमी है बल्कि कुछ देश शत्रु अमीरों ने उन्हें इकट्ठा करके अपनी तिजोरियों में बन्द कर रखा है। यही देश के शत्र हैं, राष्ट्र के शत्रु हैं।

'अब वह दिन दूर नहीं रतना जब यहाँ प्रतिशोध की आग भड़केगी। भूख और गरीबी ही क्राँति को जन्म देती है अन्याय ही बगावत पैदा करता है खैर अब इन बातों का समय नहीं। शाम को तुम मेरे साथ चलोगी।

'आप मेरे लिए अपनी जान क्यों खतरे में डालेंगे ?'

'इसके सिवा और मैं कर ही क्या सकता हूँ ?'

'लेकिन······।'

'लेकिन का समय नहीं शाम को तुम्हें घर छोड़ आऊँगा।'

१८

शाम को पाँच बजे दफ्तर की छुट्टी हो गई। रतना कमरे में आई तो चन्दन पहले ही से तैयार था लेकिन उसने रतना को थोड़ी देर रुकने के लिये कहा ताकि दफ्तर के लोग चले जाएँ। छुट्टी के बाद रतना को इस तरह चन्दन के दफ्तर में बैठा देख कुछ लोग चकित हुए मगर चन्दन को रत्ती भर

इसकी परवाह नहीं थी कि लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं : वह सोचता था कि वह तो एक मनुष्यता का धर्म पूरा कर रहा है। इस कर्तव्य की राह में अगर उसे मौत आ जाए तो बुरा नहीं। वह भी जीवन का निमंत्रण होगा।

दफ्तर से बाहर निकलते ही दरवाजे पर काली बिल्ली के दर्शन हुए। रतना का माथा ठनका कि आज तो कुशल नहीं। यह तो बहुत अपशकुन है। वह तो पहले ही भय-ग्रस्त थी, अब तो उसका प्राण भी सिहर उठा। चन्दन इन बेकार बातों पर विश्वास नहीं करता था इसलिए उसने कोई परवाह नहीं की।

मेन रोड पर चन्दन ने टेक्सी पकड़ने के लिए इधर उधर नजर दौड़ाई मगर टैक्सी कहीं दिखाई न दी। इससे पहले वह दफ्तर से ही फोन पर टैक्सी स्टैंड से मालूम कर चुका था दफ्तर से छुट्टी के समय अक्सर टेक्सी बड़ो कठिनाई से ही मिलती है।

दोनों कुछ देर तक फुट पाथ पर पैदल ही चलते रहे।

सहसा चन्दन को लगा कि उसका पीछा किया जा रहा है वह तनिक संभल गया। उसने रतना को आगे कर दिया।

मगर आगे पीछे करने का समय नहीं था।

सामने सुभाष लाल-लाल आँखें किए चाकू ताने खड़ा था।

'कहाँ जाएगी बचकर वेश्या ! नित्य नए मित्रों के साथ पेंगें बढ़ाती है।

'तुम पागल हो गये हो सुभाष ?'

'हाँ इस समय तो पागल ही हूँ। पागल न होता तो चाकू लेकर नहीं आता बल्कि इसके लिए एक सुन्दर सी साड़ी भेंट में ले आता। आप हट जाइए मेरे रास्ते से।' उसने

चन्दन को एक ओर धकेल दिया।

चन्दन समझ गया कि सुभाष पर शैतान सवार है। वह किसी तरह भी काबू में आने वाला नहीं। उसकी आँखें भूखे शेर की तरह सुर्ख हो रही थीं।

अचानक उसका दायाँ हाथ हवा में लहराया।

रतना का दिल दहला देने वाली चीज गूंजी मगर इससे पहले कि वह चाकू रतना के सीने से पार होता चन्दन बीच में आ गया और चाकू रतना के सीने में लगने के बजाय चन्दन के पेट में लगा।

सुभाष तुरन्त ही भाग गया।

चन्दन के पेट से रक्त का फव्वारा छूट पड़ा। उसने अपने ही हाथों चाकू निकाल कर जेब में रख लिया।

'हे भागवान, यह चाकू आपके लगा! बचाओ, बचाओ खून, खून······।

'रतना' शोर करने का समय नहीं। तुम जल्दी से कपड़ा पेट पर बाँध दो।

रतना ने अपना दुपट्टा ही पेट पर कसकर बाँध दिया। कुछ लोग यह दृश्य देखने के लिए इकट्ठे हो गए।

चन्दन इस बात से घबरा रहा था कि कोई पुलिस को फोन न कर दे। वरना एक नई मुसीबत खड़ी हो जाएगी पुलिस वाले रतना को परेशान करेंगे। अतः वह जल्दी ही यहाँ से निकलना चाहता था।

जब तक एक खाली टैक्सी मिल गई। चन्दन ने पहले तो रतना को बीच में धक्का दिया और फिर खुद गिर पड़ा।

टेक्सी ड्राइवर ने दोनों को संदेह भरी दृष्टि से देखा और टेक्सी स्टार्ट कर दी। वह जानता कि शहर में लड़कियाँ भगानें

केस किस तरह हुआ करने हैं। सिनेमा की सबसे बड़ी देन यही थी। हर आदमी किसी न किसी रूप में प्यार जताने योग्य हो गया था।

चन्दन रास्ते भर दर्द से कराहता रहा। रतना के बहुत कहने पर भी वह अस्पताल जाने के लिए तैयार नहीं था। वह जानता था कि अस्पताल में जाने का मतलब था कि रतना को मुकदमे में लपेट लिया जाय। औरत की इज्जत तो चिकनी मिट्टी की तरह है जो जरा गीली हुई तो पाँव फिसलते देर नहीं लगती। और एक बार पाँव फिसला तो सम्भलना कठिन है। यही कारण था कि वह कोई ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं करना चाहता था जिससे रतना पर आँच आवे।

वह अच्छी तरह जानता था कि घाव बहुत गहरा है। वह यह भी जानता था कि वह इससे मरेगा नहीं। हाँ घाव भरने में देर लगेगी अगर यह चाकू रतना को लगता तो खैर नहीं थी। वह शायद इस जख्म की ताब न लाकर चल बसती।

एक गुन्जान-सी आबादी वाले मुहल्ले में टेक्सी रूकी। चन्दन को आभास हो रहा था कि वह अब अचेत होने वाला है। उसका सिर बुरी तरह चकरा रहा था। आँखों के सामने अंधेरा बढ़ता जा रहा था। यहाँ तक कि रतना का चेहरा उसकी आँखों के सामने से ओझल हो गया।

जब चन्दन की आँख खुली तो वह चकित हो गया।

एक सुरीली आवाज गूंजी।

'दीदी, दीदी इन्हें होश आ गया, दीदी······।

इसके बाद चन्दन ने जो कुछ देखा उस पर वह अचरज से भर उठा।

यह सब कुछ तो वह सोच भी नहीं सकता था।

'क्या मैं अभी तक बेहोश हूँ !'

'नहीं।'

'तो फिर यह अंजू ?'

'वह मेरी दीदी है।'

'तुम अंजू !' उसने उठने का प्रयत्न किया।

'उठने की कोशिश मत करो। मैं अंजू ही हूँ। डाक्टर ने पूरी तरह आराम के लिए कहा है।'

'लेकिन यह…यह मैं क्या देख रहा हूँ ! क्या मैं बेहोशी में स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ ?'

'आप इस समय पूरी तरह होश में हैं। हाँ, पहले अवश्य अचेत थे। भगवान ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

'अंजू ! मुझे तो विश्वास नहीं आता। दिल आँखों की बातों को मानने के लिए तैयार नहीं। जिन्दगी में दोबारा तुम इस तरह मिलोगी, यह तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।'

'चन्दन, मैं तुम्हारे इस अहसान का बदला कहाँ चुकाऊँगी, तुमने अपने आपको मौत के मुँह में डालकर मेरी बहन की जान बचाई है। तुम मानव नहीं देवता हो।

'एहसान ! तुम भी इसे एहसान कहती हो अंजू ! तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरी जिन्दगी तुम्हारी ही देन है। आज तो मैं बहुत ही खुश हूँ कि मैंने कुछ खोकर बहुत कुछ पा लिया।'

'हाँ चन्दन, तुम सौभाग्य शाली हो। अभागी तो मैं हूँ जिसे दुनिया में कोई सुख नहीं मिला। तुमने तो कुछ खो कर सब कुछ पा लिया लेकिन मैंने कुछ पाकर सब कुछ खो दिया।'

'अंजू, आज के दिन भी तुम उदासी की बातें कर रही

हो ! आज तो तुम्हें भगवान का धन्यवाद देना चाहिए।'

'जरूर दूंगी धन्यवाद चन्दन, तुम अच्छे तो हो जाओ। तुम्हें अधिक नहीं बोलना चाहिए, डाक्टर ने मना किया है।'

'डाक्टर की बात छोड़ो अंजू ! उस डाक्टर को क्या पता है कि मुझे आज वह डाक्टर मिल गया है जो मुर्दों को जिन्दा कर देता है।'

'दीदी, तुम चन्दन साहब को पहले से जानती हो क्या ?'

'हाँ, बहुत पहले से, उस समय वह इस फर्म के मैनेजर नहीं थे।'

'तो, आपके यह पुराने मित्र हैं।

'बहुत पुराने। अच्छा, पहले तुम इनके लिए जल्दी से दूध गरम कर लाओ।'

'अब मैं घर जाना चाहूँगा अंजू !

'घर···! और इस हालत में ?

'मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मैं बिल्कुल ठीक हो गया हूँ। रात भी अधिक हो गई है, घर वाले चिन्ता में होंगे।'

'इस हालत में आप अभी जा नहीं सकते। रतना को भेज देती हूँ, वह सूचना दे आएगी।'

'रतना का घर से बाहर निकलना ठीक नहीं।

'वह किसी को साथ ले जाएगी। चिन्ता न करो।'

'मगर घर पर जब मालूम होगा। कि मुझे चाकू लगा है तो लोग चिन्ता से पागल हो जाएँगे।'

'आप सबसे तो झूठ बोल लेंगे लेकिन अपनी···मेरा मतलब है मेरी भाभी से तो नहीं बोल सकते।'

'तुम्हारी भाभी ? कौन ? कौन भाभी। किसने तुमसे कहा है कि मैंने ब्याह कर लिया है ?'

'चन्दन !' वह हैरान हो गई।

'हाँ अंजू ! मैं ठीक कह रहा हूँ।'

'तो इसका मतलब यह है कि आप अभी तक अविवाहित हैं ?'

'हाँ। मैंने ब्याह न करने की कसम खाई है।'

'क्या ?'

'हाँ, ब्याह न करने की कसम खाई है।'

'लेकिन क्यों ?'

'इसलिए कि किसी की पूजा कर सकूँ। अराधना से तो भगवान मिल जाता है। मैं तो किसी इन्सान के लिए पूजा कर रहा हूँ।'

'अच्छा, अब आप आराम कीजिए। इन बातों का यह समय नहीं। मैं रतना को आपके घर भेज रही हूँ।'

'मगर उनसे कहना कि वह माता जी से केवल यही कहे कि चन्दन दफ्तर के काम से बाहर गया है। दो-एक दिन में लौट आएगा। चिन्ता न करें।'

'अच्छी बात है।'

१६

रतना के लिए उसने जो बलि दी थी उसका फल विधाता ने उसे अंजू के रूप में दे दिया था। वह अंजू जिसके बारे में उसने भूल के भी नहीं सोचा था कि वह इस जीवन में उसे दोबारा मिल सकेगी। वही अंजू उसे अनजाने में मिल गई। वह घायल हो बिस्तर में पड़ा था और अंजू उसकी

सेवा में दिन रात एक कर रही थी।

रात भर घाव की टीसें उभरती रहीं। अंजू उसके सिराहने बैठी सर दबाती रही।

अंजू! यह अंजू उसके लिए इतना क्यों कर रही है? क्या अंजू को उसके साथ प्यार है?

यहाँ आकर वह रुक गया। इससे आगे वह बढ़ना नहीं चाहता था। वह जानता था, आगे खतरा है। अंजू का दूसरा रूप वह देखने के लिए तैयार नहीं। उसे अंजू का यही रूप पसन्द था जब वह उसके पास होती थी।

अंजू उसका सर अपनी गोद में रखे दबा रही थी। वह अंजू को ध्यान से देख रहा था। पहले की अंजू में और आज की अंजू में कितना अन्तर था। उसकी खिली जवानी मुर्झा गई थी। मदभरी आँखों से उदासी फूट रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारे आँसू जमा हो गए हैं जो बाहर निकलने के लिए मचल रहे थे लेकिन उन्हें रास्ता नहीं मिल रहा था।

'अंजू!'

'हाँ चन्दन!'

'सो जाओ। ऐसा लगता है जैसे बीमार सी हो।'

'नहीं, मैं बीमार नहीं, मैं तो भली चंगी हूँ। तुम सो जाओ। मैं फिर सो जाऊँगी।

'मुझे नींद नहीं आ रही है।'

'मैं जानती हूँ, घाव बहुत गहरा है।'

'मुझे ऐसा लगता है जैसे यह घाव मेरे शरीर में नहीं, तुम्हारे शरीर में है।'

'तुम्हारी बातें तो अब भी पहले ही जैसी हैं।'

'तो क्या तुम्हारा ख्याल था कि मैं बदल गया हूँ।'

'दुनिया बदल गई, तुम नहीं बदले, यह तो हैरानी की बात है।'

'दुनिया एक बार छोड़ दस बार क्यों न बदल जाए लेकिन चन्दन नहीं बदलेगा।'

'तुम्हें आराम की जरूरत है चन्दन।'

'इससे अधिक और क्या मिलेगा कि मेरा सर तुम्हारी गोद में है। न जाने क्या बात है अंजू, तुम्हारे पास आकर तो मैं सारे दुख भूल जाता हूँ।'

'तुम खुश किस्मत हो।'

'तो क्या तुम नहीं हो ?'

'नहीं, मैं अभागिन हूँ।'

'तुम्हारी बातों में इतनी पीड़ा क्यों है अंजू ? यह मेरी समझ में नहीं आता। तुम्हारी आँखों से उदासी क्यों टपक रही है ? तुम्हारा फूल-सा चेहरा मुर्झाया क्यों है ?

'चन्दन, अभी इन बातों का समय नहीं।

'क्यों ? क्यों यह बातें तुम मुझसे छुपाना चाहती हो ? क्या तुम चन्दन को गैर समझती हो ?'

'चन्दन ! डाक्टर ने आराम के लिए कहा है। भगवान के लिए ज्यादा मत बोलो। जख्म के टाँके हिल जाएँगे।'

'आराम के लिए तो एक उम्र पड़ी है लेकिन तुम तो सालों के बाद आज मिली हो। अगर आज भी मैं आराम करता रहा तो फिर तुमसे मिलने के लिए दूसरा जन्म लेना पड़ेगा।

'जब तुम मेरे बारे में सब बातें जानते हो तो फिर क्यों बार-बार वही बातें पूछ रहे हो ?'

'मैं तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं जानता, तुम्हारी उदासी

मुझे पागल बना रही है। मेरा दिमाग फटा जा रहा है। तुम क्यों मुझसे छुपा रही हो।'

'तुम चुप रहो, बोलो मत।'

'इसलिए कि कहीं मैं मर न जाऊँ। एक बात याद रहे अंजू, कि मौत का समय निश्चित है और अगर वह निश्चित समय यही है तो इससे अच्छा समय मेरे जीवन में भला कब आएगा।'

'चन्दन, भगवान के लिए मौत का नाम मत लो। तुम मौत के मानी नहीं जानते। मरने वाले तो आराम से मरते हैं लेकिन कोई उनके दिल से पूछे जो मरने वालों से सम्बन्धित होते हैं कि उन्हें मौत का कितना दुख होता है।'

'मैं जीकर भी क्या करूँगा। इस जीवन के झंझटों में उलझे रहने से मिलेगा क्या ? आज तक यही सोचता आया कि अब जिन्दगी का कोई काम बाकी रह गया है तो वह मौत है और मौत के रास्ते में तुम दीवार बनी हुई थी। ऐसा लगता है कि आज वह दीवार टूट गई है।'

'वह दीवार और भी मजबूत हो गई है।' यह कहकर अंजू चन्दन की आँखों की गहराइयों में खो गई चन्दन की आँखें आज भी उसी तरह प्यासी थीं जैसे पहले उसने देखी थीं। उसके मन की पीड़ा उसकी आँखों से साफ झलक रही थी। उसका दिल अब भी उसी तरह बिल-बिला रहा था।

उसे लगा कि चन्दन की आँखों में ढेर सारे आंसू तैर रहे हैं जिन्हें किसी आँचल की जरूरत है जिसके सहारे वह निकल आना चाहते हैं लेकिन आज तक उन्हें न वह आँचल मिला और न वह सहारा मिला।

अब उसे लगा जैसे उनके अन्दर ही अन्दर वह पिघल

रहे हों। वह चन्दन के पास होती जा रही थी। चन्दन का सर उसकी गोद से आगे बढ़कर उसकी छातियों से टकरा रहा था।

रतना का शरीर जवान हो गया था। रतना साथ वाले कमरे में सो रही थी। इस कमरे में इन दोनों के सिवा और कोई नहीं था। उसके अन्दर का सोया प्यार सहसा जाग उठा था।

अंजू धीरे-धीरे उसके बालों को सहला रही थी।

'तुम बहुत थक गए हो चन्दन, बहुत थक गए हो तुम्हें आराम की जरूरत है।'

'आराम की नहीं, मुझे तो एक साथी की जरूरत है। इन लम्बी जुल्फों को मेरे चेहरे पर बिखेर दो। इन मस्त आँखों को मेरी आँखों में डाल दो। इन कोमल अधरों को मेरे अधरों पर फंसा दो। मुझे अपनी बाहों के ताले में ले लो ताकि मेरे अन्दर का सुलगता हुआ ज्वाला-मुखी सदा के लिए शान्त हो जाए। मैं आराम से मर सकूं।'

'चन्दन !' उसने सचमुच चन्दन को अपनी बाहों के घेरे में ले लिया। उसकी लंबी स्याह जुल्फें उसके चेहरे पर बिखर गईं उसके होंठ चन्दन के होंठों पर झुक आए। वह उसकी पीड़ा को पी जाना चाहते थे।

सहसा चन्दन को न जाने क्या हुआ कि उसने अपने आपको अंजू से अलग कर लिया।

'नहीं-नहीं, अंजू ! मैं तुम्हारे पतिव्रत-धर्म का अपमान नहीं करना चाहता। मैं तुम्हारे माथे पर कोई ऐसा कलंक नहीं लगाना चाहता जिससे तुम्हारी पवित्रता भंग हो। मैं केवल प्रेम पुजारी हूँ। मुझे वासना का पुजारी मत बनाओ मेरा काम तो दिये की तरह जलना है। मुझे इस जलन में

मजा आता है। यही जलन मेरी जिन्दगी है। इतने सालों से की हुई मेरी अराधना को आज भंग मत करो। मैं जब तक जीवित हूँ मुझे पुजारी ही बना रहने दो।'

'चन्दन, तुम इन्सान नहीं देवता हो।'

'और तुम देवी हो अंज !'

'नहीं मैं तो अभागिन हूँ जिसे जन्म से लेकर आज तक कोई सुख नहीं मिला, जिससे जिन्दगी रूठी हुई है, जिसकी सारी इच्छाएँ सिसकियां भरती रहीं। मैं वह चमन हूँ जिसमें कभी बहार नहीं आई। मैं तो वह फूल हूँ जिसमें सुगंध कभी नहीं भरी।'

अंजू की आँखों में जमे आँसू अब पिघल कर टप-टप गिरने लगे। यह आँसू चन्दन के चेहरे पर गिर रहे थे।

अंजू इसी तरह आँसू बहाती रही और कुछ क्षणों बाद उसके पास से उठकर चली गई। उस समय तो उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह अंजू को पकड़ सकता और अपने पास बिठा सकता।

वह शाँत पड़ा रहा।

२०

धीरे-धीरे पेट का घाव तो भरने लगा लेकिन दिल का घाव गहरा होता गया।

अंजू को समझने में वह असमर्थ था। औरत के कितने रूप उसमें छुपे हुए थे, यह वह न जान सका।

पहला रूप था कि वह एक विवाहिता स्त्री थी।

दूसरा रूप था कि वह प्यार की भूखी थी।

बार-बार उसने सोचा कि उसकी मौन निगाहें क्या सोचती रहती हैं! क्या ढूँढती रहती हैं। उस राख की ढेर में न अब कोई शोला था, न चिंगारी थी। वह तो एक ठण्डी राख थी।

वह अक्सर यही कुछ सोचता रहता, इन्हीं विचारों में जलता रहता, रातदिन सुलगता रहा।

वह यहाँ क्यों आया?

उसे इस जलन में मजा क्यों आता है?

अब वह अच्छा हो गया तो अंजू के घर लेटा क्यों है?

जब भी वह अंजू से कहता है कि अब मैं जाना चाहता हूँ तो वह कहती है कि अभी तुम अच्छे कहाँ हुए। अभी तुम ठीक से चल फिर नहीं सकते। अभी तुम्हें कुछ दिन आराम करना होगा।

आखिर अंजू उसे जाने क्यों नहीं देती?

एक प्रश्न बार-बार उसके मन में सर उठाता और बार बार उसके होंठों पर आकर रुक जाता। वह हजार कोशिशों पर भी उस प्रश्न को अंजू से नहीं पूछ सका।

वह उससे पूछना चाहता था कि तुम्हारे पति देव कहाँ हैं? क्या वह कहीं बाहर नौकरी में हैं या अभी अस्पताल में हैं!

वह यह बात नहीं पूछ सका। उसकी जबान में पूछते समय ताला लग जाता। वह साहस हीन हो जाता। कभी-कभी तो उसको अन्तःकरण का भय फूट पड़ता कि कभी किसी दिन अंजू का पति आ गया तो वह उसके बारे में अवश्य पूछेगा। कहीं ऐसा न हो कि उसकी वजह से अंजू के

ऊपर कोई मुसीबत खड़ी हो जाये ! और वह बदनाम हो जाए।

कभी अंजू और कभी रतना बराबर उसकी सेवा करती रहती रतना भी उसके पास घण्टों बैठती। इधर उधर की की बातों में उसका दिल बहलाया रहती।

रतना ने बताया कि उस दिन के बाद अब सुभाष बिलकुल बदल गया है। वह आंख उठाकर भी उसकी ओर नहीं देखता।

दूसरे दिन उसने बहिन कह कर सम्बोधित किया और क्षमा याचना की। वह चन्दन की प्रशंसा करता रहा। चन्दन को देवता बताया। उसने कहा कि अगर वह चाहता तो उसे जेल की हवा खिला सकते थे लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। मेरी जिन्दगी नष्ट करने के बजाय उन्होंने अपनी जिन्दगी नष्ट कर ली उनकी इस कुरबानी ने मेरी आँखें खोल दी हैं अब इतनी बड़ी गलती के बाद मैं शैतान से इन्सान बना हूँ। अब कभी भी किसी मजबूर और बेबस लड़की को तंग नहीं करूँगा।

उसने यह भी कहा कि अब मैंने तुम्हें बहन बना लिया है। अब कोई तुम्हारी ओर आँखें उठाकर देखेगा तो उसकी आँखें फोड़ दूँगा।

चन्दन खुश हो गया कि जीवन पथ से कोई भूला भटका इन्सान ठीक रास्ते पर तो आ गया। लेकिन भूले भटके को ठीक रास्ते पर लाकर वह अब खुद भटक गया था।

आज उसने निश्चय कर लिया कि वह यहाँ से जरूर जाएगा।

अभी वह बैठा यही कुछ सोच रहा था कि दरवाजे के बाहर

उठ रही आवाजों ने उसका ध्यान आकर्षित कर लिया !

यह लड़कियाँ नहीं वैश्याएँ हैं ।

यह रंडियाँ है, रन्डियाँ !

शरीफों के मुहल्ले में इनका क्या काम ।

इन गंदगी के कोड़ों को यहाँ से बाहर निकालो नहीं तो यह सारे मुहल्ले को गंदा करके छोड़ेंगी ।

पहले तो यह सब कुछ छुप छुप करती थीं मगर अब तो किसी को घर में स्थाई तौर पर रख लिया है ।।

इसकी देखा देखी मुहल्ले की बहू बेटियाँ बरबाद होजायेंगी।

अरे क्या देख रहे हो ! इनका सामान बाहर फेंको बाहर आसानी से यह मकान खाली नहीं करेंगी जबरदस्ती करना पड़ेगा । इस गंदगी के ढेर को यहाँ से उठाना होगा, हटाना पड़ेगा ।

अब चन्दन से सहन नहीं हो सका । वह अपने क्रोध को दबा न सका । वह बिजली की सी तेजी से बाहर आ गया । उसकी आँखें क्रोध से उबली पड़ रही थीं।

अरे शराफत के पुतलो !
मनुष्यता के रक्षको !
सभ्यता के पुजारियो !

कान खोलकर सुन लो, अगर यह दोनों देवियाँ रन्डियाँ है तो तुम्हारे समाज में एक भी शरीफ औरत नहीं बसती । आज तुमने इन्हें वेश्या कहा । कल अगर तुम्हारे बहू-बेटियोंको कोई वेश्या कहे तो तुम्हारे दिल पर क्या बीतेगी । औरत को रन्डी बनाना बड़ा आसान हैं लेकिन देवी बनाना बहुत कठिन है ।

तुम लोग रण्डियाँ पैदा करते हो। वेश्याओं को जन्म देते

हो। तुम्हीं उनके पास खरीदार बनकर जाते हो क्या यह झूठ है?'

अगर यह बात झूठ है तो तुममें से कोई आदमी अपने सीने पर हाथ रखकर कह सकता है कि अगर मर्द औरत का खरीददार न बनता तो औरत कभी रंडी और वेश्या का रूप धारण करती?'

'अपने इन उपदेशों को घर रख। हम जानते है तेरी शराफत को भी।'

नत्थू, विजय बढ़ो। फेंक दो सामान सब बाहर और इसे भी फेंक दो।

'मारो मारो, इन वेश्याओं को।'

'आओ, मारो अगर तुम्हारे समाज में किसी भी मर्द में औरत पर हाथ उठाने की हिम्मत है तो बढ़ो आगे। मारो इन्हें भी और मुझे भी और हाथ उठाने से पहले अपने भगवान की सौगंध खाकर यह सोच लेना कि क्या तुममें से कोई है ऐसा जिसने आज तक कोई पाप नहीं किया है।'

लोग एकदूसरे का मुंह देखने लगे। किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि भगवान की सौगंध खा कर कहे कि उसने कोई पाप नहीं किया है।

'देख क्या रहे हो, बढ़ो। तुम्हारे समाज में अगर किसी को जीवित रहने का हक नहीं तो क्या वह मजबूर और बेबस औरत ही है? तुम्हारी आँखों पर तो भोग विलास और स्वार्थ की पट्टियाँ बँधी हुई हैं तुम इन्सान को इन्सान नहीं शैतान बनाना चाहते हो। औरत को देवी नहीं रंडी बनना जानते हो।

औरत पर कीचड़ उछालने से पहले तुमने कभी नहीं

सोचा कि यही औरत तुम्हारी जननी है। वह जननी जो इस संसार की माँ है। बहन है, वहू भी है और बेटी भी। इसी औरत की कोख से हमने जन्म लिया है।

क्या उसने हमें इसलिए जन्म दिया कि हम उसके शरीर के खरीदार बन जाएँ ?'

'लेकिन तुम कौन हो जो इतनी दलाली करते हो ?'

'यही सवाल मैं तुमसे पूछता हूँ कि कौन हो जो इन देवियों पर कीचड़ उछाल रहे हो ?'

'चन्दन बाबू, आप चुप रहें ! जरा इन महाशय की कहानी सुनें। यह महाशय वह होनहार सपूत हैं जो कुछ नहीं करते। इनका काम केवल इतना है कि यह साहब मुहल्ले की लड़कियों को बहला फुसलाकर ऊँची सोसाइटी में सप्लाई करें। जब उन्होंने यह काम मुझसे और मेरी बहिन से लेना चाहा तो इन्हें मुँह-की खानी पड़ी। जब इन्होंने यह देखा कि यह शिकार सीधे हाथों नहीं फँसता तो इन्होंने यह धमकी दी कि तमाम मुहल्ले में यह मुझे बदनाम करेंगे और इस तरह बदनाम करके रास्ते पर ले जाएँगे। सीधे-सीधे शब्दों में यहाँ तक यह महाशय कहने से न चूके कि तुम्हारी बहिन दो सो रुपये माहवार पर नौकरी करती है। इसे मेरे साथ भेज दिया करो तो इतने रुपये तो एक रात में दे दिया करूँगा। यह है इन हजरत की कहानी जो देव रूप में दानव छुपा फिरता है। इसी काम से इस नीच ने आधा मुहल्ला खरीद लिया है। कई कोठियाँ बना ली हैं।

इनके पीछे जो खद्दरधारी माथे पर तिलक लगाए महाशय खड़े हैं वह इस बिल्डिग के मालिक हैं। यह हमें इस लिए रंडी और वेश्या बनाते हैं कि हमने इनके कहने पर मकान

खाली नहीं किया। इनका ध्येय केवल पैसा कमाना है। मैं इस मकान का किराया ३० रुपये देती हूँ और यह इसे १५० रु० महीने पर उठाना चाहते हैं। आज यह महाशय किराये के गुंडे लेकर मकान खाली कराने आए हैं।'

'आज तो मेरे चंगुल से बच गई हो, फिर देखूँगा।'

'देखना क्या है सेठ। अगर हिम्मत है तो अभी देख लो। यह न समझना कि यह दोनों अकेली हैं।' चन्दन ने गरज कर कहा।

भीड़ सारी कहानी समझ गई। किराये के कुछ गुंडों में इतना साहस कहां था जो सच्चाई के सामने टिकते। एक-एक करके सभी वहाँ से खिसकने लगे।

२१

'आज आपने हम पर बहुत एहसान किया है।' अंजू ने उसकी सराहना की।

'एहसान! यह एहसान क्या होता है? अगर दुनियाँ में इन्सान-इन्सान से हमदर्दी न करे तो सारी दुनियाँ जीता जागता नर्क बन जाए।'

'यहाँ कौन सोचता है इन बातों को चन्दन! यहाँ तो लोग जिन्दगी छीन सकते हैं दे नहीं सकते। यहाँ किसी औरत का अकेला दिन काटना बड़ा कठिन काम है।'

'एक बात पूछूँ अंजू ! बार-बार पूछना चाहकर भी अभी तक नहीं पूछ सका।'

'कौन सी बात है जो पूछना चाहते हुए भी नहीं पूछ सके। मेरी जिन्दगी में तो अब कोई भेद बाकी है ही नहीं।'

'डरता हूँ कि तुम्हारे दिल को ठेस न लगे।'

'दिल ! यहाँ दिल है ही किसके पास और अगर है भी तो जमाने की ठोकरों ने उसे पत्थर बना दिया है।'

'चाय लीजिए।'

रतना कीआवाज ने दोनोंकी बातचीत बीच में रोक दी। वह चाय मेज पर रखकर फिर चली गई।'

चन्दन को आभास हुआ रतना भी अपने आँसुओं को मुश्किल से रोके हुए है।

'मैं तो आज जाना चाहता हूँ अंजू।'

'कहां ?'

'घर।'

'क्या यह घर आपको पसन्द नहीं।'

'घर तो पसन्द है अंजू लेकिन—लेकिन न चाहते हुए भी मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ। बहुत दिन आप लोगों को दुख दे चुका। अब तो मुझे घर जाना ही चाहिए।'

'अगर आप जाना ही चाहते हैं तो मैं रोक नहीं सकती लेकिन अभी आपका घाव भरा नहीं है।'

'इस घाव का क्या, यह तो कभी न कभी ठीक हो ही जाएगा लेकिन मैं उस नासूर के बारे में पूछना चाहता हूँ जो बरसों से रिस रहा है। अंजू, तुम्हारी खुशी कहाँ गई ! कहाँ गई तुम्हारी सुन्दरता। तुम्हारे कोमल अधरों की मुस्कान कहाँ गई ! तुम्हारे गालों की सुरखी किसने छीन ली

वह अंजू कहाँ गई जिसे मैंने शिमला की पहाड़ियों में देखा था ! आज यह अंजू क्या बन गई है ?'

'बस यही पूछना है या कुछ और भी पूछना चाहते हो ?'

'और क्या पूछूं । मुझे इतना पूछने की हिम्मत भी भगवान जाने कहाँ से आ गई ! अंजू अगर मेरे बस में होगा तो मैं तुम्हारे सारे दुखों को दूर कर दूंगा । मैं भगवान तो नहीं लेकिन एक इन्सान के नाते मुझसे जो भी हो सकेगा, करूंगा ।'

'हम औरतों के पास कुछ ऐसे भी दुख हैं जो भगवान भी दूर नहीं कर सकता ।'

'बहुत सारे काम जो भगवान भी नहीं कर सकता, उसने इन्सान को सौंप रखे हैं । उनका क्या हाल है । वह कहाँ हैं ?'

'वह तो भगवान के घर चले गए ।'

इतना कहना था कि अंजू की आँखों से आँसुओं की धारा फूट पड़ी ।

'अंजू !' चन्दन तड़प उठा ।

'हाँ चन्दन, तुमसे मिलने के एक साल बाद वह सैनीटेरियम में दम तोड़ गए । मेरा सुहाग लुट गया । अब मैं विधवा हूँ । इस समाज में विधवा रहने का या विधवा को जीवित रहने का अधिकार नहीं । मगर वह शराफत से रहना चाहती है तो यह समाज उसे जीने नहीं देता ।

'लेकिन अंजू, तुमने मुझे क्यों नहीं बताया ?'

'क्या बताती ! आज तुम्हें सुख नहीं दे सकी तो दुख क्यों देती ?'

'क्या तुम मुझे गैर समझती हो ?'

'गैर को कोई इस तरह अपने घर में नहीं रखता ।'

यह कहते हुए अंजू उठकर चली गई ।

२२

चन्दन से अंजू के आँसू देखे न गए। वह समझ गया कि अंजू की उदासी की वजह क्या है। वह औरत है, उसने केवल गम पीना सीखा है। वह आँसू बहा सकती है दुनिया से छुपा-छुपाकर मगर फिर भी यह दुनिया एक बेवा को जीने नहीं देती।

वह अंजू के पीछे पीछे चला गया। अंजू तकिए में मुँह दिए सुबकियाँ भर रही थी। उसकी आँखों से आँसू बह बह कर तकिया भीग रहा था।

'अंजू !' चन्दन ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा।

अंजू ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके आँसू और तेज हो गए। उसके सिसकियों की रफ्तार और बढ़ गई।

इस तरह आँसू बहाने से यह पहाड़ जैसा जीवन कैसे कटेगा!'

'अब मेरे पास आँसुओं के सिवा और रह भी क्या गया है। मैं तो मनहूस हूँ, बद नसीब हूँ जिसे दुनिया के किसी कोने में स्थान नहीं मिला। ससुराल ने इसलिए धक्के देकर निकाल दिया कि मैं अभागिन हूँ, डाइन हूँ, चुडैल हूँ जिसने घर में आते ही अपने सुहाग को खा लिया।'

'तुमने सुहाग को खा लिया ? क्या दुनिया की कोई औरत ऐसा काम कर सकती है ?'

'कर तो नहीं सकती लेकिन कहने में तो कुछ नहीं लगता मैं कर भी क्या सकती हूँ। मारने वाले के हाथ पकड़े जा सकते हैं लेकिन कहने वाले की जबान किसने पकड़ी है ?'

'अच्छा हौसला रखो, उठो। आँसू बहाने से कुछ नही बनता।'

'अब तो एक ही उम्मीद पर जिन्दा हूँ कि किसी तरह रतना के हाथ पीले होजाएँ उसके बाद मैं जीवन का अन्त करूँ।'

'यह क्या कह रही हो तुम अंजू !'

'ठीक कहती हूँ।'

'एक दिन तुम ने मुझे इसी रास्ते से रोका था।'

'तुम्हारी बात और थी, तुम मर्द थे, जवान थे। तुमने अपनी जिन्दगी में देखा ही क्य था। केवल भावुकता में बहा-कर आत्माहत्या करने जा रहे थे। मेरी बात और है।'

'बात चाहे कुछ भी हो, कहानी एक ही है। मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा। मेरी अपनी जिन्दगी भी तुम्हारी ही है।'

'कैसी सोच और कैसा ख्याल ! यह दुनिया अजीब है

'मुझ पर एक अहमान करो चन्दन !'

'फिर तुमने एहसान की बात की !'

'दीदी खाना तैयार है।'

रतना की आवाज ने बात रोक दिया।

'अभी आते हैं रतना।

अंजू ने अपने आँसुओं को साफ करते हुए कहा—'मेरी एक ही इच्छा है चन्दन। जो तुम पूरी कर सकती हो।'

'क्या इच्छा है अंजू। मैं एक क्या तुम्हारी अनेकों इच्छा पूरी कर सकता हूँ।

'मुझे भय है कि कहीं···'

'क्या तुम्हें अपने चन्दन पर विश्वास नहीं।'

'विश्वास है लेकिन फिर भी···'

'फिर क्या ? साफ कहो।'

'रतना को तुमने देखा है।'

'हाँ-हाँ।'

'क्या तुम उसे अपना साथी बना सकते हो ?'

अंजू।' वह पानी से निकाली हुई मछली की तरह तड़प उठा। आवाज हलक में फंसकर रह गई। उसे लगा जैसे आकाश धरती पर आ गिरा हो।

'मैं जानती थी, तुम मेरी बात पर चौंक उठोगे।'

'मैं अभी तक समझ नहीं पाया अंजू।'

'मैं जानती हूँ रतना तुम्हारे समक्ष कुछ भी नहीं। वह तुम्हारी जोड़ नहीं। तुम एक कलाकार हो, एक फर्म के मैनेजर हो और रतना एक साधारण लड़की है मगर मुझे तुम पर विश्वास है।'

'लेकिन मेरा ख्याल तो कुछ और अंजू !'

चन्दन ! मैं जिस बात से डरती थी, वही हुआ। यह कोई नई बात नहीं। मैं तो सचमुच अभागी हूँ। बचपन में माँ का साया सर से उठ गया। बाप ने जैसे तैसे करके मेरी शादी की तो शादी के बाद सुहाग उजड़ गया और इसके साथ-साथ ही पिता जी भी इस दुनिया से चले गए !'

'अंजू, मेरी बात भी तो सुनो।'

'क्या सुनूँ ! अब कुछ भी सुनने की हिम्मत बाकी नहीं। मैं जिन्दगी के इस सफर से थक गई हूँ।'

'अंजू !'

'हाँ !'

'क्या रतना की शादी करने से तुम्हारी कोई खोई हुई खुशी वापस आ सकती है ?

'खुशियाँ तो वापस नहीं आयेगी लेकिन दिमाग का बोझ तो हल्का हो जाएगा।'

'यह झूठ है, धोखा है। तुम अपने आपको धोखा दे रही हो। अपनी आत्मा से छल कर रही हो। इससे न तो तुम्हारे दिमाग का बोझ हल्का होगा और न तुम्हारी जिन्दगी की खोई हुई कोई शान्ति लौटेगी।'

'इससे अधिक और मैं कर भी क्या सकती हूँ ?'

'तुम बहुत कुछ कर सकती हो, बहुत कुछ। जो तुम सोच रही हो, वह मैं नहीं सोच रहा हूँ। मैं रतना की खुशियों के लिए नहीं तुम्हारे लिए सोच रहा हूँ।'

चन्दन ने अंजू का हाथ अपने हाथों में ले लिया।

'चन्दन क्या कह रहे हो ! मैं विधवा हूँ, विधवा।'

'तुम जो कुछ भी हो मुझे मालूम है। मैं यह जानता हूं कि तुम अंजू हो—वह अंजू जिसकी आज तक मैं आराधना

करता रहा हूँ और कह रहा हूँ, जिसकी मौन मुहब्बत में आज तक गीली लकड़ी की तरह सुलगता रहा।···

'चन्दन !'

'हाँ अंजू ! रतना के लिए तो हजार लड़के मिल जाएँगे लेकिन अंजू के लिए ?'

'क्या सोच रहे हो ? क्या कहते हो ? समाज में कुहराम मच जाएगा। एक तूफान आ जाएगा। तुम्हारे माँ-बाप, यह दुनिया, यह समाज जीना दूभर कर देंगे।'

'तुम इस दुनिया की बात करती हो जो भूखे मरते इन्सान को रोटी नहीं दे सकते। उसका उपहास कर सकते हैं, आज कल के स्वार्थी इन्सानों की निगाहें हजारों मील दूर आकाश के चाँद और सितारों को छूने की कोशिश तो जरूर करती हैं मगर भूखे मरते पड़ोसी को नहीं देख सकतीं। यह समाज औरत को रंडी तो बना सकता है लेकिन औरत को औरत नहीं रहने देता।'

'चन्दन !'

'हाँ अंजू तुम एक बार हाँ कह दो, केवल एक बार मुझे इस समाज की परवाह नहीं, दुनिया का डर नहीं। तुम मेरे साथ रहोगी तो मैं सारी दुनिया से टक्कर ले सकूँगा। मैं तुम्हारी माँग का खोया सिन्दूर वापस देखना चाहता हूँ। मैं तो तुम्हारी अराधना करूँगा। अंजू !

'चन्दन !

अंजू ने चन्दन की आँखों में अपनी आँखें डाल दीं और उसके सीने से जा लगी।

'मैंने तुम्हें पा लिया अंजू ! भगवान ने मेरी पूजा का फल इसी जन्म में दे दिया।